में ही उनका बहता हुआ सोने का सोता विलीन हो रहा था कि उनके हृदय में श्रीमती प्रमीला का पागल प्रेम उत्पन्न हुआ और जब एक बार उनका साक्षात् हुआ और नेत्रो ने परस्पर अपनी मौन भाषा में विचार-विनिमय किया तथा ओठो ने कम्पायमान होकर अस्फुट शब्दो में किसी बात का संकेत किया, तो यह पागल प्रेम दवाग्नि बनकर उनके हृदय को भस्म करने लगा। वह नगर की सर्वोत्कृष्ट सुन्दरी थी और उनके लिए अकेली थी और वे—वे भी अनुपम स्वरूपवान् थे, किन्तु वे उसके लिए एक ही नही थे। उसको नित्य नये-नये अनुभव प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा थी और अपने अनेक प्रेमियो को सौभाग्यशाली बना चुकी थी।

यही कारण था अथवा यो कहिए कि इसी का प्रभाव था कि कुँवर अजीतसिह वृद्ध प्रतीत होने लगे थे, यद्यपि उनकी अवस्था अभी केवल बत्तीस ही वर्ष की थी। वे बहुत ही शान्त और खुलते रंग के व्यक्ति थे। ओठ पतले और आँखें बडी-बड़ी थी। बाग़बानी का बहुत ही शौक था और घरेलू काम-धन्धो में भी बहुत रुचि थी। उनके चाचा एक छोटी-सी रियासत के राजा थे और उनको रियासत से जागीर मिली थी। यूनिवर्सिटी में शिक्षा तो अवश्य पाई थी, किन्तु निरन्तर परिश्रम करने पर भी ग्रेजुएट होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त कर सके थे। इसीलिए इंग्लैंड जाकर वे शौक़िया बार-एट-ला बन आये थे। इलाहाबाद की सिविल लाइन्स में उनका एक अच्छा ख़ासा बँगला था। इंग्लैंड से लौटने पर उनको थियेटर का शौक हो गया और यहाँ उन्होने शौक़िया खेलनेवालो का एक थियेट्रिकल क्लब भी स्थापित किया। इसी क्लब के सरक्षको में श्रीमती प्रमीला के पिता भी थे। इसी कारण

तीसरे पहर प्रतिदिन प्रमीला उन्हीं के साथ मोटर में घूमने जाती। दोनो में से कोई इस सम्बन्ध को लेशमात्र छिपाने की चेष्टा नहीं करता था। किन्तु सहसा एक ऐसी घटना हो गई जिससे उनका यह व्यापार एकाएक बन्द हो गया।

जाड़े की अँधेरी रात थी। ठंडी-ठंडी तीव्र वायु बह रही थी। रह-रहकर पानी की नन्ही-नन्ही बूँदें भी गिर रही थीं। डाक्टर नरेन्द्र भोजन करके ड्राइंगरूम में एक सोफा पर आराम से पड़े हुए थे। सामने छोटी-सी मेज पर एक पेग पोर्ट रक्खा हुआ था। नरेन्द्र ने पेग उठाया और धीरे-धीरे रह-रहकर ओठो से उसे लगाने लगे। थोड़ी देर बाद उस शराब की लालिमा उनके चेहरे और आँखो पर दिखाई देने लगी। नरेन्द्र प्रसन्नता से फूल गये। कभी-कभी वे कुछ गुनगुनाने भी लगते थे और कभी-कभी उन्हें दाग, जिगर, जौक भी याद आ जाते थे। उनकी प्रसन्नता का एक कारण और भी हो सकता था। वह यह था कि आज ही उन्होंने एक ऐसा आपरेशन किया था जिसको करने के लिए नगर के सभी बड़े-बड़े सर्जन जवाब दे चुके थे। उन्होंने उसको बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया था। सर्जरी के इतिहास में इतना भयानक आपरेशन इसके अतिरिक्त केवल एक ही और था।

आज उन्होंने प्रमीला से मिलने का वादा भी किया था और इस समय साढ़े आठ बज चुके थे। उन्होंने नौकर को कार ले आने को कहा ही था कि किसी के पुकारने की आवाज सुनाई पड़ी। क्षण भर बाद हाल में किसी के आने का शब्द सुनाई पड़ा और किवाड़ बन्द हुआ।

"कन्सल्टिंग रूम में एक रोगी आपसे मिलना चाहता है, साहब।" —नौकर ने कहा।

उस आदमी का उत्तर बड़ा विचित्र था। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और सौ-सौ रुपये के पाँच नोट मेज पर रख दिये।

"देखिए ये पाँच सौ रुपये हैं,"—उसने कहा।—"और मैं वादा करता हूँ कि आपका वक़्त एक घंटा से ज्यादा न सर्फ होगा। दरवाजे पर कार खड़ी इन्तजार कर रही है।"

नरेन्द्र ने घड़ी की ओर देखा। प्रमीला के यहाँ एक घंटा पश्चात् भी पहुँचने से कोई हानि अथवा असुविधा नहीं हो सकती। प्रायः वे वहाँ बहुत रात बीते तक गये हैं। फीस की रक़म भी काफी अच्छी थी। कई बिलों का तक़ाजा भी था। वे यह सुअवसर छोड़ नहीं सकते। वे अवश्य जायेंगे।

"बीमारी क्या है?"—उन्होंने पूछा।

"आह, वह इतनी दर्दनाक है! इतनी दर्दनाक, कि क्या अर्ज करूँ! शायद आप इस्फहानी कटार के औसाफ से वाकिफ नहीं हैं!"

"बिलकुल ठीक। इस कटार के गुणों का मुझे लेशमात्र ज्ञान नहीं है।"

"बड़ा खतरनाक! बड़ा ख़तरनाक और मुहलिक होता है यह कटार, साहब! उसकी मूठ मिस्ल रिकाब के होती है। खुदा जानता है, साहब मैं उससे हमेशा होशियार रहता था। लेकिन होनहार थी! वह होकर ही रही। मेरी एक बहुत बड़ी दूकान अमृतसर में है। मैं काश्मीरी तथा ईरानी शाल, कपड़े तथा क़ालीनों का रोजगार करता हूँ। साल भर से यहाँ भी मैंने एक ब्राँच खोल दी है। यहाँ का कारोबार मैं ख़ुद देखता हूँ। कल लाइसन्स कराना है। आज सभी असलहों की सफाई लाजमी थी। नौकर को असलहा साफ करने को सुबह

"और आप कहते हैं यह लाइलाज है। फिर आप इतना रुपया मुझे क्यों दे रहे हैं?"

"कोई दवा नहीं है। लेकिन शायद आपका चाकू मुफीद साबित हो।"

"कैसे?"

"वह जहर बहुत देर में फैलता है। जख्म में यह घंटों पड़ा रहता है।"

"तब तो शायद धो देने से साफ हो जाय?"

"साँप के काटने से ज्यादा नहीं। यह निहायत ही खफीफ होता है लेकिन बेहद मुहलिक।"

"घाव का काट-छाँट, फिर?"

"हाँ, यही बात है। अगर यह उँगली में लग जाय तो उँगली को क़लम कर दे। वालिद माजिद हमेशा यही हिदायत करते थे। लेकिन जरा यह तो खयाल कीजिए कि यह जख्म है कहाँ? और वह भी मेरी ही बीवी के। कितनी दर्दनाक बात है!"

ऐसे भयानक मामलों की जानकारी किसी भी व्यक्ति को सहानुभूतिपूर्ण बना सकती है। डाक्टर नरेन्द्र के लिए यह एक विचित्र तथा दिलचस्प मामला था। उन्होंने उसके दुर्बलतापूर्ण शब्दों पर ध्यान ही नहीं दिया।

"इससे तो यही जान पड़ता है कि या तो ओठ काटना पड़ेगा या फिर कुछ भी सम्भव नहीं," नरेन्द्र ने रुखाई से कहा। "जीवन गँवाने की अपेक्षा ओठ गँवाना ज्यादा अच्छा है।"

"आह, यह तो मैं जानता हूँ कि आप बजा फरमा रहे हैं। या

"अरे उस ग़रीब को तो कुछ भी न महसूस होगा। वह तो गहरी नींद में बेहोश है और उस जहर का यही पहला असर है। अलावा इसके मैंने उसे अफ़यून भी दे रक्खा है। जल्दी कीजिए साहब। क़रीब एक घटे के वक़्त गुजर चुका है।"

ज्यों ही वे लोग उस अन्धकार में बाहर निकले उनके चेहरो पर नन्हीं-नन्हीं बूँदो का फुहारा पडने लगा। नौकर ने बडी जोर से किवाडों को खोला और तेज हवा के दबाव के कारण किवाडो को खुला रखने में उसने अपनी सारी शक्ति लगा दी। दोनो आदमी मोटर के पीछे की लाल रोशनी की ओर बढने लगे । क्षण भर बाद मोटर भर्राकर चल पडी ।

"क्या बहुत दूर चलना है?" नरेन्द्र ने पूछा।

"अरे नहीं, मैं जीरो रोड के पीछे चक पर रहता हूँ।"

डाक्टर की दृष्टि मोटर में लगी हुई घडी पर गई। उस समय सवा नौ बज रहे थे। उन्होने दूरी का अनुमान किया और उस समय का जो उस साधारण-सा ऑपरेशन करने की तैयारी में लगता। उनको प्रमीला के पास दस बजे तक पहुँच जाना चाहिए। कुहरा भी जोर का पडने लगा था और उस कुहरे में सडक पर की बिजली की बत्तियो का प्रकाश टिमटिमाता-सा प्रतीत होता था । मोटर की छत पर बूँदें पड रही थीं और उसके पहिये कीचड से सन गये थे । नरेन्द्र ने अपने जेब में ही सुइयो, पट्टी तथा सेपटीपिनो को ठीक कर लिया जिससे ऑपरेशन में अधिक समय न नष्ट हो। वे बडे व्यग्र हो रहे थे और कभी-कभी अपने पैरो को पटक दिया करते थे।

आख़िरकार मोटर धीमी हुई और एक गली में जाकर रुकी।

विछा हुआ था। पास ही एक कुर्सी थी और एक पीक-दान। कमरे में एक बड़ा-सा लैंप जल रहा था । एक किनारे पर कालीनो के पुलन्दे पड़े हुए थे । इस कमरे के बाद एक और कमरा था । वहाँ एक पलँग के ऊपर व्यापारी की बीबी बुर्का पहिने हुए सो रही थी। कमरा साफ़ था और चीज़ें ठिकाने से रक्खी हुई थीं, उस स्त्री का नीचे का ओठ खुला हुआ था और उसका सारा मुखमंडल बुर्के से ढँका हुआ था। डाक्टर ने देखा कि उसका ओठ बिथुर गया था।

"ज़रा बुर्के को बख़शिएगा,"—व्यापारी ने कहा—"आप तो जानते ही हैं कि हम लोग परदे के कितने पाबन्द होते हैं ।"

किन्तु डाक्टर बुर्के की बात ज़रा भी नहीं सोच रहे थे। उनकी दृष्टि में वह स्त्री नहीं थी। वह तो एक ऑपरेशन का केस-मात्र था। वे झुके और उस घाव का भली-भाँति निरीक्षण किया ।

"कोई घबड़ाने की बात नही है क्योकि अभी तक विष का कोई लक्षण प्रकट नहीं हुआ है। अच्छा हो कि कुछ देर और देख लिया जाय। तब तक लक्षण भी प्रकट हो जायँगे ।"

व्यापारी व्यग्र होकर अपना हाथ मलने लगा।

"नहीं, साहब, नहीं, ज़रा भी देर न कीजिए,"—उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "आपको मालूम नहीं है। यह बहुत ख़तरनाक है। मैं जानता हूँ और मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि इस मौके पर ऑपरेशन निहायत ज़रूरी है। सिर्फ चाकू ही उसकी जान बचा सकता है।"

"तो भी मैं ज़रा रुकना चाहता हूँ," नरेन्द्र ने कहा।

"बहुत हो गया," व्यापारी ने गुस्से में कहा।—"हर एक लहमा निहायत ज़रूरी है। मैं यहाँ खड़ा होकर अपनी बीबी को फौत करते

देखते रहे तो उनमें उन्हें कुछ ज्योति मालूम पडी और ओठ फडकता हुआ प्रतीत हुआ।

"वह पूर्णत· बेहोश नहीं है।" उन्होने कहा।

"इस वक़्त चाकू को इस्तेमाल में लाना ज्यादा अच्छा होगा योंकि उसे दर्द का अहसास नही होगा।"

यही विचार डाक्टर के मस्तिष्क में भी आया था। उन्होने चिमटी से टे हुए ओठ को पकडा और जल्दी से दो जगह काटकर एक त्रिभुजा· ार मास का टुकड़ा निकाल लिया। वह स्त्री बडी जोर से चीखकर ंग पर उछल पड़ी। उसका बुर्का उसके मुख के पास एकदम फट गया। स मुखड़े से डाक्टर परिचित था। यद्यपि नीचे का ओठ फट जाने से ऊपर का ओठ लटक आया था और रक्त बडे वेग से बह रहा था फिर भी उन्होंने उसे पहचान लिया। उसने कटे हुए स्थान पर अपना हाथ रख लिया और चीखती रही। डाक्टर नरेन्द्र अपने चाकू और चिमटी को लेकर उसके पलंग के पास वहीं भूमि पर बैठ गये। वह कमरा उनको घूमता हुआ प्रतीत होने लगा और उनके कान में एक विचित्र शब्द सुनाई पडने लगा। यदि उस समय कोई वहां होता, तो वह यही कहता कि डाक्टर की आकृति उस समय सबसे अधिक बिगड गई थी। जैसे वे कोई स्वप्न अथवा खेल देख रहे हो, उन्होने देखा कि व्यापारी की डाढ़ी और बाल जमीन पर पड़े हुए हैं और दीवाल के सहारे कुँवर अजीतसिंह खडे-खडे मुस्करा रहे है। उसकी चीख अब समाप्त हो चुकी थी और उसका सिर तकिये पर पड़ा था लेकिन डाक्टर नरेन्द्र अभी तक स्तब्ध बैठे थे और कुँवर मन ही मन हँस रहे थे।

"जब तुम्हारी मालकिन जगें तब उनकी देख-रेख करना," कुँवर ने कहा।

फिर वह सड़क पर गया। मोटर प्रतीक्षा कर रही थी। ड्राइवर ने अपना हाथ उठाया।

"रघुवीर," कुँवर ने कहा, "तुम पहले डाक्टर को घर ले जाओ। उनको घर के अन्दर जाने में तुम्हारी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। उनके नौकर से कह देना कि वे एकाएक बीमार पड़ गये हैं।"

"बहुत अच्छा, साहब।"

"फिर प्रमीला को ले जाना।"

"और आप?"

"ओह, मैं कुछ महीने रायल होटल, कलकत्ता में बिताऊँगा। रखना मेरी डाक वहाँ पहुँचती रहे और माली से कहना कि 'फ्लावर शो' में चंपई, गुलदाउदी और गुलाब भेजना न भूले और उसका जो कुछ फल हो मुझे तार से सूचित करे।"

कि कमरे के बीचोबीच रक्खा हुआ था। उस पर झुके
के अन्दर रक्खी हुई वस्तुओ को देखने लगे। उस समय उनकी आकृत
पर भक्ति-भावना व्यक्त हो रही थी।

"आप सरीखे दक्ष व्यक्ति के लिए यह कोई नवीनता की वस्तु नहीं है, मिस्टर वर्मा," डाक्टर मेहता ने कहा। "किन्तु यह मैं साहस-पूर्वक कह सकता हूँ कि आपके मित्र मिस्टर जीवननाथ इसको देखकर बहुत प्रसन्न होगे।"

मैं शो-केस के पास पहुँचा और झुककर देखा कि उसके अन्दर लगभग तीन इच लम्बी और दो इच चौडी एक वस्तु रक्खी हुई थी। उसके ऊपर सुवर्ण के पत्रो पर बारह प्रकार की मणियां जडी हुई थीं। उस वस्तु के दोनो किनारो पर बीचोबीच सोने के कुण्डे लगे हुए थे। मणियां विभिन्न प्रकार तथा रगो की थीं, किन्तु वे एक आकार की थीं। उनकी आकृति, जडने के ढग तथा उनकी बहुरगी आभा से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह वाटर-कलर बक्स हो । प्रत्येक मणि के ऊपर कुछ नन्हे-नन्हे अक्षरो में खुदा हुआ था।

"सीता जी के केयूर के विषय में तो आपने रामायण में पढ़ा ही होगा, मिस्टर जीवन ?"

मैंने उस केयूर के विषय में सुना तो अवश्य था कि सीता जी द्वारा फेंके हुए तीन आभूषणो में से एक वह भी था, किन्तु उसके बारे में मेरा विचार बडा भ्रमात्मक था।

"यह केयूर सीता जी ने उस समय मार्ग में फेंका था जब कि राक्षस राजा रावण उनको पचवटी से छल-द्वारा लेकर भागा था। यह आभूषण दो और अन्य आभूषणो के साथ पडा हुआ पाया गया था।

इससे अधिक सुन्दर सुवर्ण का काम बहुत कम मिलता है। प्राचीन-काल के लोग इस प्रकार के काम में बड़े दक्ष ..."—वे रत्नों की जड़ाई के कला के विषय में कुछ बतलाने ही जा रहे थे कि एकाएक कैप्टन दवे बोल उठे।

"इससे अधिक सुन्दर सुवर्ण का काम तो आप इस आरती पर देखेंगे," उन्होंने दूसरे शो-केस के पास जाते हुए कहा और हम सभी उस आरती पर किये गये सुवर्ण के काम की प्रशंसा उनके साथ-साथ करने लगे। इतने बड़े विशेषज्ञ से इतनी दुर्लभ वस्तुओं का परिचय प्राप्त करते हुए मुझे विचित्र प्रकार के सुख का अनुभव हो रहा था, और अन्त में जब डाक्टर मेहता ने सारी संगृहीत वस्तुओं का परिचय समाप्त कर चुकने के बाद मेरे मित्र मिस्टर वर्मा को उन सारी वस्तुओं की देख-रेख का भार सौंपा तो मुझे उन पर बड़ी दया आई। मुझे मिस्टर वर्मा से भी इस बात के लिए ईर्ष्या होने लगी कि अब उनका जीवन उतने सुन्दर और दुर्लभ वस्तुओं के मध्य में व्यतीत होगा। एक सप्ताह के भीतर ही मिस्टर वर्मा ने अपने इस नये बँगले में अपना निवासस्थान बना लिया और उस म्युजियम के स्वेच्छाचारी शासक बन बैठे।

लगभग पन्द्रह दिन पश्चात्, मिस्टर वर्मा ने अपने इस पद के उपलक्ष में, लगभग अपने सभी मित्रों को एक भोज दिया। जब कि उनके सभी आमन्त्रित मित्र भोज के पश्चात् जाने लगे तो उन्होंने मेरी अँगुली दबाते हुए मुझे रुके रहने का इशारा किया।

"आप तो बगल ही में रहते हैं, फिर आपको इतनी जल्दी क्या है, जनाब," उन्होंने कहा—मैं वहीं साउथ रोड पर एक बँगले में निकट

"जरा 'बधाई' के 'व' और 'बडा' के 'व' का मिलान कीजिए। और जरा 'स' पर भी दृष्टि डालिए।"

"निस्सन्देह दोनो अक्षर एक ही आदमी के लिखे हुए हैं। हां, उनमें कुछ विभिन्नता लाने की व्यर्थ चेष्टा अवश्य की गई है फिर भी उनमें इतनी समानता है कि किसी को सन्देह नही हो सकता।"

"दूसरा पत्र," मिस्टर वर्मा ने कहा, "डाक्टर मेहता लिखित बधाई का पत्र है। मेरे इस नये पद की प्राप्ति पर उन्होने मुझको लिखा था।"

मै उनको विस्फारित नेत्रो से देखने लगा। मैंने पत्र को जब पलटा तो एक कोने में डाक्टर मेहता का हस्ताक्षर पाया। हस्ताक्षर-विज्ञान का लेश मात्र ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति भी यह निःसन्देह कह सकता था कि डाक्टर मेहता ने ही अपने उत्तराधिकारी को यह गुमनाम पत्र चोरो से सतर्क रहने के लिए लिखा था। यद्यपि उनकी लिखावट का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था किन्तु इसमें कोई सन्देह भी नहीं था कि वह लिखावट किसी अन्य व्यक्ति की हो।

"आखिर उन्होंने ऐसा क्यो किया?" मैंने पूछा।

"संक्षेप में, मै आपसे यह पूछता हूँ कि यदि उनको ऐसी कोई आशंका थी, तो उन्होने स्वय आकर मुझको क्यो नहीं बतला दिया?"

"इसके विषय में क्या आप उनसे पूछेंगे?"

"मुझे सन्देह है कि कहीं पूछने पर वे बिलकुल इनकार न कर जायें।"

"खैर, मित्रता के नाते उन्होंने यह चेतावनी दी है अतः हमें उसके लिए सतर्क रहना चाहिए," मैंने कहा। "क्या वर्तमान प्रबन्ध चोरी से बचने के लिए काफी है?"

डाक्टर मेहता का क्या उद्देश्य हो सकता है--क्योकि उनके हस्ताक्षर के विषय में मुझे कुछ भी सन्देह नही रह गया था और मुझे तो ऐसा प्रतीत होता था, जैसे उन्होने उस पत्र को मेरे ही सामने लिखा हो। उन्हे उस सग्रह को हानि पहुँचने की आशका हो रही थी। क्या उनकी यह आशका केवल इसलिए थी कि उन्होने म्युजियम से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था? किन्तु यदि ऐसा ही था, तो उन्होने अपने नाम ही से पत्र क्यो नही लिखा? इन सब बातो से मै इतना परेशान हो रहा था कि मुझे ठीक से नींद नहीं आई और मै दूसरे दिन बहुत देर में सोकर उठा।

मै बहुत ही अजीब ढंग से जगाया गया। आठ बजे के लगभग मिस्टर वर्मा मेरे कमरे में दाखिल हुए। उस समय उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड रही थीं। मेरे मित्रो में वे सबसे शौक़ीन आदमी थे। लेकिन उस समय वे इतने घबराये हुए थे कि उनके शरीर पर कपड़े बड़े बेढगे ढग पर पडे थे। कालर एक तरफ से मुडा हुआ था। टाई उड़ रही थी और उसकी गाँठ भी भद्दी थी और तो और, उनकी हैट भी उलटी थी—आगे का भाग पीछे था। उनकी सारी परेशानी उनकी उन्मत्त आँखो से स्पष्ट हो रही थी।

चारपाई पर से उठते हुए मैने कहा, "म्युजियम लूट लिया गया?"

"मुझे ऐसा ही डर हो रहा है। वे रत्न! सीता जी के भुजबन्द के रत्न!" हाँफते हुए उन्होने कहा, उस समय दौड़ते हुए आने के कारण उनकी साँस नही बँध रही थी। "मै थाने पर जा रहा हूँ। जल्दी म्युजियम में आइए। देखिए, जरा भी देर न कीजिए! नमस्कार।" वे फौरन कमरे से चले गये।

विचार से तो ये चारो रत्न नक़ली हैं जो कि उनके स्थानो पर लगे हुए हैं।"

यही सन्देह उस जौहरी को भी था क्योकि वह एक शीशे-द्वारा उन रत्नो की परीक्षा बड़ी तत्परता के साथ कर रहा था। उसने कई प्रकार से उनकी परीक्षा की और अन्त में प्रसन्नतापूर्वक मिस्टर वर्मा की ओर देखा।

"मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ," उसने कहा। "अगर कोई इनको नकली सिद्ध कर दे तो मेरा नाम नहीं। ये रत्न बिलकुल असली है और बहुत ही पानीदार।"

मेरे मित्र के पीले चेहरे पर रंगत आ गई और उन्होंने सुख की गहरी साँस ली।

"परमात्मा को धन्यवाद!" वे चिल्ला पड़े। "फिर उस चोर ने क्या किया?"

"शायद वह इनको निकालना चाहता था किन्तु उसको सफलता नहीं मिली।"

"लेकिन उस दशा में सबका यही ख़याल होगा कि चोर प्रत्येक रत्न को एक-एक करके निकालेगा और यहाँ चारो रत्न ढीले कर दिये गये है लेकिन सभी मौजूद हैं।"

"अवश्य ही यह एक असाधारण बात है," इन्स्पेक्टर ने कहा। "ऐसी घटना तो मैंने कभी नहीं देखी। अच्छा, ज़रा चौकीदार से तो पूछें।"

चौकीदार बुलाया गया। वह एक फौजी की भाँति था और उसकी आकृति से ईमानदारी टपक रही थी। वह भी इस मामले में उतनी ही दिलचस्पी ले रहा था जितनी कि मिस्टर वर्मा।

किन्तु कुछ भी पता न चला। हम लोगो की सारी कोशिशो का अन्त वही रहा जो आरम्भ था। इस बात पर तनिक भी प्रकाश न पड़ा कि किसने, क्यो और कैसे उन चारो रत्नो को हानि पहुँचाई है।

अब मिस्टर वर्मा के लिए केवल एक मार्ग रह गया था और उन्होने उसको पकडा। पुलिस को उसके व्यर्थ के अनुसन्धान करने पर छोडकर उन्होने मुझसे डाक्टर मेहता के यहाँ उसी दिन तीसरे पहर चलने को कहा। उन्होने अपने साथ दोनो पत्र भी ले लिये थे। उनका अभिप्राय था कि उन पत्रो को दिखाकर साफ-साफ उनसे कहा जायगा कि वह गुमनाम पत्र उन्हीं का लिखा था और वे अपनी उस आशंका का कारण बतायें जो कि उस पत्र के अनुसार ही सच उतरी। डाक्टर मेहता लूकरगज में एक छोटे-से बँगले में रहते थे। वहाँ जाने पर उनके नौकर से मालूम हुआ कि वे आवश्यक कार्यवश कहीं बाहर चले गये है। यह सुनकर हम लोग कुछ निराशा से चिन्तित हो गये। हमारे मनोभावो को समझकर उसने पूछा कि यदि हम लोग उनकी लडकी से मिलना चाहे तो उनके ड्राइगरूम में मिल सकते हैं? उसने हम लोगो को ड्राइंगरूम दिखला दिया।

ऊपर हम बतला चुके है कि उनकी लडकी बडी सुन्दर थी। कवियो को उसके सौन्दर्य से अवश्य निराशा हो सकती है, किन्तु साधारण व्यक्तियो के लिए तो वह अप्सरा ही थी। हमको उस समय बहुत ही दु ख हुआ जब कि वह हमारे सामने आई और हम लोगो ने देखा कि केवल पन्द्रह ही दिनो में उसमें कितना परिवर्तन हो गया था। उसका गुलाब-सा मुख एकदम मुरझा गया था और उसकी बड़ी-बडी आँखें वेदना के भार से सिकुडी जा रही थीं।

"भाई जीवन," उन्होंने कहा, "तुम्हारे आ जाने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यह मामला तो बड़ा विचित्र होता जा रहा है।"

"आखिर हुआ क्या ?"

उन्होंने उँगली से उस केस की ओर सकेत किया जिसमें वह भुजबन्द रक्खा था।

"इसको देखो," उन्होंने कहा।

मैंने उसे देखा और आश्चर्य से चिल्ला पड़ा। बीचवाली पंक्ति भी ऊपरवाली पंक्ति की जडन की भाँति खराब कर दी गई थी। बारह रत्नों में से आठ रत्नों की जड़न बड़े विचित्र ढंग से खराब की जा चुकी थी। अन्तिम पंक्तिवाले रत्नों की जडन एकदम साफ और ठीक थी।

"क्या रत्न भी बदल डाले गये हैं ?" मैंने पूछा।

"नहीं, मुझे विश्वास है कि ऊपर के चारों रत्न वही हैं जो जौहरी ने सच्चे बतलाये थे। क्योंकि कल मैंने पन्ना के एक किनारे पर जो जरा-सा बदरंग हो गया है, उसे देखा था। जब ऊपर के रत्न नहीं निकाले गये हैं तब कोई कारण नहीं है कि नीचे के रत्न बदल लिये गये हों। तो, तुम कहते हो मनोहर, कि तुमने कुछ नहीं सुना ?"

"नहीं, साहब," चौकीदार ने उत्तर दिया। "लेकिन जब मैं संध्या को आया तो मैंने खासतौर पर इन रत्नों को देखा। उस समय मुझे ऐसा भान हुआ कि किसी ने इन पर हाथ लगाया था। इसकी सूचना मैंने आपको दे दी थी। मैं सारी रात बड़ी होशियारी से चक्कर लगाता रहा किन्तु न तो मैंने किसी को देखा और न कोई आवाज ही सुनी।"

'पिता जी लखनऊ गये हैं," उसने कहा। "वे बहुत ही परेशान हो गये थे और उनको बहुत-सी चिन्ताओं ने आ घेरा था। वे कल ही तो गये हैं।"

"आप स्वयं परेशान प्रतीत हो रही हैं, मिस लीला," मेरे मित्र ने कहा।

"पिता जी के लिए मुझे बड़ी चिन्ता है।"

"क्या आप मुझे उनका लखनऊ का पूरा पता बतलायेंगी?"

"अवश्य, वे मेरे चाचा डाक्टर श्रीराम मेहता, हिस्ट्री डिपार्टमेंट, लखनऊ यूनिवर्सिटी, के यहाँ हैं।"

मिस्टर वर्मा ने पता नोट कर लिया। हम लोगो ने उससे यह कुछ भी नहीं बतलाया कि हम लोग डाक्टर मेहता से क्यो मिलना चाहते थे, और लौट पड़े। हम लोग जब म्युजियम में पहुँचे तो वही हालत वहाँ थी जो कि हम लोगों के जाने के समय थी। हम लोगो के पास एकमात्र सुराग़ था वह डाक्टर का पत्र। मेरे मित्र ने डाक्टर से मिलकर गुमनाम पत्र की तह तक पहुँचने के लिए दूसरे ही दिन लखनऊ को प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया था कि इतने में एक नई बात हो गई, जिसने हमारी योजना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल बहुत ही सवेरे अपने सोने के कमरे के किवाड़ों पर थप-थपाहट सुनकर मैं जाग गया। यह मेरे मित्र का भेजा हुआ एक आदमी था। इसने मुझे एक पत्र दिया। उसमें लिखा था—

"शीघ्र आइए, मामला एकदम असाधारण होता जा रहा है।"

जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि मिस्टर वर्मा उद्विग्न होकर बीचवाले कमरे में इधर-उधर टहल रहे थे और बूढ़ा सिपाही, जो चौकीदारी करता था, एक किनारे तना खड़ा था।

"भाई जीवन," उन्होंने कहा, "तुम्हारे आ जाने से मुझे बडी प्रसन्नता हुई। यह मामला तो बड़ा विचित्र होता जा रहा है।"

"आखिर हुआ क्या ?"

उन्होंने उँगली से उस केस की ओर संकेत किया जिसमें वह भुजबन्ध रक्खा था।

"इसको देखो," उन्होंने कहा।

मैंने उसे देखा और आश्चर्य से चिल्ला पडा। बीचवाली पक्ति भी ऊपरवाली पक्ति की जडन की भाँति खराब कर दी गई थी। बारह रत्नों में से आठ रत्नो की जडन बडे विचित्र ढंग से खराब की जा चुकी थी। अन्तिम पक्तिवाले रत्नो की जडन एकदम साफ और ठीक थी।

"क्या रत्न भी बदल डाले गये है ?" मैंने पूछा।

"नहीं, मुझे विश्वास है कि ऊपर के चारो रत्न वही हैं जो जौहरी ने सच्चे बतलाये थे। क्योंकि कल मैंने पन्ना के एक किनारे पर जो जरा-सा बदरग हो गया है, उसे देखा था। जब ऊपर के रत्न नहीं निकाले गये है तब कोई कारण नहीं है कि नीचे के रत्न बदल लिये गये हों। तो, तुम कहते हो मनोहर, कि तुमने कुछ नहीं सुना ?"

"नहीं, साहब," चौकीदार ने उत्तर दिया। "लेकिन जब मैं सध्या को आया तो मैंने खासतौर पर इन रत्नो को देखा। उस समय मुझे ऐसा भान हुआ कि किसी ने इन पर हाथ लगाया था। इसकी सूचना मैंने आपको दे दी थी। मैं सारी रात बडी होशियारी से चक्कर लगाता रहा किन्तु न तो मैंने किसी को देखा और न कोई आवाज ही सुनी।"

"चलो कुछ नाश्ता कर लें," वर्मा ने कहा और वे मुझको अपने कमरे में ले गये। "अब तुम्हारी क्या राय है, जीवन?" उन्होंने पूछा।

"मेरी समझ में यह बहुत ही निरर्थक, तुच्छ तथा मूर्खतापूर्ण व्यापार है। किसी विषयोन्मादी का कर्म प्रतीत होता है।"

"क्या तुम कोई कल्पना कर सकते हो?"

एक विचित्र विचार मेरे मस्तिष्क में उदय हुआ। "यह वस्तु हिन्दुओं के लिए बड़ी पवित्र और श्रद्धा की वस्तु है," मैंने कहा। "जरा हिन्दू-मुस्लिम दंगे पर ध्यान दीजिए। सम्भव है, किसी धर्मान्ध ने हिन्दुओं को पीड़ा पहुँचाने के लिए इसको अपवित्र किया हो—"

"नहीं, कदापि नहीं।" वर्मा ने कहा। "वह ऐसा कभी नहीं करेगा। वैसे विचार का व्यक्ति इसको एकदम नष्ट कर डालने का पागलपन कर सकता है परन्तु वह प्रत्येक रत्न के किनारों को क्यों इस प्रकार खोदेगा कि रात भर में केवल चार रत्नों की जड़ाई खराब कर सके। हमें इसका अच्छा हल ढूंढ़ना चाहिए और यह हमीं लोगों को करना है। मेरा ख्याल है कि पुलिस इन्स्पेक्टर इस विषय में हमारी कोई सहायता नहीं कर सकेगा। अच्छा, पहले यह तो बताइए कि मनोहर चौकीदार के विषय में आपकी क्या राय है?"

"उस पर सन्देह करने का कोई कारण आपके पास है?"

"केवल यही कि वही एक ऐसा व्यक्ति है जो इस अहाते में रहता है।"

"वह ऐसी चीज़ की बरबादी क्यों करेगा? उसमें से कुछ नहीं, और फिर उसकी मंशा भी कुछ नहीं है।"

"

"नहीं, मैं दावे से कह सकता हूँ कि वह ऐसा नहीं है।"

"फिर आपने कोई कल्पना की है?"

"अच्छा, मान लिया जाय कि आपने स्वय ऐसा किया हो। आप निद्राचारी तो प्रतीत नहीं होते?"

"उस प्रकार का मुझे कोई मर्ज नहीं है, इसके लिए मैं विश्वास दिला सकता हूँ।

"इसके अतिरिक्त मेरा मस्तिष्क कुछ काम नहीं करता है। मैं तो अब हताश हूँ।"

"किन्तु मैं तो पता लगाऊँगा ही—और मैंने एक उपाय भी सोच लिया है जिससे सारी बातें स्पष्ट हो जायँगी।"

"डाक्टर मेहता से मिला जाय?"

"नहीं, इसका समाधान लखनऊ से निकट है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना चाहिए। हाल में जो रोशनदान है उसे तो तुम जानते ही हो। हाल का बल्ब हम लोग जलता छोड़ देंगे और उसी रोशनदान से केवल मैं और तुम चौकीदारी करेंगे। इस प्रकार सारा मामला स्पष्ट हो जायगा। जब वह एक रात में केवल चार ही रत्न कुरेद सकता है तो चार रत्न तो अभी बाक़ी ही हैं। अतः उन चार रत्नों की जड़ाई ख़राब करने के लिए वह अवश्य आवेगा।"

"बहुत ख़ूब!" मैं प्रसन्नता से उछल पड़ा।

"हम लोग इसको एकदम गुप्त रक्खेंगे और इस भेद को पुलिस और चौकीदार किसी पर न प्रकट करेंगे। क्या तुम मेरा साथ दोगे?"

"बड़ी प्रसन्नता से" मैंने कहा; और मामला तय हो गया।

उस समय रात के दस बजे होगे जब मं म्युज़ियम में पहुँचा। मिस्टर वर्मा के स्नायुओ से कुछ दबी-सी उत्तेजना प्रकट हो रही थी। किन्तु, वह समय चूँकि हम लोगो का कार्य आरम्भ करने के अनुपयुक्त था अत हम लोग कुछ और देर वर्मा के कमरे में बैठकर अपनी विचित्र कार्यवाही पर तरह-तरह की तर्कणायें करते रहे। आख़िरकार थोडी देर बाद सडक पर गाडियो की घडघडाहट बन्द हुई और आमोद-प्रमोद के लिए निकले हुए रसिको का आना-जाना भी बन्द हुआ। लगभग बारह बजे होगे जब हम लोग छत पर चढकर हाल के रोशनदान के निकट पहुँचे।

वर्मा ने दिन ही को छत पर जाकर रोशनदान के निकट चटाई बिछा दी थी जिससे हम लोग आवश्यकता पडने पर आराम के साथ वहाँ लेट भी सकते थे और साथ ही साथ उस रोशनदान से हाल में झाँक भी सकते थे। रोशनदान का शीशा धूल से इतना ढँका था कि नीचे से हम लोगो को कोई देख नहीं सकता था। हम लोगो ने शीशे के दोनो किनारो पर धूल साफ कर झाँकने लायक जगह बना ली थी। बिजली के प्रकाश में कमरे की प्रत्येक वस्तु चमक रही थी और हम लोग केसो के अन्दर रक्खी हुई प्रत्येक वस्तु को स्पष्ट देख रहे थे।

यह चौकीदारी बडी कठिन थी। एक ही वस्तु को समान रूप से टकटकी बाँधकर बराबर देखते रहना था। और उन्हीं चीज़ों को जिन्हें दिन में अब हम लोग लगभग उपेक्षा ही की दृष्टि से देखते थे। अपने उस छोटे से सुराख से मैंने उस कमरे की सारी वस्तुओं—उस बडे ममी-केस से, जो एक किनारे दीवार के सहारे खडी थी, लेकर वहाँ की छोटी से छोटी वस्तुओं—उन रत्नों तक का जिसके लिए हम लोग यह

तपस्या कर रहे थे, अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। वहाँ एक से एक सुन्दर, सुवर्ण की वस्तुएँ तथा रत्नो के सग्रह थे किन्तु उस भुजवन्द के बारह रत्नो की दीप्ति और आभा और सब रत्नो की चमक और आभा को दबा दे रही थी। एक-एक करके मैं सारी वस्तुओ—कौशाम्बी में प्राप्त शिला-लेख, मथुरा के निकट प्राप्त मिट्टी की मूर्तियाँ, तालपत्र पर लिखित पाण्डु लिपियाँ, मुगल सम्राट् अकबर की बन्दूक, राणा प्रताप का भाला आदि—सभी को देखता था किन्तु मेरी दृष्टि प्रतिक्षण अपने आप आकर सीता जी के भुजबन्द पर रुक जाती थी। मैं उस समय इसी पर तन्मयता से विचारलीन हो रहा था कि सहसा मेरे मित्र मिस्टर वर्मा ने हकबकाकर मेरा हाथ दबाया। उसी समय मैंने उस वस्तु को देखा जिसने कि उनको उत्तेजित कर दिया था।

मैं बतला चुका हूँ कि बायें किनारे पर दीवार के सहारे एक ममी-केस खडा था। बडे अचम्भे से हम लोगो ने देखा कि वह धीरे-धीरे खुल रहा है। आहिस्ता-आहिस्ता ममी-केस का दरवाजा खुलता गया और वह काला दरार जो कि दरवाजे के खुलने से बना था धीरे-धीरे चौड़ा होता गया। यह काम इतने धीरे से हो रहा था कि कोई शब्द नहीं हो सकता था। जब वह एकदम खुल गया तो पहले उसमें से आदमी का एक हाथ उसके अन्दर के परदे को हटाकर बाहर निकलता हुआ दिखाई पडा। अब हम लोग सन्नाटे में आ गये और अपनी श्वासो को रोककर तन्मयता से ममी-केस की ओर देखने लगे। धीरे-धीरे दूसरा हाथ, फिर एक चेहरा झाँकता हुआ दिखाई पडा। चेहरा परिचित-सा प्रतीत हो रहा था। हम दोनो उस चेहरे से भली-भाँति परिचित थे और वह था डाक्टर मेहता का। धीरे से वे उसमें से बाहर निकल आये

और दोनो ओर मुडकर देखते हुए आहिस्ता-आहिस्ता एक-एक कदम उठाकर आगे रखने लगे। प्रत्येक कदम आगे बढने के पूर्व वे रुक जाते थे और फिर इधर-उधर देखकर आगे बढते थे। एक बार, सडक पर किसी की आवाज उन्होने सुनी और वे चौकन्ने होकर अपने छिपने के स्थान पर पहुँच जाने के लिए तैयार हो गये। और फिर, पजे के बल धीरे-धीरे आगे बढे। अन्त में वे उस केस के पास पहुँचे जहाँ भुजबन्द रक्खा था। वहाँ पहुँचकर अपनी जेब से उन्होने कुजियो का एक गुच्छा निकालकर केस को खोला और भुजबन्द को निकालकर अपने सामने केस के ऊपर जडे हुए शीशे पर रक्खा। फिर अपनी जेब से एक छोटा-सा औजार निकाला और उन रत्नो पर जुट गये। वे हम लोगो के बिल्कुल सामने थे लेकिन उनके झुके हुए सिर ने भुजबन्द को हम लोगो की दृष्टि से बचा लिया था फिर भी उनके हाथो की चाल से यह स्पष्ट हो रहा था कि वे रत्नो का विद्रूपीकरण करने में संलग्न हैं।

मेरे साथी की श्वासें तीव्र हो गई थीं और उनका हाथ जिससे वे मेरी कलाई को पकडे हुए थे, ऐंठा जा रहा था। इससे मुझे यह स्पष्ट हो रहा था कि वे उस समय तक ऐसे व्यक्ति को, जिससे कि कोई कभी इस प्रकार के निन्दनीय कार्य की आशा ही नहीं कर सकता था, उस साहित्य-कला-सम्बन्धी वस्तु की कुरूपताकरण में संलग्न देखकर क्रोध से उन्मत्त हो रहे थे। यही व्यक्ति, जिसने आज से कुछ दिनो पूर्व उस महत्त्वपूर्ण भग्नावशेष की पवित्रता और प्राचीनता से तथा उसके ऐतिहासिक मूल्य से हम लोगों की जानकारी कराई थी, आज उसको इस प्रकार अपवित्र और कुरूप बनाने में रत है। यद्यपि इस

पर किसी को विश्वास नहीं हो सकता । और तो और उसके इस कुकृत्य के विषय में कोई सोच भी नहीं सकता था किन्तु फिर भी कमरे में बिजली के चमचमाते प्रकाश में उसका सारा शरीर इस कुकृत्य में सलग्न प्रत्यक्ष दिखाई पड रहा है। कितनी विडंबना है! कितना पाखण्ड है! उसके रात्रि के इस कुकृत्य में अपने उत्तराधिकारी के प्रति कितनी ईर्ष्या भरी है। इसका स्मरण-मात्र बडा दु खदायी था और वह कुकर्म बडा डरावना। यहाँ तक कि मैं भी, जिसको कि उस कला-सम्बन्धी वस्तु से कोई विशेष सहानुभूति नही थी और उस कला की महत्ता को समझता भी नहीं था, उस कुकृत्य को देख नहीं सकता था। उस समय मुझे कुछ चैन मिला जब कि मेरे मित्र ने वहाँ से उठते हुए मेरी उँगली को खींचा। मैं समझ गया कि वे मुझे अब चलने को कह रहे हैं। वे उस समय तक कुछ भी नही बोले जब तक कि अपने कमरे में नहीं पहुँच गये। उस समय उनके उद्विग्न आकृति को देखकर मैं उनके विस्मय और ग्लानि का अनुमान कर सका।

"असभ्य! नरपिशाच!" उन्होंने घृणा से कहा, "क्या तुम्हे विश्वास हो सकता था?"

"आश्चर्य है।"

"या तो वह बदमाश है या पागल—दो में से अवश्य कोई एक। अभी मालूम हो जाता है वह क्या है। मेरे साथ आओ, जीवन, हम अभी इस काली करतूत की तह तक पहुँचते हैं।"

वर्मा के एक कमरे से रास्ता था। उन्होंने धीरे से उसे खोला और अपने जूतो को उतार दिया। मैंने भी वैसा ही किया और उनके साथ एक के बाद दूसरे कमरे में होते हुए धीरे-धीरे हाल में पहुँच गये। उस

समय भी वह दत्तचित्त अपनी काली करतूत में लगा था । हम लोग बडे धीरे-धीरे पंजो के बल आगे बढने लगे। इतनी सावधानी करने पर भी हम लोग उसको अनजान में एकाएक नहीं पकड सके। हम लोगो से वह लगभग कुछ गज दूर रह गया था कि वह एकएक हम लोगो की ओर घूमा और हमें वहाँ देखकर भौंचक्का-सा रह गया। और डरकर भर्राई आवाज में चिल्लाकर भागा।

"मनोहर! मनोहर!" वर्मा ने आवेश में पुकारा और बिजली के प्रकाश से दूर, बाहर सामने ही गठा शरीरवाला चौकीदार एकाएक दिखाई पडा। डाक्टर मेहता ने उसको भी देखा और निराशा की दशा में चुपचाप खडे हो गये। उसी समय हम लोगो ने अपना हाथ उनके कधो पर रख दिया।

"हाँ, हाँ, महाशयो," उन्होंने कँपकँपाते हुए स्वर में कहा। उस समय उनके हृदय की गति बडी तीव्र हो रही थी। "मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ। यदि तुम बुरा न मानो तो तुम्हारे कमरे में ही चलूँ! मैं समझता हूँ कि सारी बातें आप लोगो को समझा देना बहुत आवश्यक है।"

मेरे मित्र का क्रोध के कारण बुरा हाल था। वे उस समय उत्तर तक देने में असमर्थ थे। हम लोग डाक्टर मेहता को बीच में कर चलने लगे। चौकीदार उनके पीछे-पीछे चल रहा था। उसको भी उनके इस जघन्य कृत्य पर बडा अचम्भा हो रहा था। जब हम लोग उस केस के निकट पहुँचे तो हम लोग खडे हो गये और मिस्टर वर्मा भुजबन्द की परीक्षा करने लगे। नीचे की पंक्ति में एक रत्न की वही दुर्दशा कर दी गई थी जो ऊपरी पंक्ति के आठो रत्नो की। वर्मा ने उसको उठा लिया और अपने कैदी को बडी बुरी तरह से घूरने लगे।

"यह तुमने क्या किया!" आवेश में उन्होंने पूछा, "कैसे यह तुम्हारे ाए सम्भव हुआ।"

"यह बहुत ही बुरा है—बहुत ही बुरा!" डाक्टर ने कहा, "आप लोगो के मनस्ताप पर मुझे लेशमात्र विस्मय नहीं है। मुझे अपने कमरे में ले चलिए।"

"किन्तु यह ऐसे ही खुला नहीं पड़ा रहेगा!" मिस्टर वर्मा ने क्रोध से कहा। उन्होंने भुजवन्द को उठा लिया और बड़ी सावधानी से अपनी मुट्ठी में रख लिया। मैं डाक्टर को अपने बगल में लेकर उसी भाँति चलने लगा जैसे पुलिस का सिपाही एक क़ैदी को लेकर चलता है। चौकीदार को उसकी कल्पना पर वहीं छोड़कर हम लोग वर्मा के कमरे में चले गये। डाक्टर वर्मा आरामकुर्सी पर बैठ गये और उनका रग एकदम श्वेत हो गया। उनके अग-अग अकड रहे थे। उस समय हम लोग उनके सारे दुष्कर्म को भूलकर उनके लिए चिन्तित हो गये। मिस्टर वर्मा ने तुरन्त उनको स्प्रिट अमोनिया पिलाया और तब उनको होश हुआ।

"ओह, अब मैं अच्छा हूँ!" उन्होंने कहा। पिछले थोड़े से दिन मेरे लिए बड़े अनिष्टकारी थे। यह निश्चय है—कि मैं इसको सहन नहीं कर सकता, यह एक स्वप्न है, बहुत ही भयानक स्वप्न—कि मैं उसी जगह जो कि एक दिन मेरा प्यारा म्युजियम था आज एक चोर कि भाँति गिरफ्तार होऊँ। इस पर भी मैं आपको दोष नहीं देता। और आप कर ही क्या सकते थे? मेरी मशा थी कि पकड़े जाने के पूर्व ही मैं सब समाप्त कर दूँ। यह मैं कल रात को ही कर चुका होता।"

समय भी वह दत्तचित्त अपनी काली करतूत में लगा था। हम लोग बड़े धीरे-धीरे पंजो के बल आगे बढ़ने लगे। इतनी सावधानी करने पर भी हम लोग उसको अनजान में एकाएक नहीं पकड़ सके। हम लोगो से वह लगभग कुछ गज दूर रह गया था कि वह एकएक हम लोगो की ओर घूमा और हमें वहाँ देखकर भौंचक्का-सा रह गया। और डरकर भर्राई आवाज़ में चिल्लाकर भागा।

"मनोहर! मनोहर!" वर्मा ने आवेश में पुकारा और बिजली के प्रकाश से दूर, बाहर सामने ही गठा शरीरवाला चौकीदार एकाएक दिखाई पड़ा। डाक्टर मेहता ने उसको भी देखा और निराशा की दशा में चुपचाप खड़े हो गये। उसी समय हम लोगो ने अपना हाथ उनके कंधो पर रख दिया।

"हाँ, हाँ, महाशयो," उन्होंने कँपकँपाते हुए स्वर में कहा। उस समय उनके हृदय की गति बड़ी तीव्र हो रही थी। "मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ। यदि तुम बुरा न मानो तो तुम्हारे कमरे में ही चलूँ! मैं समझता हूँ कि सारी बातें आप लोगो को समझा देना बहुत आवश्यक है।"

मेरे मित्र का क्रोध के कारण बुरा हाल था। वे उस समय उत्तर तक देने में असमर्थ थे। हम लोग डाक्टर मेहता को बीच में कर चलने लगे। चौकीदार उनके पीछे-पीछे चल रहा था। उसको भी उनके इस जघन्य कृत्य पर बड़ा अचम्भा हो रहा था। जब हम लोग उस केस के निकट पहुँचे तो हम लोग खड़े हो गये और मिस्टर वर्मा भुजबन्द की परीक्षा करने लगे। नीचे की पंक्ति के एक रत्न की यही दुर्दशा कर दी गई थी जो ऊपरी पंक्ति के आठों रत्नों की। वर्मा ने उसको उठा लिया और अपने उँगली को बड़ी बुरी तरह से घुमने लगे।

"यह तुमने क्या किया!" आवेश में उन्होंने पूछा, "कैसे यह तुम्हारे लिए सम्भव हुआ।"

"यह बहुत ही बुरा है—बहुत ही बुरा!" डाक्टर ने कहा, "आप लोगो के मनस्ताप पर मुझे लेशमात्र विस्मय नहीं है। मुझे अपने कमरे में ले चलिए।"

"किन्तु यह ऐसे ही खुला नहीं पडा रहेगा!" मिस्टर वर्मा ने क्रोध से कहा। उन्होने भुजबन्द को उठा लिया और बडी सावधानी से अपनी मुट्ठी में रख लिया। मैं डाक्टर को अपने बग़ल में लेकर उसी भाँति चलने लगा जैसे पुलिस का सिपाही एक क़ैदी को लेकर चलता है। चौकीदार को उसकी कल्पना पर वहीं छोडकर हम लोग वर्मा के कमरे में चले गये। डाक्टर वर्मा आरामकुर्सी पर बैठ गये और उनका रग एकदम श्वेत हो गया। उनके अंग-अंग अकड़ रहे थे। उस समय हम लोग उनके सारे दुष्कर्म को भूलकर उनके लिए चिन्तित हो गये। मिस्टर वर्मा ने तुरन्त उनको स्प्रिट अमोनिया पिलाया और तब उनको होश हुआ।

"ओह, अब मैं अच्छा हूँ!" उन्होने कहा। पिछले थोडे से दिन मेरे लिए बडे अनिष्टकारी थे। यह निश्चय है—कि मैं इसको सहन नही कर सकता, यह एक स्वप्न है, बहुत ही भयानक स्वप्न—कि मैं उसी जगह जो कि एक दिन मेरा प्यारा म्युजियम था आज एक चोर कि भाँति गिरफ्तार होऊँ। इस पर भी मैं आपको दोष नहीं देता। और आप कर ही क्या सकते थे? मेरी मशा थी कि पकडे जाने के पूर्व ही मैं सब समाप्त कर दूँ। यह मैं कल रात को ही कर चुका होता।"

"म्युजियम के भीतर आपका प्रवेश कैसे हुआ ?" मिस्टर वर्मा ने पूछा।

"तुम्हारे निजी कमरे के दरवाजे से बड़ी स्वतन्त्रता के साथ। किन्तु ऐसा करना मेरा नैतिक धर्म था। जो कुछ मैंने किया वह सब नैतिकता के नाते ठीक ही था। जब सारी बातें तुम जान जाओगे तब तुम्हारा क्रोध दूर हो जायगा—कम से कम मेरे लिए तुम्हारे हृदय में क्रोध की तनिक भी मात्रा न रह जायगी। मेरे पास तुम्हारे और म्युजियम के दरवाजे की चाबियाँ थीं। जब मैं यहाँ से गया तब चाभियाँ मेरे पास ही थीं, उनको मैं अपने साथ लेता गया था। अब तुम समझ सकते हो कि म्युजियम में प्रवेश कर जाना मेरे लिए कठिन नहीं था। मैं जरा सबेरे ही सड़क सुनसान होने के पहले ही यहाँ आ जाता था। मैं उसी ममी-केस में छिप गया था और जब कभी मनोहर चक्कर लगाने के लिए सामने आता हुआ प्रतीत होता तो मैं उसी में भागकर छिप जाता था। मैं सर्वत्र उसके आने के शब्दों को सुन सकता था। जिस प्रकार मैं आता था वैसे ही चला भी जाया करता था।

"आप अपने को बड़े जोखिम में डालते थे।"

"ऐसा करना मेरा कर्त्तव्य था।"

"लेकिन क्यों? आपकी मंशा क्या थी कि आप इतना घृणित काम करें!" वर्मा ने घृणापूर्वक मनोहर की ओर संकेत किया।

"मेरे पास और कोई उपाय नहीं था। मैंने बहुत सोचा किन्तु इस मामले में, उपचार के सिवा और कोई उपाय था ही नहीं। यद्यपि मैं जानता था कि इससे मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा लग सकता था और

हम लोगो का जीवन अत्यन्त शोकपूर्ण बन जाने की सभावना थी। यद्यपि मेरा यह कर्म तुम्हें बुरा प्रतीत हो किन्तु मैंने भलाई के लिए ही ऐसा किया था। और मैं अब चाहता हूँ कि तुम मुझे जो कुछ मैंने कहा है, उसे सिद्ध करने का अवसर दो।"

"इस मामले को आगे बढाने के पूर्व मैं आपकी सारी सफाई सुनूँगा।" वर्मा ने कठोरता से कहा।

"मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं कुछ भी न छिपाऊँगा और तुम दोनो को अपनी उन सारी बातो से अवगत करा दूँगा जिनको मैं किसी को बतलाना नहीं चाहता था। यह मैं आप लोगो की दया पर छोड दूँगा कि आप मेरी इन बातो का उपयोग कहाँ तक करेंगे।"

"आवश्यकता भर के लिए हम लोग काफी बातें जानते है।"

"तिस पर भी तुम लोग कुछ नहीं समझते। अच्छा मुझे यह बतलाने दो कि कुछ दिनो पूर्व कौन-सी घटना घटी और फिर सारी बातें स्पष्ट हो जायेंगी। विश्वास करो कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह अक्षरशः सत्य है।'

"तुम उस व्यक्ति से मिल चुके हो जो अपने को कैप्टन दवे कहता है। मैं कहता हूँ 'कहता है' क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया है कि यह उसका असली नाम नहीं है। यदि मैं यह बतलाने लगूँ कि उसने मुझसे जान-पहचान कैसे की और यह मेरा कृपा-पात्र कैसे बना तथा मेरी लडकी का प्यार कैसे प्राप्त किया तो यह बडी लम्बी कहानी हो जायगी। वह मेरे योरपीय मित्रो का परिचयात्मक पत्र लेकर आया था। इससे मैं उस पर ध्यान देने को बाध्य था। धीरे

धीरे अपनी व्यवहार-कुशलता से वह मेरा कृपा-पात्र बन गया। जब मैंने यह जाना कि उसे मेरी पुत्री का प्यार प्राप्त हो गया है तब मैंने इसको केवल प्रभावहीन प्यार समझा था। किन्तु इस पर मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ था क्योंकि उसका आचार-व्यवहार तथा बात-चीत का ढग इतना आकर्षक था कि किसी समाज में वह बहुत शीघ्र सर्वप्रिय हो सकता था।"

"वह भारतवर्ष की प्राचीन वस्तुओ में विशेष दिलचस्पी रखता था और इस विषय का उसे अच्छा खासा ज्ञान भी था। प्राय· संध्या को जब वह हम लोगो के साथ होता तो एकान्त में सग्रहालय की वस्तुओ को देखने की वह मुझसे अनुमति माँगता। तुम स्वय समझ सकते हो कि मैं इस विषय में कितना उत्साही हूँ अत· उसकी प्रार्थना को ठुकरा देना मेरे लिए सभव नहीं था। उसके बराबर सग्रहालय में आने और एकान्त में उन सारी चीजो के देखने में मुझे कोई आश्चर्य की बात नहीं मालूम पडती थी। लीला से घनिष्ठता हो जाने के पश्चात् शायद ही कोई ऐसा दिन गया हो जिस दिन की संध्या को वह हम लोगों के पास न आया हो और घडी, दो घडी अकेले म्युजियम में न बैठा रहा हो। म्युजियम में आने-जाने की उसको पूर्ण स्वतत्रता थी और जब कभी सध्या को मैं कहीं चला जाया करता था तो भी मुझे उसके म्युजियम में बना रहने के लिए कोई आपत्ति नहीं होती थी। मेरे पद-त्याग कर देने और लूकरगंज चले आने पर, जहाँ कि अवकाश में मैं बहुत कुछ लिखने का निश्चय कर चुका था, उसका म्युजियम में इस प्रकार आना-जाना भी बन्द हो गया।

"इसके पश्चात्—लगभग एक सप्ताह के भीतर ही—मुझे उस आदमी का, जिसे मैं विवेकशून्य होकर अपने यहाँ आने-जाने देता था, वास्तविक चरित्र मालूम पड़ा। यह मुझे मेरे विदेशी मित्रो के पत्रो से मालूम हुआ। उन लोगो ने लिखा कि उसने परिचयात्मक पत्र का जाल किया था। इस पर मैं सन्न रह गया और सोचने लगा कि इस प्रकार का आडम्बर रचने में उसका वास्तविक उद्देश्य क्या था। किसी भी धन-पिपासु के लिए मैं एक निर्धन व्यक्ति था। फिर वह मेरे पास क्यो आया? फिर, मुझे ख़याल आया कि ससार के कुछ बहुमूल्य रत्न मेरे अधिकार में थे और फिर उसके उस चतुरतापूर्ण बहाने पर भी ध्यान आया जिससे कि वह उस केस का पता जान सका जिसमें वे रत्न रक्खे हुए थे। वह बड़ा दुश्चरित्र था जो कि एक बहुत बड़ा डाका डालने का प्रयत्न कर रहा था। किस प्रकार, बिना अपनी पुत्री का हृदय विदीर्ण किये हुए, जो कि उस पर आसक्त हो रही थी मैं उसको उसके घृणापूर्ण व्यापार को सफल बनाने से रोक सकता था? यद्यपि मेरा ढग बहुत भोडा था तो भी इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था। यदि मैंने अपने नाम से तुम्हें पत्र लिखा होता तो तुम मुझसे सारा ब्योरा जानना चाहते और उसको मैं गुप्त रखना चाहता था। अत मैंने तुम्हें सतर्क रहने के लिए एक गुमनाम पत्र लिखा।

"मैं यह भी बता देना चाहता हूँ कि लूकरगज चले जाने से उस आदमी का मेरे यहाँ आना-जाना नहीं बन्द हुआ। यह इस बात का द्योतक है कि उसके हृदय में भी मेरी पुत्री के लिए प्रभावशाली स्थान हो गया था। उसके विषय में तो केवल मैं यही कहूँगा कि आज तक मैं

किसी लडकी को नहीं देखा जो कि किसी पुरुष से इतनी प्रभावित हुई हो। वह पूर्णत उसके वश में हो गई थी। उन लोगो की घनिष्ठता कहाँ तक बढ़ गई थी, मुझे उसी दिन ज्ञात हुआ जिस दिन उसके वास्तविक चरित्र का मुझे पता चला। मैंने नौकरो को समझा दिया था कि जब वह आवे तो वह सीधे मेरे पास, मेरे पढ़ने के कमरे में भेज दिया जाय। ड्राइगरूम में उसको बैठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने अपने कमरे में ही उसे साफ-साफ बतला दिया कि मैं उसके विषय में सब कुछ जान गया था, और उसके प्रयत्नो को विफल कर देने का मैंने प्रबन्ध भी कर लिया था। मैंने यह भी कह दिया था कि न तो मैं और न मेरी लडकी उसको फिर कभी अपने यहाँ देखना चाहती थी। मै बार बार कहता चला गया कि ईश्वर की कृपा थी कि उन मूल्यवान् वस्तुओ को, जिनकी रक्षा करना मेरे जीवन का ध्येय था, कुछ भी हानि पहुँचने के पूर्व ही मैं उसे समझ गया।'

"यह मानना पडेगा कि वह बडा दृढ़ व्यक्ति था। वह मेरे शब्दों को सुनकर तनिक भी विचलित नहीं हुआ—न तो उसको विस्मय हुआ और न उसने मेरा प्रतिवाद किया—जब तक मैं बकता रहा वह चुपचाप ध्यान से सुनता रहा। फिर वह चुपचाप कमरे से बाहर चला गया और घंटी बजाई।

"लीना से जाकर कहो कि ज़रा वे यहाँ चली आवें।" नौकर को उसने आज्ञा दी।

"मेरी लड़की वहाँ आ गई। उसने उसके पीछे के किवाड़ों को बन्द कर दिया। फिर उसने उसके हाथ को पकड़ लिया।

"लीला,' उसने कहा, 'तुम्हारे पिता ने पता लगाया है कि मै बदमाश हूँ। जिसको तुम पहले से जानती थीं उसको वे अब जान पायें हैं ।"

"वह चुपचाप खडी सुन रही थी।

"वे कहते हैं कि अब हम-तुम सदैव के लिए अलग होंगे, उसने कहा।

"उसने अपने हाथ को नहीं हटाया।

"तुम मेरी होकर रहोगी अथवा मेरे जीवन में जो अच्छाई आ रही है उसको सदैव के लिए दूर करोगी ?"

"नहीं, कैप्टन, नहीं,' वह प्रेमावेश में चिल्ला पडी। 'कभी नहीं, चाहे सारा ससार तुम्हारे विरुद्ध हो जाय, मैं तुम्हें अब कभी नहीं छोड सकती ।'

"उसको समझाने के मेरे सारे उपाय निष्फल हो गये। मेरे तर्कों से वह जरा भी प्रभावित न हो सकी। वह आत्मसमर्पण कर चुकी थी। यही लडकी, तुम लोग जानते हो, मेरी आँखो का तारा है। मेरा सारा प्यार उसी पर केन्द्रित है। उस समय जब मुझे यह अनुभव हुआ कि अब मैं उसे उसके जीवन को सर्वनाश होने से नहीं बचा सकता तो मुझे अपार दु:ख हुआ। मेरी असमर्थता ने, उस मनुष्य को, जो कि मेरे कष्टो का कारण था, पिघला दिया।

"जितनी बुराई की आप कल्पना करते हैं उतनी नहीं भी हो सकती है, 'जनाब, उसने उसी दृढ़ता से कहा। 'मैं लीला को ऐसा प्यार करता हूँ जो कि मेरे ऐसे मनुष्य के सारे दुर्गुणो को दूर करने में समर्थ हो सकता है। कल ही मैंने उससे प्रतिज्ञा की है कि अपने जीवन में अब कोई भी ऐसा कर्म नहीं करूँगा जिसके लिए

उसे लज्जा उठानी पड़े। मैंने पूर्णरूप से इसके लिए निश्चय क
लिया है। और मैं जिस बात के लिए निश्चय कर लेता हूँ उसे क
ही के छोड़ता हूँ।'

"उसकी बातों से दृढ़ता टपक रही थी। जैसे ही उसने अप
बात पूरी की वैसे ही उसने अपनी जेब से एक कागज का ब
निकाला।"

"मैं अपने निश्चय का एक प्रमाण आपके सामने उपस्थित कर
रहा हूँ"—उसने कहा। "आपकी यह धारणा कि मैं उन रत्नों को
निकाल लेना चाहता था, ठीक है। इस प्रकार का दुस्साहसिक कार्य
मुझे बहुत प्रिय है। यह उतना ही अधिक दुस्साहसिक हो सकता
है जितना कि अधिक उस वस्तु का मूल्य, जिसके लिए यह कार्य मैं
करता हूँ। ये प्रसिद्ध प्राचीन रत्न मेरे साहस के लिए तलवार के
समान थे। मैंने उन्हें प्राप्त कर लेने की प्रतिज्ञा कर ली थी।"

"इतना मैं भी समझ गया था।"

"केवल एक बात ऐसी रह गई थी जिसे आप नहीं समझ
पाये थे।'

"वह क्या?"

"यही कि मैं उनको पा गया। वे इसी थाल में हैं।'

"उसने उस बण्डल को खोला और उसमें जो कुछ था उसे मेरी
मेज के एक किनारे गिरा दिया। ज्यों ही मैंने उनको देखा मेरे रोंगटे
खड़े हो गये और मैं स्तब्ध रह गया। वे बारह सुन्दर हीरे चमकते
हुए रत्न थे जिन पर रहस्यपूर्ण अक्षरों में कुछ खुदा हुआ था। इसमें
किंचित कुछ सन्देह ही नहीं हो सकता था कि वे असली ही रत्न थे।

"हे ईश्वर!" मैं चिल्ला पड़ा। 'यह तुमने कैसे किया कि पकड़े नहीं गये?'

"बारह अन्य नक़ली रत्न इनकी जगह पर लगा देने से। वे रत्न मैंने बिलकुल इन्हीं के समान नकली बनवाये थे।"

"तो मौजूदा रत्न नकली हैं?" मैंने पूछा।

"कुछ हफ्तों से वे ऐसे ही हैं।"

"हम सब लोग चुपचाप खड़े हो गये। मेरी लड़की भावुकता के कारण एकदम पीली पड़ गई, किन्तु उस आदमी को वह फिर भी अपने हाथ से पकड़े रही।

"तुम देखती हो लीला। मैं क्या-क्या कर सकता हूँ?" उसने कहा।

"हाँ, मैं देखती हूँ कि तुम प्रायश्चित्त कर सकते हो और क्षति-पूर्ति भी", उसने उत्तर दिया।

"अवश्य, आपके प्रभाव को धन्यवाद! इन रत्नों को मैं आपको सौंपता हूँ। आप जो चाहें करें। किन्तु महाशय, इस बात का ध्यान रक्खें कि आप मेरे विरुद्ध करेंगे जो कुछ भी वह आपकी एकलौती लड़की के भावी पति के विरुद्ध होगा। मैं जल्दी ही तुमसे फिर मिलूँगा, लीला! अन्तिम बार मैं तुम्हारे कोमल हृदय को यह धक्का पहुँचा रहा हूँ।" इतना कहकर वह मकान से चला गया।

मेरी स्थिति बड़ी भयंकर हो गई थी। ये क़ीमती रत्न मेरे पास थे, और मैं उनको किस प्रकार बिना किसी बदनामी तथा बिना यह भेद किसी पर प्रकट किये हुए उनको लौटा देता? मैं अपनी लड़की के हृदय की गहराई खूब जानता था। उसको उस मनुष्य से

अलग कर देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं थी। मैं यह भी निश्चय नहीं कर सका था कि उसे उस व्यक्ति से अलग करना जिसके ऊपर उसका पूर्ण प्रभाव था और जो उसी प्रभाव के कारण मनुष्य बन रहा था, कहाँ तक न्यायसंगत था। बिना लीला को दुःख पहुँचाये मैं इस भेद को कैसे प्रकट कर सकता था और उसका भंडाफोड करना कहाँ तक उचित था जब उसने अपने आपको मुझे सौंप दिया था? मैंने इस पर बहुत विचार किया और अन्त में मुझे वही उपाय सूझ पड़ा जिसको आप लोग मूर्खतापूर्ण कह सकते हैं किन्तु मेरे विचार से तो, यदि मुझे ऐसा फिर कभी करना पड़े तो, यही सबसे अच्छा मार्ग होगा।

"मेरा विचार था कि मैं इन रत्नों को बिना किसी और पर प्रकट किये लौटा दूँ। कुंजियाँ मेरे पास थीं हीं इसी लिए मैं म्यूजियम में किसी समय प्रवेश कर सकता था और मनोहर की चौकीदारी की गतिविधि से मैं भली-भाँति परिचित था, अतः उसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं थी। मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं इस भेद को एकदम गुप्त रखूँगा इसी लिए मैंने अपनी लड़की से कह दिया था कि मैं अपने भाई के पास लखनऊ जा रहा हूँ। मैं रात में स्वतन्त्र रहना चाहता था—अर्थात् मैं यह नहीं चाहता था कि कोई मुझसे मेरे रात को आने-जाने के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की पूछ-ताछ करे। इसी उद्देश्य से [illegible] की एक [illegible] गली में मैंने एक छोटा-सा मकान किराये पर ले लिया था और मालिक मकान से यह कह दिया था कि मैं लीडर प्रेस में रात की ड्यूटी का काम करता हूँ और यहाँ रात बिताने आता हूँ।

"उस रात को म्युजियम में घुसकर मैंने चार रत्न भुजबन्द में लगा दिये। यह काम बडा कठिन था और सारी रात में केवल चार ही रत्न बदल सका। जब कभी मैं मनोहर को आता हुआ सुनता उसी ममीकेस में छिप जाता। सोने का काम करने का मुझे कुछ ज्ञान था किन्तु उतना नहीं जितना कि उस चोर को था। उसने रत्नो को इस कौशल से जडा था कि किसी को लेशमात्र अन्तर नहीं मालूम पड सकता था। मेरा किया हुआ काम भोडा था। इसकी चिन्ता भी मुझे नहीं थी, क्योंकि मेरा विचार था कि भुजबन्द को इतनी बारीकी से कोई नहीं देखेगा कि उसको यह भोडापन मालूम हो सके। कम से कम जब तक मेरा काम समाप्त नहीं हो जाता उसको कोई नहीं देखेगा, बाद को अगर मालूम भी हो जायगा तो किसी सुनार से वह ठीक करा लिया जायगा। कल रात को मैंने चार रत्न और बदल दिये थे। और आज वह भी पूरा हो गया होता यदि दुर्भाग्यवश मेरी यह दशा न हुई होती कि जिस बात को मैं गुप्त रखना चाहता था वह भी आप लोगो के सामने प्रकट करनी पडी। मैं आप लोगो से प्रार्थना करता हूँ और यह आप लोगो के सद्-विचार पर छोडता हूँ कि जो कुछ मैंने आप लोगो को बतलाया है उसको आप दूसरो पर प्रकट करें या नहीं। मेरा सुख, मेरी लडकी का भाग्य तथा उस मनुष्य का कायापलट सब कुछ आप लोगो के निर्णय पर निर्भर है।"

"जिस कार्य का अन्त अच्छा होता है वह ठीक ही होता है," मेरे मित्र ने कहा। और यह मामला यहीं और अभी समाप्त होता है। रत्नो का ढीलापन करा किसी चतुर सुनार को बुलाकर ठीक ...

लिया जायगा और इस प्रकार भुजचन्द के ऊपर आनेवाली विपत्ति टल जायगी। निस्सन्देह ऐसी भयानक परिस्थिति में मैंने भी यही किया होता।"

हाँ, एक बात और। एक महीने बाद लीला की शादी उस व्यक्ति से हो गई जिसका अब काफी सम्मान है। किन्तु सत्य यह है कि यह इज्जत उसको न मिलनी चाहिए वरन् उस लड़की को जिसने उसे पतन के उस मार्ग से बचाया जिससे किसी का बच जाना सभव नहीं होता।

काला सन्दूक

'जीवन में पदार्पण करने पर लोगो को बहुधा विचित्र-विचित्र बातो का अनुभव हुआ करता है। यह भी उसी प्रकार की एक अनोखी घटना थी," गृह-शिक्षक ने कहा। "इस घटना के कारण मुझे जो सुअवसर प्राप्त हुआ उसको मैंने खो दिया था, किन्तु फिर भी मुझे प्रसन्नता इस बात की थी कि मैं 'रग-भवन' पहुँचा वहाँ जाने से मेरा लाभ ही हुआ। मेरी इस कहानी से आपको मालूम हो जायगा कि मुझे क्या लाभ हुआ।

'सम्भव है आप इलाहाबाद जिले के उस भाग से परिचित हो जो माँडारोड स्टेशन के दक्षिण विंध्याचल की पहाड़ियो तक फैला हुआ है। स्टेशन से चलने पर पहले तो आपको यह भूमि बडी उपजाऊ प्रतीत होगी। रास्ते में हरे-भरे खेत लहलहाते दिखाई पडेंगे किन्तु ज्यों-ज्यो आप दक्षिण की ओर बढते जायँगे यह भूमि क्रमश ऊँची होती जायगी और अन्त में उन्ही पहाडियो में विलीन हो जायगी। पहाडियाँ छोटी-छोटी है किन्तु कँटीली झाडियो से भरी हुई। मीलो तक आपको केवल बाँस के ही झाड दिखाई पडेंगे। इस भू-भाग में कोई नगर नहीं है। छोटे-छोटे गाँव अवश्य दूर-दूर पर दिखाई पडते है। लोगो के मकान प्राय मिट्टी के बने है। अमीरो के मकानो में भी ईंटो की जगह केवल पत्थरो का ही उपयोग किया गया है। मकानो की छतें भी इन्हीं पत्थरो की सिल्लियो से पटी हुई है।

"इसी भू-भाग के मध्य में माँडारोड से लगभग सात मील दक्षिण

'रंग-भवन' स्थित था। इसके स्वामी थे रायबहादुर ठाकुर शीतलाबख्श-सिंह। इन्हीं के यहाँ मैं इनके दो छोटे-छोटे लड़कों को पढ़ाने के लिए नियुक्त हुआ। रायबहादुर विधुर थे। उनकी पत्नी की लगभग तीन वर्ष पूर्व मृत्यु हो गई थी। उनकी केवल तीन सन्तानें थीं—दो छोटे-छोटे लड़के, जिनकी अवस्था क्रमशः आठ और दस वर्ष की थी और एक सात वर्ष की सुन्दर लड़की। सुश्री प्रभावती, जो अब मेरी पत्नी है, इस लड़की की गृह-शिक्षिका थी। मैं दोनों लड़कों को पढ़ाया करता था। क्रमशः हम लोगों में घनिष्ठता बढ़ती गई और अन्त में यह घनिष्ठता कुछ कठिनाइयों के पश्चात् विवाह में परिणत हो गई। प्रभावती जी आधुनिक विचारों की एक शिक्षित महिला थीं। अब आपको मालूम हो गया होगा कि मेरा क्या लाभ हुआ।

"रंग-भवन' बहुत पुराना मकान था। रायबहादुर के पितामह ने इसे बनवाया था। जब मैं पहले-पहल यहाँ आया तो मुझे बड़ी निराशा हुई। ऊँची-ऊँची पत्थरों की दीवारों तथा छतों पर काई जमी हुई थी। दीवारों से एक विशेष प्रकार की सड़ी-सी गंध आती थी। इसका वह भाग जिसे रायबहादुर ने स्वयं बनवाया था, नया था और बागीचा भी सुन्दर ढंग से लगाया गया था। कोई भी मकान, जिसके अन्दर एक रूपवती स्त्री हो और जिसके सामने सुन्दर सुन्दर गुलाब के पुष्प खिले हों, क्या कब उदास लग सकता है?

अब सब नौकरों को छोड़कर हम लोग चार प्राणी उस मकान में रहते थे—सुश्री प्रभावती, जो उस समय लगभग बीस वर्ष की सुन्दर युवती थीं; मैं, केदारचन्द्र वर्मा, अवस्था लगभग तीस वर्ष; घर की सारी व्यवस्था करनेवाली पार्वती जो बिलकुल गोरी और

गम्भीर थी और बाबू गयाप्रसाद, रायबहादुर के जमींदारी के मैनेजर। हम चारो प्रायः खाना अन्दर ही चौके में खाया करते थे किन्तु रायबहादुर साहब बाहर अपनी बैठक में। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि वे भी हम लोगो के साथ चौके में खाना खा लिया करते थे किन्तु हम लोग यही चाहते थे कि वे सर्वेव हम लोगो से अलग ही खाना खाया करें।

वे साढे छः फीट लम्बे थे और उनकी शारीरिक गठन बहुत ही सुन्दर और पुष्ट थी। नाक उनकी बडी लम्बी थी और चेहरे से अहमन्यता टपकती थी। सिर के बाल चितकबरे हो गये थे और भौहे खूब बडी-बडी तथा घनी थीं। दाढी के बाल काफी लम्बे और मुडे हुए थे। उनकी आँखो के नीचे और भौं के ऊपर की रेखायें इतनी गहरी थीं मानो उन्हे किसी ने चाकू से बना दिये हो। आँखें काली-काली किन्तु छोटी-छोटी थीं और उनमें अहंकारमिश्रित दया का भाव छिपा रहता था। उनकी अवस्था शायद पचपन वर्ष की थी। इस अवस्था में भी अपनी शारीरिक गठन के कारण वे बहुत स्वस्थ और सुन्दर दीख पडते थे।

उनकी उपस्थिति लोगो को सुखद नहीं प्रतीत होती थी। वे बहुत ही नम्र और व्यवहार-कुशल थे किन्तु बहुत ही चुप-चुप। बोलते तो बहुत ही कम थे। और प्राय एकान्त में रहना पसंद करते थे। यद्यपि मैं उनके साथ बहुत दिनो तक रहा किन्तु उनके विषय में बहुत कम जान सका। जब कभी वे घर पर रहते थे तो अपना सारा समय वे अपनी बैठक तथा अपनी लाइब्रेरी में बिताया करते थे। उनका कार्यक्रम इतना नियमित था कि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय यह बतला सकता था कि वे उस समय कहाँ होगे। प्रतिदिन दो बार वे अपनी बैठक में जाया करते थे। एक तो सबेरे नाश्ता करने के बाद और दूसरे

रात को लगभग दस बजे। इस बात का पता आपको बैठक की भारी भारी किवाड़ों के खुलने और बन्द होने के धमाके से चल सकता था। बाकी सारे दिन वे अपनी लाइब्रेरी में बैठा करते थे। हाँ, तीसरे पहर अवश्य टहलने के लिए कभी पैदल और कभी घोड़े पर चले जाते थे और घंटे, दो घंटे के बाद लौटते थे। टहलना भी उनका एकाकी और एकान्त में हुआ करता था। वे अपनी सन्तान को बड़ा प्यार करते थे और उनकी शिक्षा के विषय में बड़े सतर्क रहा करते थे। लड़के उनसे उनकी भवरी भौंहों तथा गम्भीर मुद्रा के कारण कुछ डरा-सा करते थे और उनसे दूर ही रहना अधिक पसन्द करते थे। और यही दशा हम लोगों की भी थी।

रायबहादुर की जीवन-सम्बन्धी बातों का पता मुझे बहुत देर से चला। गृह-रक्षिका पार्वती और रियासत के मैनेजर बाबू गयाप्रसाद इतने स्वामि-भक्त थे कि अपने मालिक की जीवन-सम्बन्धी बातों की कभी चरचा ही नहीं करते थे। प्रभावती उनके विषय में मुझसे अधिक कुछ भी नहीं जानती थीं और अपने पारस्परिक हितों के कारण हम दोनों बिल्कुल बँध-से गये थे। अन्त में एक ऐसा अवसर आया जब मैं रायबहादुर को अच्छी तरह समझ सका और उनके जीवन-सम्बन्धी बातों को भली-भाँति जान पाया।

इसका तात्कालिक कारण था उनके छोटे लड़के महेन्द्र विक्रम का खेलते-खेलते उस तालाब में फिसलकर गिर पड़ना जिसको उन्होंने नहाने और तैरने के लिए मकान के चारदीवारी के अन्दर एक किनारे पर बनवाया था। उसको बचाने के लिए मैं भी तालाब में कूद पड़ा और बड़ी कठिनाई से उसे बचाया। तालाब गहरा था और मैं भी

तैरना बहुत कम जानता था। उसके बचाने में मैं आवश्यकता से अधिक थक गया था। ज्यो ही मैं अपने कमरे में जाने लगा रायबहादुर ने, जो अपनी बैठक में बैठे-बैठे यह सब कोलाहल सुन रहे थे अपनी बैठक की किवाडो को खोलते हुए पुकारा और कोलाहल का कारण पूछा। मैंने घटना पर प्रकाश डालते हुए उन्हे विश्वास दिलाया कि लडका बच गया है और उसको कोई हानि नही पहुँची है। वे मेरी बातो को बडे गौर से सुन रहे थे। यद्यपि उस समय वे बडे गम्भीर थे किन्तु उनका भावावेश उनकी आँखो से साफ झलक रहा था।

कमरे की तरफ घूमते हुए उन्होने कहा, "जरा सुनिए! एक क्षण के लिए यहाँ आइए! मुझे सारी बातें साफ-साफ बतलाइए।"

इस प्रकार मुझे उस छोटे से कमरे में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें कि शायद पिछले तीन वर्षों से रायबहादुर को छोडकर और कोई नहीं जा सका था। वह बूढी नौकरानी अवश्य झाडू लगाने प्रतिदिन प्रातःकाल वहाँ जाया करती थी। वह एक गोल कमरा था। खिडकी उसमें केवल एक थी। फर्नीचर बडे ही साधारण थे—एक पुराना कालीन बिछा हुआ था; एक कुर्सी, एक किताबो की आलमारी और एक पुराना मेज। बस इतनी ही चीजें उस कमरे में थीं। मेज पर एक स्त्री की बडी-सी तसवीर रक्खी थी। मैंने इस तसवीर को बडे ध्यान से तो नहीं देखा फिर भी मैं इतना कह सकता हू कि उसके चेहरे से सौम्यता टपक रही थी। इसके अतिरिक्त एक काला सन्दूक़ था और पत्रो अथवा काग़जो के दो बण्डल जो एक दूसरे से बँधे हुए थे।

हम लोगो में बहुत थोडी बातें हुईं। मैं भीग गया था अत कपडो का बदलना बहुत आवश्यक हो रहा था। यह रायबहादुर साहब से

रात को लगभग दस बजे। इस बात का पता आपको बैठक की भारी भारी किवाड़ो के खुलने और बन्द होने के धमाके से चल सकता था। बाकी सारे दिन वे अपनी लाइब्रेरी में बैठा करते थे। हाँ, तीसरे पहर अवश्य टहलने के लिए कभी पैदल और कभी घोड़े पर चले जाते थे और घंटे, दो घंटे के बाद लौटते थे। टहलना भी उनका एकाकी और एकान्त में हुआ करता था। वे अपनी सन्तान को बड़ा प्यार करते थे और उनकी शिक्षा के विषय में बड़े सतर्क रहा करते थे। लड़के उनसे उनकी भवरी भौंहो तथा गम्भीर मुद्रा के कारण कुछ डरा-सा करते थे और उनसे दूर ही रहना अधिक पसन्द करते थे। और यही दशा हम लोगो की भी थी।

रायबहादुर की जीवन-सम्बन्धी बातो का पता मुझे बहुत देर में चला। गृह-रक्षिका पार्वती और रियासत के मैनेजर बाबू गयाप्रसाद इतने स्वामि-भक्त थे कि अपने मालिक की जीवन-सम्बन्धी बातो की कभी चरचा ही नहीं करते थे। प्रभावती उनके विषय में मुझसे अधिक कुछ भी नहीं जानती थीं और अपने पारस्परिक हितो के कारण हम दोनों बिल्कुल बँध-से गये थे। अन्त में एक ऐसा अवसर आया जब मैं रायबहादुर को अच्छी तरह समझ सका और उनकी जीवन-सम्बन्धी बातों को भली-भाँति जान पाया।

इसका तात्कालिक कारण था उनके छोटे लड़के महेन्द्र विक्रम का खेलते-खेलते उस तालाब में फिसलकर गिर पड़ना जिसको उन्होंने नहाने और तैरने के लिए मकान के चारदीवारी के अन्दर एक किनारे [illegible] था। उसको बचाने के लिए मैं भी तालाब में कूद पड़ा [illegible] तालाब गहरा था और मैं भी

तैरना बहुत कम जानता था। उसके बचाने में मैं आवश्यकता से अधिक थक गया था। ज्यो ही मैं अपने कमरे में जाने लगा रायबहादुर ने, जो अपनी बैठक में बैठे-बैठे यह सब कोलाहल सुन रहे थे अपनी बैठक की किवाडो को खोलते हुए पुकारा और कोलाहल का कारण पूछा। मैंने घटना पर प्रकाश डालते हुए उन्हे विश्वास दिलाया कि लडका बच गया है और उसको कोई हानि नहीं पहुँची है। वे मेरी बातो को बड़े गौर से सुन रहे थे । यद्यपि उस समय वे बडे गम्भीर थे किन्तु उनका भावावेश उनकी आंखो से साफ झलक रहा था।

कमरे की तरफ घूमते हुए उन्होने कहा, "जरा सुनिए! एक क्षण के लिए यहां आइए! मुझे सारी बातें साफ-साफ बतलाइए।"

इस प्रकार मुझे उस छोटे से कमरे में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें कि शायद पिछले तीन वर्षों से रायबहादुर को छोडकर और कोई नहीं जा सका था। वह बूढी नौकरानी अवश्य झाड़ू लगाने प्रतिदिन प्रात.काल वहां जाया करती थी। वह एक गोल कमरा था। खिडकी उसमें केवल एक थी। फर्नीचर बडे ही साधारण थे—एक पुराना कालीन बिछा हुआ था; एक कुर्सी, एक किताबो की आलमारी और एक पुराना मेज। बस इतनी ही चीजें उस कमरे में थीं। मेज पर एक स्त्री की बडी-सी तसवीर रक्खी थी। मैंने इस तसवीर को बडे ध्यान से तो नहीं देखा फिर भी मैं इतना कह सकता हू कि उसके चेहरे से सौम्यता टपक रही थी। इसके अतिरिक्त एक काला सन्दूक था और पत्रो अथवा कागजो के दो बण्डल जो एक दूसरे से बँधे हुए थे।

हम लोगो में बहुत थोडी बातें हुईं। मैं भीग गया था अतः कपडो का बदलना बहुत आवश्यक हो रहा था। यह रायबहादुर साहब से

छिपा न रह सका। इसी घटना के कारण बाबू गयाप्रसाद से भी बातें करने का मुझे अवसर मिला। बाबू गयाप्रसाद को इस कमरे के अन्दर जाने का कभी भी अवसर नहीं मिला था। उसी दिन तीसरे पहर वे मेरे पास आये और मेरे साथ बाग में टहलने लगे। मेरे दोनों विद्यार्थी लान में बेडमिंटन खेल रहे थे।

"आप नहीं समझ सकते कि आपके साथ विशेष व्यवहार किया गया है," बाबू गयाप्रसाद ने कहा। "यह कमरा बड़ा रहस्यपूर्ण है और रायबहादुर साहब का इसमें जाने का समय बिलकुल निश्चित है। इन कारणों से इस घर के प्राय सभी लोग इस कमरे के विषय में तरह-तरह की अनोखी बातें किया करते है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मैं उन किस्सों को आपको सुनाऊँ जो इस कमरे के सबंध में फैले हुए हैं तो आपको विश्वास हो जायगा कि रायबहादुर साहब, अपनी पिछली आदतों के फिर शिकार हो गये हैं। लोगों का कहना है कि इस कमरे में ऐसे लोग आते हैं जिनका भेद कोई भी नहीं जानता। नौकरों ने इस कमरे में अन्य व्यक्तियों की आवाज़ें भी सुनी हैं।"

"पिछली आदतों के शिकार से आपका क्या अभिप्राय है?" मैंने कौतूहलपूर्ण स्वर में पूछा।

वह विस्मय से मुझे घूरने लगा।

"क्या यह सम्भव है कि रायबहादुर साहब के पिछले जीवन से आप अभी तक बिल्कुल अनभिज्ञ हैं?" उसने कहा।

"बिल्कुल अनभिज्ञ," मैंने उत्तर दिया।

"तब तो यह बिल्कुल नई बात है! मेरा तो ख्याल है कि इस [illegible] का प्रत्येक व्यक्ति रायबहादुर साहब के पिछले जीवन के सबंध

में कुछ न कुछ अवश्य जानता हूं। यदि मैं आपको अपना मित्र न समझता तो शायद मैं आपको ये बातें न बताता और इस दशा में जब कभी आप इन बातो को सुनते तो आपको बडा खेद होता। मेरा तो सदैव यही ख़याल था कि आप यह जानते है कि आप एक 'दुरात्मा' के नौकरो में से हैं।"

"लेकिन दुरात्मा क्यो?" मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"अफसोस, आप अभी नवजवान है और ससार में परिवर्तन बहुत जल्द हुआ करता है। किन्तु आज से बीस वर्ष पूर्व दुरात्मा शीतला-बख़्शसिंह का नाम इलाहाबाद में काफी प्रसिद्ध था। वह गुडो, जुवाडियो, शराबियो तथा अन्य सभी प्रकार के बदमाशो के गिरोहो का नायक था। उसमें सारी बुराइयां साकार विद्यमान थीं।"

मैं चकित होकर विस्मयपूर्ण दृष्टि से उसको देखने लगा।

"क्या!" मैंने विस्मयसूचित लहजे में कहा, "सीधे-सादे, मनो-योगी शोकातुर रायबहादुर साहब में?"

"इलाहाबाद का प्रसिद्ध दुराचारी और पतित व्यक्ति! देखिए इन बातो का जिक्र और किसी से न कीजिएगा। अब आप समझ गये होंगे कि मेरा क्या अभिप्राय है जब मैं यह कहता हूं कि उनके कमरे में एक स्त्री की आवाज अब भी सन्देह उत्पन्न कर सकती है।"

"किन्तु यह परिवर्तन उनमें कैसे हुआ?"

"प्रकाशवती के साथ विवाह होने के कारण! जिस दिन उसका विवाह उस भद्र महिला के साथ हुआ उसी दिन से उसमें परिवर्तन होने लगा। बुराइयो में वह इतना अधिक आगे बढ गया था कि उसके गिरोह के लोग भी उससे घृणा करने लग गये थे। शराब पीनेवाले

और पियक्कड में कितना अन्तर है इसको आप समझ सकते हैं। वे मन शराब पिया करते थे किन्तु पियक्कडों से घृणा करते थे। वह पक्का पियक्कड बन गया था। इसी बीच प्रकाशवती के साथ उसका विवाह हुआ और वे यहाँ आईं। विवाह में कोई रुकावट तो थी नहीं। धनी आदमी था—नौकर-चाकर थे, रियासत थी। और क्या चाहिए? ताल्लुकेदारों के सभी गुण तो उसमें थे ही। विवाह खुशी-खुशी समाप्त हुआ और वे इसके साथ रहने लगीं। प्रकाशवती सुशिक्षिता महिला थीं। उन्होंने देखा कि यद्यपि ठाकुर साहब बहुत पतित हो चुके हैं किन्तु फिर भी उनका सुधार सम्भव था। वह उनको सुधारने के लिए संलग्न हो गईं और उनको इस दशा में ला दिया। अब उनमें फिर मनुष्यता और सच्चरित्रता आ गई। आपको मालूम होगा कि अब इस मकान में कहीं एक बूँद भी शराब आपको न मिलेगी। जिस दिन से वे आईं, शराब घर से विदा हो गई। और इस समय! इस समय शराब की एक बूँद शेर के लिए एक बूँद खून के समान हो सकती है।

“तब क्या प्रकाशवती का प्रभाव अभी तक उनके ऊपर कायम है?”

“यही तो अचम्भा है। आज से तीन वर्ष पूर्व जब उनकी मृत्यु हुई तो हम लोगों को यह आशंका थी कि रायबहादुर साहब फिर पहले की तरह दुर्गुणों के शिकार हो जायेंगे। यही आशंका उन्हें भी थी। मरते समय उनको बड़ी चिन्ता थी और इसी चिन्ता के साथ उनकी मृत्यु हुई। वे रायबहादुर साहब के लिए एक देवी थीं और केवल उनका सुधार करने के लिए ही उनके पास आई थीं। अच्छा, यह तो बताइए कि आपने उनके कमरे में [illegible] देखा था?”

“हाँ।”

"मेरा अनुमान है कि उस सन्दूक में प्रकाशवती के पत्र हैं। जब कभी रायबहादुर साहब घर से बाहर जाते हैं, चाहे उनका जाना केवल एक ही रात के लिए हो, उस काले सन्दूक को अपने साथ ले जाना नहीं भूलते। देखिए मिस्टर केशवचन्द्र! मैंने आपको, जितना रायबहादुर साहब के जीवन के सम्बन्ध में बताना चाहिए था उससे कहीं अधिक बता दिया है। और मैं आपसे आशा करता हूँ कि यदि आपको उनके विषय में कोई बात मालूम हो तो आप मुझे बता दें।" बाबू गयाप्रसाद की इन बातों से प्रकट हो रहा था कि वह कौतूहल से चूर-चूर हो रहा है। और खीझ रहा है मुझ ऐसे नये नौकर को उस पुराने छोटे कमरे में जाने का सर्व-प्रथम अवसर पाने पर। उस दिन से वह मुझ पर अधिक श्रद्धा करने लगा और हमारी घनिष्ठता बढ गई।

अब रायबहादुर साहब की शान्त और प्रतापपूर्ण आकृति मेरे लिए एक कौतूहल की वस्तु बन गई। मैं उनकी आँखों में छिपी मानवता तथा उनके शोकपूर्ण आकृति पर अंकित गहरी रेखाओं का अध्ययन करने लगा। वे निरन्तर युद्ध कर रहे थे एक बडे शक्तिशाली वैरी के साथ। वे अपने वैरी को सदैव अपने से हाथ भर दूर ही रखते, थे। वह भी बडा प्रतापी था। यदि एक बार भी उसको इन्हे पकड़ लेने का अवसर मिल जाता तो वह इनका सत्यानाश ही करके छोडता। इनको बाग में टहलते देखता तो मुझे यह अनिष्ट आशंका साकार होकर परछाईं की भाँति उनके साथ-साथ टहलती प्रतीत होती। मुझे यह मालूम पडता कि वह घृणित शैतान उनके साथ उसी प्रकार घूम रहा है जैसे कोई भयभीत जंगली पशु अपने मालिक के साथ दुबककर रहता है और अवसर पाते ही उसके गले को दबोच बैठता है। उनकी उस पत्नी

के विषय में भी, जो इनको इस शैतान से सदैव बचाती रहती थी, मेरी कल्पना साकार हो जाती थी और उसकी परछाई मुझे सदैव रायबहादुर की रक्षा करती हुई दिखाई पड़ती थी।

रायबहादुर साहब के प्रति मेरे हृदय में सहानुभूति पैदा हो गई थी। यह अपने अनुभवों द्वारा वे ताड़ गये थे और उनकी मुख-मुद्रा से यह स्पष्ट होता था कि वे इससे असन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने मुझे अपने साथ टहलने के लिए भी एक दिन बुलाया। यद्यपि उस समय मुझसे कोई बातचीत नहीं हुई फिर भी इससे प्रकट होता था कि वे मेरा विश्वास करने लग गये थे। इसके पहले उन्होंने कभी किसी को अपने साथ टहलने को नहीं कहा था। उन्होंने मुझे अपने पुस्तकालय की किताबों को क्रमानुसार ठीक कर देने के लिए भी कहा। मैं रोज दो घंटे लाइब्रेरी में बैठे-बैठे किताबों को ठीक किया करता था। प्रायः रायबहादुर साहब भी वहीं बैठे-बैठे किताबें पढ़ा करते थे किन्तु मुझे उनसे बातचीत करने का कभी कोई अवसर नहीं प्राप्त हुआ। इतना सम्पन्न हो जाने पर भी उस दिन के अतिरिक्त और कभी उनके उस पुराने छोटे कमरे में जाने का सौभाग्य मुझे नहीं प्राप्त हो सका।

फिर एकाएक मेरे विचारों में परिवर्तन हो गया। एक ऐसी घटना घटी कि मेरी सारी सहानुभूति घृणा में परिणत हो गई और मुझे यह भान होने लगा कि रायबहादुर साहब का जीवन, अब भी, पहले ही-सा है। केवल एक दुर्गुण की अभिवृद्धि उनमें और हो गई है और वह है [illegible]। यह घटना इस प्रकार थी।

एक दिन सन्ध्या का समय [illegible] निकट के एक गाँव में अपनी [illegible] के यहाँ गई थीं। मैं उनको बुलाने गया था। अब इस

लोग वापस लौटे तो हम लोगो को एकाएक उस गोल कमरे में प्रकाश दिखाई पडा। खिड़की हम लोगो की उँचाई से अधिक ऊपर थी और उसके किवाड खुले हुए थे। गर्मी का महीना था। हम लोग बात-चीत में तल्लीन चले जा रहे थे। ज्योहीं हम लोग उस कमरे के निकट पहुँचे कि किसी चीज ने हम लोगो की बात को एकाएक बन्द कर दिया और हमारा ध्यान दूसरी ओर आकर्षित कर दिया।

यह और कुछ नहीं वरन् एक आवाज थी--एक स्त्री की आवाज। वह बहुत धीमी थी--इतनी धीमी कि उस रात्रि के सुनसान वातावरण में ही सुनी जा सकती थी। और उसकी क्षीणता बता रही थी कि वह किसी स्त्री ही की आवाज थी। कुछ जुम्ले तो उसने बडे हृदयस्पर्शी स्वर में सिसक-सिसककर कांपते हुए कहा और फिर वह स्वर धीरे-धीरे क्षीण और कातर होते-होते गायब हो गया। बडी करुण, दु खदायी और कातर थी वह आवाज। हम दोनो चकित होकर एक दूसरे को देखने लगे। और फिर एकाएक बडे कमरे के दरवाजे की ओर बढ गये।

"यह आवाज तो खिडकी से आ रही थी।" मैंने कहा।

"हमको किसी दूसरे की बात सुनने की चेष्टा न करनी चाहिए।" उसने कहा। 'हमें सब सुनी अनसुनी कर देनी चाहिए।"

उसके चेहरे पर विस्मय का जरा भी भाव नहीं था। इससे मुझे कुछ सदेह हुआ।

मैंने पूछा, "पहले भी तुम यह आवाज सुन चुकी हो?"

"अवश्य। मेरा कमरा ठीक इसी के ऊपर है। ऐसी दशा

में यह सभव नहीं कि नीचे कमरे में आवाज हो और मैं न सुनूं। मैं प्राय सुना करती थी।"

"कौन स्त्री हो सकती है वह ?"

"'मैं नही जानती। इस पर मैंने कभी विचार तक नहीं किया।"

उसकी बातो से मैं उसके भावो को समझ गया। फिर मैं सोचने लगा कि यदि मान लिया जाय कि रायबहादुर साहब दो प्रकार का जीवन बिता रहे हैं और उनके जीवन का ढग सदेह के परे नहीं है तो वह स्त्री कौन हो सकती है जो उनके साथ उस कमरे में रहती है? मैंने स्वय देखा था कि वह कमरा एकदम सुन-सान था। यह तो सभव ही नहीं कि वह उसी में रहती हो। फिर वह आती कहाँ से है? घर की तो कोई स्त्री हो ही नहीं सकती। उन पर तो गृहरक्षिका पार्वती की बडा कडी नजर रहती है। अवश्य यह बाहर से ही आती होगी किन्तु कैसे ?

फिर मैं सोचने लगा कि यह मकान बडा पुराना है। सभव इस कमरे से कोई सुरग बाहर गई हो। पुराने समय में राजाओं सरदारों के महलों में बाहर जाने के लिए सुरग होती ही थी। जब कोई सुरग इस कमरे से बाहर जाने की है और उसका मुंह उसी झाड़ी में ढका है। थोड़ी दूर पर कुछ लोगो के मकान भी थे। यह संभव था कि सुरग पास ही की किन्हीं झाड़ियों के बीच खुलती हो। मैं किसी से कुछ नहीं कहा किन्तु मुझे निश्चय हो गया कि रायबहादुर साहब का सारा भेद मेरी मुट्ठी में आ गया है।

ज्यों-ज्यों सुरग की स्थिति के सबध में मेरी धारणा प्रबल होती गई त्यों-त्यों रायबहादुर साहब के वास्तविक चरित्र को छिपा [illegible]

की क्षमता पर मेरा विस्मय भी बढता गया। मैं प्राय रायबहादुर साहब के मुख की गम्भीरता को देखकर विचार करने लगता कि उनका दो प्रकार का जीवन व्यतीत करना सभव नहीं प्रतीत होता। अच्छा हो कि उनके प्रति मेरी इस प्रकार की भावनायें निर्मूल सिद्ध हो। किन्तु वह स्त्री की आवाज और रात्रि में उस कमरे के अन्दर का वह एकान्त मिलन—ये सब मेरी भावनाओ को निर्मूल नही सिद्ध होने दे सकती थीं। मुझे अब वे बडे नीच प्रतीत होने लगे और उनके इस कपटमय जीवन पर मुझे घृणा होने लगी।

इतने दिनो में मुझे एक बार उनका नग्न चरित्र देखने का अवसर मिला। कुछ क्षणो के लिए मैंने उनके अन्तर में छिपी उस ज्वाला का दर्शन किया। अवसर भी यह कोई बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता था क्योंकि इस समय उनका कोप-भाजन बनी थी वही बूढी नौकरानी जो उस कमरे में प्रतिदिन झाड़ू लगाने जाया करती थी। मै बरामदे में से होता हुआ अपने कमरे की ओर जा रहा था कि एकाएक मुझे एक भयातुर चीख सुनाई पड़ी और इसी चीख में विलीन होती सुनाई पडी किसी कामातुर मनुष्य की रूखी गुर्राहट। यह गुर्राहट बडी डरावनी प्रतीत होती थी। फिर, मुझे उसके क्रोधपूर्ण शब्द सुनाई पडने लगे—'तुम साहस करोगी!' उसने आवेश में कहा। "तुम मेरी इच्छाओ की अवहेलना करने का साहस करोगी!" थोड़ी देर बाद वह नौकरानी भागती हुई मेरे सामने से निकली। उसका चेहरा पीला पड गया था, वह कांप रही थी और रायबहादुर साहब का क्रोधपूर्ण गर्जन उसका पीछा कर रहा था—'तुरन्त पार्वती के पास जाकर अपना हिसाब ले लो और देखो, फिर कभी 'रग-महल' में क़दम न

रखना !" कौतूहलवश मैं उसका अनुसरण करने से अपने को रोक नहीं सका और उसको एक कोने में दीवार के सहारे झुकी हुई खड़ी पाया। उसका हृदय एक भयभीत खरगोश की भाँति बड़ी जोर से धक-धक कर रहा था।

"क्या है, रे सुखिया?" मैंने दिलासा देते हुए पूछा।

"मालिक !" उसने हाँफते हुए कहा। "बाप रे ! उसने तो मुझे एकदम डरा दिया था ! प्रकाश बाबू अगर आपने उसकी आँखें देखी होतीं मैं तो, मैं तो भस्म होती जा रही थी !"

"तुमने कौन सा ऐसा अपराध कर डाला था ?"

"अपराध क्या किया था ! कुछ भी नहीं। इतना बिगड़ने का कोई कारण ही नहीं था। मैंने तो केवल उसके काले सन्दूक के ऊपर अपना हाथ रख दिया था—उसे खोला भी नहीं था। यह भीतर घुस आया और फिर जो हुआ वह आप सुन ही चुके हैं। उसने नौकरी से छुड़ा दिया और इसके लिए मुझे दुःख भी नहीं है। अब तो मैं कभी उनके निकट तक न आऊँगी।

अच्छा तो यह काला सन्दूक था जिसके कारण इतना बखेड़ा मचा—वही सन्दूक जिसको वे कभी अपने से दूर नहीं रखते। आखिर उस सन्दूक में है क्या? क्या उसमें और उस स्त्री में कोई सम्बन्ध है जो रात में उनके पास आती है और जिसकी आवाज हमने उस दिन सुन ली थी? रायबहादुर साहब का क्रोध कभी सहनीय तथा कभी विकट भी होता था। फिर दिन में वह [illegible] सुखिया रंग-भरा [illegible] देखने को नहीं मिली।

अच्छा, अब मैं आपको उस विचित्र अवसर को बताना है जिसे

रायबहादुर साहब से सम्बन्ध रखनेवाले सारे अनोखे प्रश्नो को हल कर दिया और उनके सारे भेद मुझे मालूम हो गये। इस कहानी से आप अवश्य द्विविधा में पड जायेंगे कि मैंने कौतूहल के वशीभूत हो अपनी प्रतिष्ठा का खयाल नही किया अथवा मैं इतना नीच हो गया था कि एक भेदिया का काम करता। यदि आप ऐसा सोचें भी तो मैं आपको रोक नही सकता किन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि घटना ठीक इसी प्रकार है यद्यपि यह कुछ अनहोनी-सी प्रतीत होती है।

इस कहानी का परिणाम आरम्भ होता है उस गोल कमरे की छत के गिर जाने से। कमरा पुराना था। उसकी एक कडी में दीमक लग गई थी। एक दिन एकाएक छत का थोडा-सा मलवा लेकर कडी टूट पडी। कमरे का सारा सामान मलवे से ढँक गया। अच्छा यही हुआ कि उस समय रायबहादुर साहब उस कमरे में नहीं थे। उनका काला सन्दूक भी उसी में दब गया था। मलवा साफ किया गया और वह सन्दूक उसमें से निकालकर लाइब्रेरी में एक सुरक्षित स्थान पर रक्खा गया। रायबहादुर साहब ने उस कमरे की मरम्मत करवाने का कोई विचार नहीं किया और न मैंने ही उस सुरग का पता लगाने की कोई चेष्टा की। उस स्त्री के विषय में मैंने यह सोच लिया था कि कमरे की छत के गिर जाने से अब उनके पास नहीं आती किन्तु एक दिन मैंने बाबू गयाप्रसाद जी को पार्वती से यह कहते हुए सुना कि उन्होने किसी औरत को राय-बहादुर साहब से लाइब्रेरी में बात-चीत करते सुना था। बाबू गया-प्रसाद पार्वती से उस स्त्री के विषय में पूछ रहे थे। मैं उसके उत्तर

को तो सुन नहीं सका किन्तु उसके मनोभावों से यह स्पष्ट था कि यह प्रश्न उसके लिए नया नहीं था अथवा उसका कुछ भी उत्तर वह नहीं देना चाहती थी।

तुमने यह आवाज सुनी है, केशव बाबू ?" बाबू गयाप्रसाद ने पूछा।

मैंने सम्मति सूचकभाव से सिर हिला दिया।

"इस विषय में आपकी क्या राय है?"

मैंने विरक्ति सूचित करने के लिए अपने कंधों को हिलाते हुए उत्तर दिया कि इससे मुझे कोई वास्ता नहीं है।

"अच्छा आओ! यहाँ आओ! मैं समझ गया कि तुम भी हम लोगों से कुछ कम उत्सुक यह जानने के लिए नहीं हो कि वह किसी स्त्री की आवाज है कि नहीं?"

"वास्तव में वह स्त्री ही की आवाज है।

"तुमने किस कमरे में सुना था?"

"छत गिरने के पहिले गोल कमरे में।"

"लेकिन मैंने तो कल सन्ध्या को लाइब्रेरी में सुना। मैं उस कमरे के दरवाजे के सामने से अपने कमरे में सोने के लिए जा रहा था कि किसी स्त्री की एक क्षीण, दयनीय आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ी। स्व-तः यह कोई औरत ही थी।"

क्या और किसी की आवाज हो सकती है?"

उसने मुझसे यों प्रश्न से पूछा।

दुनिया में कितनी चीजें हैं, उसने कहा। "अगर यह कोई स्त्री है तो वह कहाँ रहती है?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"और न मैं। किन्तु यदि यह कोई दूसरी चीज है—जिसके सम्बन्ध में इस बीसवी शताब्दी के आरम्भ में सदेह करना कुछ असगत तथा हास्यास्पद प्रतीत होता है।" वह चल पडा लेकिन मैंने अनुभव किया कि वह कुछ कहने की अपेक्षा सोच अधिक रहा था। 'रग-भवन' से सम्बन्ध रखनेवाली भूतो की कहानियो में, हम लोगो के सामने ही, एक कहानी और जोडी जा रही थी। यह कहानी भी अपना चिरस्थायी स्थान वहाँ पा गई होती लेकिन एकाएक मुझको उस रहस्य का पता चल गया। दूसरे लोग अवश्य अब तक उसको नही जान सके।

उस रहस्य का भेद इस प्रकार मालूम हुआ। मुझे रात भर नींद नही आई थी। कारण, मेरी नसो में तीव्र पीडा हो रही थी। पीड़ा को दूर करने के लिए दोपहर को मैंने एक नशीली ओषधि खा ली थी। उस समय मैं रायबहादुर साहब की लाइब्रेरी की किताबो की सूची समाप्त कर रहा था। लाइब्रेरी में मैं प्रतिदिन पाँच बजे से सात बजे तक काम किया करता था। यहाँ मैं काम करने के लिए बैठा किन्तु कुछ कर नहीं सका। क्योंकि नशीली ओषधि और पीड़ा से मुझे बराबर द्वद्व करना पड रहा था। मैंने काम बन्द कर दिया और वहीं लेट गया। थोडी देर में मुझे गहरी नींद आ गई।

मैं कब तक सोता रहा इसका मुझे कुछ पता नहीं, लेकिन जब मैं जगा तो काफी रात हो गई थी। ओषधि के नशीले प्रभाव से कुछ घबडाया हुआ मैं चुप-चाप बहुत देर तक पडा रहा। लाइब्रेरी अन्धकार के परदे से ढँक गई थी। एक खिडकी से कुछ कुछ चाँदनी का प्रकाश आ रहा था। उसी प्रकाश में मैंने देखा कि रायबहादुर साहब अपने

जगह पर बैठे थे। उनकी परछाईं भी उनके पीछे साफ दिखाई पड़ रही थी। मैंने उनको झुकते हुए देखा, फिर कुंजी के घुमाने की आवाज सुनाई पडी और किसी धातु की बनी हुई चीजों की रगड़। अर्धनिद्रित अवस्था में, जैसा कि मैं था मुझे मालूम पडा कि वह काला सन्दूक ही था। उसमें से इन्होंने कोई चीज निकालकर मेज पर अपने सामने रक्खा। वह एक भद्दी-सी चौकोर वस्तु थी। मुझे इसका लेशमात्र ध्यान नहीं हुआ कि मैं रायबहादुर साहब के एकान्तवास में बाधक हो रहा था। वे उस समय अपने को उस स्थान पर अकेला ही समझ रहे थे। इस विचार के आते ही, ज्यों ही मैं अपनी उपस्थिति का पता उनको देने जा रहा था कि सहसा मुझे एक विचित्र, चुर-चुर शब्द सुनाई पड़ा और फिर एक कोमल, स्पष्ट किन्तु दयनीय आवाज।

हाँ, वह किसी औरत ही की आवाज थी। इसके विषय में तनिक भी सन्देह की गुञ्जाइश नहीं थी। यह आवाज व्याकुल प्रेम और हार्दिक भावना से इतना सराबोर थी कि अब तक मेरे कानों में गूंज रही है। आवाज कुछ विचित्र ढग की और कुछ दूर से आती हुई जान पड़ती थी किन्तु थी बहुत ही स्पष्ट। धीमी अवश्य वह इतनी थी कि मृत्यु-कालीन आवाज-सी प्रतीत होती थी।

"वास्तव में मैं मरा नहीं हूँ, स्वामी," धीमी और भर्राई हुई आवाज आ रही थी। "मैं तुम्हारे बगल ही में हूँ और उस समय तक रहूँगी जब तक हम दोनों फिर न मिल जायेंगे। यह जानकर कि मृत्यु-समय फिर तुम मेरे शब्द सुनोगे, मरते समय मुझे प्रसन्नता है। हे स्वामी! जब तक तुम [illegible] फिर नहीं मिलते, निर्बलता को निकट न आने दीजियेगा, साहस और धीरज से काम लीजियेगा!"

इन शब्दो को सुनते ही मै फिर लेट गया। उस समय मेरी दशा बडी विचित्र थी। न तो मै लेट ही सका और न बैठ ही। लेटने और बैठने मे लकवा-सा मारा हुआ मै विस्मय से उसकी दयनीय शब्दो मे की जाती हुई प्रार्थना को सुन रहा था। और वे—रायबहादुर साहब—वे तो इतना तन्मय थे सुनने मे कि यदि मै खडा होकर अपनी उपस्थिति की सूचना भी देता तो वे न सुन सकते। आवाज के बन्द होते ही मै कुछ भयभीत-सा अर्ध-स्पष्ट शब्दो मे अपनी उपस्थिति का कारण बताकर उसके लिए क्षमा-याचना करने लगा। रायबहादुर साहब सहसा चौंक पडे और उन्होने लैम्प की बत्ती तेज कर दी। उस समय वे मुझे बडे भयानक प्रतीत हो रहे थे। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं, और चेहरा एक दम भर्राया हुआ था। उस समय वे मुझे वैसे ही प्रतीत हुए जैसे कुछ दिन पहले वे मजदूरिन सुखिया को मालूम पडे थे।

"केशव बाबू!" आवेश मे उन्होने ने कहा। "आप यहाँ कैसे? क्या अर्थ है इसका, जनाब?"

काँपते हुए स्वर मे एक-एककर मैने अपनी बीमारी, नशीली दवा, नींद का आ जाना और फिर एकाएक जाग जाना सभी बातें साफ-साफ बतला दीं। इसको सुनकर उनका क्रोध कुछ कम हुआ और उनके मुख पर वही गम्भीरता फिर आ गई।

"मेरे भेद को अपना जानिए, केशव बाबू," उन्होने कहा। "दोष मेरा ही है कि मैने सतर्कता मे कुछ ढिलाई कर दी। अर्ध-विश्वास अविश्वास से दुखदायी होता है अत जब आप इतना जान गये है तो आपको सारी बातें जान लेना ही अच्छा है। मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी कहानी पु.

साथ-साथ जहाँ कहीं तुम जावोगे, जायगी। किन्तु मेरे जीवन तक मुझे विश्वास है कि तुम इसको गुप्त रक्खोगे, किसी से भी न कहोगे। मुझे इस बात का घमड है, ईश्वर की कृपा से, कि इस कहानी के कारण लोगो के हृदय में मेरे प्रति एक प्रकार की जिस सहानुभूति का उदय होगा उसका मैं विरोध कर सकता हूँ। मैंने ईर्ष्या पर हँसा है और घृणा की चिन्ता नही की है किन्तु सहानुभूति—यह मैं नहीं सहन कर सकता।

"तुम्हें यह तो मालूम ही हो गया है कि वह आवाज कहाँ से आती है। जहाँ तक मैं समझ सका हूँ इस आवाज ने हमारे घर के आदमियो के दिलो में बडा कौतूहल और उत्सुकता उत्पन्न कर दिया है। मैं उन अफवाहो से भी परिचित हूँ जो कि इसके कारण पैदा हो गई हैं। ये अफवाहें चाहे मिथ्या विश्वासी हो अथवा लज्जाकर मैं उनकी लेशमात्र चिन्ता नहीं करता। मैं यह कभी सहन नहीं कर सकता कि कोई अपनी उत्सुकता और कौतूहल दूर करने के लिए चोरी से मेरी बातो के सुनने की चेष्टा करे अथवा मेरी निगरानी करे। किन्तु उनके लिए भी, केशव बाबू मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।

"अपनी चढ़ती जवानी में जब मेरी अवस्था तुमसे कम ही रही होगी मुझे बनारस में अकेला रहना पड़ा। मैं था तो अकेला किन्तु रुपया मेरे पास काफी था। फिर क्या? मुझे मित्रों की कमी नहीं थी। चारो तरफ से मित्र मेरे पास एकत्र होने लगे। उन मित्रों की कृपा और रुपये की सहायता से मैंने जीवन का [illegible] [illegible] उठाया। मेरे समान कोई भी पियक्कड़ नहीं था। मेरे धन की हानि हुई, मेरा चरित्र नष्ट हुआ, स्वास्थ्य बिगड़

हुआ और मुझे उत्तेजक ओषधि की आवश्यकता पड़ने लगी। मेरा जीवन इतना पतित हो गया था कि उसकी स्मृति-मात्र से मैं कांप उठता हूँ। इसी समय जब कि मेरा पतन पराकाष्ठा को पहुँच चुका था मेरा विवाह हुआ। मेरी पत्नी एक देवी के रूप में मेरे उद्धार के लिए मेरे पास आई। वह मुझे बहुत प्यार करती थी। पतन तो मेरा हो ही चुका था फिर भी वह मुझे बहुत चाहती थी और उसने अपना सारा जीवन मेरे सुधार में नष्ट कर दिया—मुझे एक बार पशुत्व से ऊँचा उठाकर मनुष्य बनाने में।

"किन्तु एक घातक बीमारी ने उसको मुझसे दूर कर दिया। मैं उसे नहीं बचा सका। मरते समय भी, उस दारुण दुःख के समय भी उसको अपनी लेशमात्र चिन्ता न थी। वह मेरे ही लिए दुःखी थी। उसको इसका बड़ा दुःख था कि उसके प्रभाव से वंचित होते ही मैं फिर पतन के गड्ढे में कहीं न गिर जाऊँ। शराब न पीने की मेरी प्रतिज्ञा से भी उसे कुछ संतोष न हुआ। वह अच्छी तरह जानती थी कि राक्षसरूपी मदिरा का प्रभाव मेरे ऊपर बहुत अधिक था और उसी को दूर करने में उसने अपना जीवन बिता दिया था। यही चिन्ता रात-दिन उसे सता रही थी कि कहीं मेरी आत्मा पर उसका अधिकार फिर न हो जाय।

"एक दिन उसी के कमरे में—रोगी के पास ही, बातचीत में कुछ मित्रो ने फोनोग्राफ की चर्चा छेड़ दी। रेकार्ड बनाने की क्रिया पर बातचीत होने लगी और उसको यह मालूम हो गया कि कलकत्ता और बम्बई में रेकार्ड बनाये जाते है। मित्रो के चले जाने पर उसने मुझसे ज़िद की कि चाहे जितना धन व्यय करना पड़े

रेकार्ड बनानेवाले अपने आवश्यक मशीन के साथ बुलाये जायें। उसकी जिद को मैं नही रोक सका और तुरन्त मैं स्वयं कलकत्ता जाकर वहाँ से रेकार्ड बनानेवालो को उनके मशीन के साथ बहुत अधिक धन खर्च करके लिवा लाया। उसने अपने काँपते हुए दयनीय शब्दो को एक रेकार्ड में भर दिया। इन्हीं शब्दो ने मुझको अभी तक अपने मार्ग से विचलित नहीं होने दिया है। दुखी तथा एकाकी मेरे लिए संसार में अब रह ही क्या गया है? केवल ये शब्द ही मेरे लिए सब कुछ हैं। यदि ईश्वर मेरे ऊपर कृपा करता है और उससे मुझे मिला देता है तो प्रसन्नता से, बिना किसी हिचक के मैं उसके सामने खड़ा हो जाऊँगा। यही मेरा रहस्य है जिसको मैं अपने जीवन तक के लिए कैलाश बाबू आपको सौंपता हूँ।"

स्पेशल खो गई

सुधीर फांसी का अपराधी है । वह बर्दवान जेल में रक्खा गया है। उसका अपराध-स्वीकार शताब्दी के एक बडे भयानक अपराध पर प्रकाश डालता है। ऐसा बडा अपराध शायद अपराधो के इतिहास में किसी भी देश में न पाया जा सके। यद्यपि अफसरो में इसकी कोई चर्चा नहीं है और न समाचारपत्रो में कोई सूचना, फिर भी इस भयानक अपराधी का बयान घटनाओ से इतना पुष्ट होता है कि उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नही रह जाता। घटना लगभग आठ साल पुरानी है। उस समय जनता का ध्यान राजनैतिक आन्दोलन की ओर था; इसलिए इस घटना के महत्त्व पर किसी ने विशेष ध्यान नही दिया। महमूद नामक ड्राइवर की मृत्यु पर किये गये अनुसधान तथा ई० आई० आर० के कागजो को देखने से घटना के विषय में जो कुछ ज्ञात हो सका है, वह इस प्रकार है—

३ जून १९०५ ई० को एक सज्जन जिनका नाम सुरेशचन्द्र था मोग़लसराय स्टेशन के सुपरिटेंडेंट मिस्टर रामप्रसाद से मिलने आये। ये अधेड और नाटे कद के आदमी थे। कमर कुछ झुक गई थी। इनके साथ एक और व्यक्ति था। वह बहुत सुन्दर था। उसके व्यवहार से प्रतीत होता था कि वह सुरेश बाबू का नौकर था। उसका नाम नहीं ज्ञात हो सका। उसके हाथ में चमडे का एक बेग था। यह बेग एक बारीक फीते से उसकी कलाई से बँधा भी था। इस बन्धन को स्टेशन के एक बाबू को छोड़कर और अन्य किसी ने भी नहीं देखा। उस समय

उसका कलाई से बँधा रहना एक साधारण-सी बात थी किन्तु पीछे
घटनाओं ने इसका महत्त्व बहुत बढ़ा दिया। सुरेश बाबू राम
जी से मिलने के लिए उनके दफ्तर में गये किन्तु उनका वह
बाहर ही रहा।

सुरेश बाबू का काम शीघ्र ही पूरा हो गया। वह उसी
प्रातःकाल बम्बई से यहाँ आये थे और एक आवश्यक कार्य के का
उनका अविलम्ब कलकत्ता पहुँचना बहुत आवश्यक था। उनके सा
प्रश्न था समय का, धन का नहीं। यदि रेलवे कम्पनी उनको शीघ्राति
शीघ्र कलकत्ता पहुँचा सकी तो मुँहमाँगा धन दिया जायगा।

रामप्रसाद बाबू ने ट्राफिक मैनेजर मिस्टर ज्ञानचन्द्र को बुला
सुरेश बाबू को शीघ्र कलकत्ता पहुँचाने का सारा प्रबन्ध पाँच मिनट
कर दिया। पैंतालीस मिनट पश्चात् स्पेशल गाडी उनको लेकर रवा
होगी। इस बीच में सारी लाइन को एक दम साफ रखने का प्रब
कर दिया गया। स्पेशल तैयार हुई। उसमें कुल तीन डिब्बे थे—
सवारी के और एक गार्डवान। एक डिब्बा तो केवल गाडी के क
को कम करने के लिए जोड़ा गया था। इंजिन बहुत शक्तिशाली
यात्रीवाला डिब्बा दो भागों में बँटा था। इंजन की ओर पहला द
था और उसके पीछे दूसरा। पहला दर्जा ही यात्रियों के लिए
और सब खाली थे। इस स्पेशल के साथ जो गार्ड नियुक्त किया ग
उसका नाम था [illegible]। वह रेलवे में बहुत दिनों से काम कर
रहा था। स्टोकर* नया था और उसका नाम था [illegible]।

[illegible]

सुरेश बाबू सुपरिंटेंडेंट के दफ्तर से निकलकर अपने साथी के पास ाये। उनके चेहरे से व्यग्रता टपक रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि लकत्ता पहुँचने के लिए वे बहुत ही व्याकुल हैं। दस रुपये प्रतिमील ी दर से लगभग पाँच हजार रुपये किराया चुका देने के पश्चात् उन्होंने पनी स्पेशल गाडी का पता पूछा और तुरन्त उसमें जा बैठे। यद्यपि नको मालूम था कि उसके छूटने में अभी देर है किन्तु बाहर रहना न्हें असह्य हो रहा था।

इसी समय एक और बात हुई। दीनदयाल नाम के एक सज्जन ने ी एक स्पेशल गाड़ी के लिए सुपरिंटेंडेंट से अनुरोध किया। काशी से तीर्थ-स्थानों में नित्य ही हजारों अमीर-गरीब गंगा-स्नान और वश्वनाथ जी के दर्शन के लिए आया ही करते हैं और कभी-कभी तो तनी भीड हो जाती है कि यात्रियो को गाडियों में बैठने की जगह बलकुल नहीं रह जाती। धनी मानी यात्री राजे-महाराजे मोगलसराय ी प्रायः स्पेशल का प्रबध करा लिया करते हैं। मोगलसराय ई० आई० लवे का बहुत बडा जंकशन है और काशी से केवल चार-पाँच मील र है। काशी और मुगलसराय के बीच रेलगाड़ियो के अलावा ौर भी बहुत-सी सवारियाँ दौड़ा करती हैं। आये दिन प्राय: स्पेशल ाडियाँ यहाँ से रवाना होती ही रहती हैं लेकिन एक ही समय में दो ो स्पेशल गाडियो की आवश्यकता एक असाधारण बात थी। दीन- याल एक हट्टे-कट्टे फौजी आदमी सरीखे दीख पडते थे। वे अपने ो चन्द्रनगर राज्य का दीवान बताते थे। उनकी पत्नी चन्द्र- गर में एकाएक बहुत बीमार हो गई थीं और उनका शीघ्रातिशीघ्र हाँ पहुँचना अत्यन्त आवश्यक था। उनकी परेशानी को देखते हुए

रामप्रसाद बाबू ने उनकी सहायता के लिए भरसक प्रयत्न किया स्पेशल का प्रबन्ध होना तो असम्भव था। पहली ही स्पेशल के कारण सवारी गाडी के समय में बहुत कुछ उलट फेर कर दिया गया था। केवल एक ही उपाय था कि दीनदयाल बाबू सुरेश बाबू के किराये में हाथ बटावें और उसी गाडी के दूसरे खाली डिब्बे में यात्रा करें, यदि सुरेश बाबू को उनको अपने साथ बैठाने में कोई आपत्ति न हो। बात बिलकुल सीधी सादी थी और इस तरह के प्रबन्ध से सुरेश बाबू की कोई हानि भी नहीं थी किन्तु जब यह प्रस्ताव उनसे किया गया तब सुरेश बाबू ने एक दम अस्वीकार कर दिया। उन्होंने साफ साफ कह दिया कि स्पेशल मेरी है और मैं इसमें दूसरे किसी को न बैठने दूंगा। उनको राजी कर लेने का सारा प्रयत्न विफल हो गया और अन्त में यही निश्चित हुआ कि दीनदयाल जी साधारण सवारी गाडी से यात्रा करें इसके अतिरिक्त और दूसरी कोई गाडी नहीं थी। सवारी गाडी मोगलसराय से १ बजे दिन को छूटती थी अतः वे बेचारे स्टेशन के बाहर चले गये। स्पेशल ठीक ७ बजकर ५१ मिनट पर अपने यात्रियों को लेकर मोगलसराय से रवाना हुई। लाइन उस समय एकदम साफ थी और उसको मार्ग में केवल पटना, क्यूल और आसनसोल में कोयलापानी के लिए रुकना था। स्पेशल गाडी को कलकत्ता ६ बजे सन्ध्या के पहले ही पहुँच जाना था।

लगभग सवा ८ बजे हवड़ा से मोगलसराय तार पहुँचा कि स्पेशल अभी यहाँ नहीं पहुँची। इस समाचार ने वहाँ के स्टेशन-अधिकारियों में बड़ी खलबली मचा दी। पटना से पूछ-ताछ करने पर यह सूचना मिली—

"बाबू रामप्रसाद, सुपरिंटेंडेंट ई० आई० रेलवे, मोगलसराय—स्पेशल यहाँ से ठीक समय पर ९ बजकर ३१ मिनट पर छूटी—भगवती नारायनसिंह पटना"

यह तार ६ बजकर ४० मिनट पर मोगलसराय पहुँचा। ६ बजकर ५० मिनट पर हवडा से दूसरा तार आया।

"आपके आदेशानुसार स्पेशल अभी तक यहाँ नही पहुँची।"

दस मिनट पश्चात् तीसरा तार पहुँचा।

"सवारी गाडी जो स्पेशल के पीछे छूटनेवाली थी यहाँ पहुँच गई। मार्ग में उसको कुछ भी नहीं मिला। जान पड़ता है स्पेशल के छूटने में कोई गडबडी हुई है। कृपया बताइए क्या किया जावे—हवडा।"

यद्यपि इस अन्तिम तार ने मोगलसराय के स्टेशन-अधिकारियो की बेचैनी को कुछ कम कर दिया किन्तु मामले का रूप कुछ बदलता-सा जान पडने लगा। अगर स्पेशल किसी दुर्घटना का शिकार हुई होती तो यह असम्भव था कि सवारी गाडी बिना उसको देखे ही उसी लाइन पर आगे निकल जाती। दूसरा और क्या हो सकता है? आखिर वह स्पेशल गई कहाँ? यह भी सभव है कि किन्ही कारणों से सवारी-गाडी को आगे निकल जाने के लिए वह दूसरी पटरी पर चली गई हो? और यह तभी सभव है जब उसमें कुछ गडबडी हुई हो और उसकी मरम्मत बहुत ही आवश्यक हो। थोड़ी देर सोचने विचारने के पश्चात् पटना और हवड़ा के बीच के स्टेशनो को तार भेजकर स्पेशल के विषय में पूछ-ताछ की गई। उन स्टेशनो से इस प्रकार उत्तर मिले—

"स्पेशल यहाँ से २१ बजकर २५ पर छूटी—क्यूल"

"स्पेशल यहाँ से १ बजकर ४० पर छूटी—आसनसोल"

"स्पेशल यहाँ नहीं आई—बर्दवान"

दोनो अफसर अचम्भे से एक दूसरे को देखने लगे।

"मेरी तीस साल की नौकरी में ऐसी घटना तो कभी नहीं हुई" मिस्टर रामप्रसाद ने कहा।

"एकदम अभूतपूर्व। कुछ समझ में नहीं आता। स्पेशल अ ओण्डेल और बर्दवान के बीच कहीं रुकी पड़ी है।"

"मेरी समझ में तो इन दो स्टेशनो के बीच कहीं साइड भी नहीं है। मालूम पड़ता है कि वह पटरी पर से उ गई है।"

"किन्तु सवारी गाड़ी बिना उसे देखे आगे कैसे निकल गई"

"और कुछ नहीं हो सकता मिस्टर ज्ञानचन्द्र। हो सकता है सवारी गाड़ी को मार्ग में कोई ऐसी वस्तु मिली हो जिससे इ पर प्रकाश पड़ सके। हम अभी हवड़ा से पूछते हैं और साथ ओण्डेल को आदेश करते हैं कि बर्दवान तक लाइन भली-भाँति की जाय।"

थोड़ी देर बाद हवड़ा से यह तार आया—

'स्पेशल का कुछ पता नहीं है। सवारी गाड़ी के गार्ड और ड्रा को विश्वास है कि ओण्डेल और बर्दवान के बीच स्पेशल के साथ दुर्घटना नहीं हुई। लाइन बिल्कुल साफ है—हवड़ा।"

[illegible]

"उस ड्राइवर और गार्ड को नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा," मिस्टर रामप्रसाद ने दाँत पीसते हुए कहा। "स्पेशल पटरी से गिरकर चकनाचूर हो गई है और इन लोगो ने कुछ देखा ही नहीं। साफ मालूम हो रहा है कि गाडी, बिना लाइन को कुछ हानि पहुँचाये ही पटरी पर से उतर गई हैं। मैं खूब समझ रहा हूँ। जरूर ऐसा ही हुआ है। देखिए, अभी ओण्डेल अथवा वर्दवान से इस आशय का तार आता है कि स्पेशल लाइन के बाँध के नीचे गिरी हुई मिली।"

मिस्टर रामप्रसाद का अनुमान असत्य निकला। आध घटे बाद ओण्डेल के स्टेशनमास्टर का यह तार आया—

"स्पेशल का कुछ पता नही चलता। यह तो निश्चित है कि वह यहाँ से आगे गई किन्तु वर्दवान नही पहुँची। मैं स्वय मालगाड़ी का इंजन लेकर वर्दवान तक की सारी लाइन देख आया किन्तु कुछ भी पता नही चला। लाइन बिलकुल साफ है। किसी प्रकार की दुर्घटना का चिह्न कही नही पाया गया।"

रामप्रसाद बाबू बेचैनी से सिर के बाल नोचने लगे

"यह परले दर्जे का पागलपन है मिस्टर ज्ञानचन्द," रामप्रसाद बाबू ने कहा "क्या दिन दहाडे स्पेशल ऐसी चीज लोप हो सकती है? यह तो अत्यन्त असगत प्रतीत होता है। एक इजन, दो डिब्बे, एक गार्डवान और पाँच आदमी—सबके सब सीधी रेल की पटरी पर से गायब! यदि एक घटे के भीतर स्पेशल का कुछ पता न चला तो मैं स्वय इस्पेक्टर विपिनचन्द्र को लेकर उसका पता लगाने निकलूँगा।"

इसी बीच ओण्डेल से यह समाचार आया—

"शोक, स्पेशल के ड्राइवर महमूद का शव थोडी देर हुए म
से लगभग ढाई मील दूर कँटीली झाडियो में मिला है। वह इ
से लाइन पर गिरा और लुढकता हुआ झाडियों में चला गया
उसके सिर में गहरी चोट है जो उसकी मृत्यु का कारण है। ब
छान-बीन की गई किन्तु स्पेशल का कोई पता नहीं।"

यह पहले ही कहा जा चुका है कि देश में राजनैतिक आन्दो
का जोर था—विशेषकर बगाल में। वहाँ की जनता राज-सत्ता
एकदम नष्ट कर डालने पर उतारू हो गई थी। बगाल के अ
बडे-बडे आदमियों की प्रतिष्ठा पर पानी पडनेवाला था। समाच
पत्रो के कालम इन्ही समाचारों से भरे रहते थे। स्पेशल के ल
हो जाने की खबर कौन पूछता! शान्ति का समय होता तो
समाचार सबसे महत्त्वपूर्ण समझा जाता। सपादको को भी
समाचार की सत्यता में सदेह था। कलकत्ते के बहुत-से समाच
पत्र इसको केवल चतुराईपूर्ण परिहास समझते थे। जनता को
उस समय इसकी वास्तविकता में कुछ-कुछ विश्वास हुआ जब अ
ड्राइवर महमूद की मृत्यु के कारण की खोज आरम्भ हुई।

रामप्रसाद बाबू रेलवे के जासूसी-विभाग के मुख्य अफसर
विपिनचन्द्र को लेकर उसी समय [illegible] रवाना हुए। वे लोग कुछ
दिन सन्ध्या तक बराबर खोज करते रहे, किन्तु सब व्यर्थ। स्पेशल
का पता लगाने की कोशिश हुई, किन्तु ऐसी बात तक का पता
न चल सका, जिसके आधार पर खोज का काम आगे जारी रखा
जाता। मिस्टर विपिनचन्द्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि दुर्घटना कहीं
[illegible] के [illegible] की। जिसके कुछ प्रमाण हैं—

"ओण्डेल और वर्दवान स्टेशनो के बीच रेलवे लाइन के आस-पास बहुत-सी लोहे तथा कोयले की खानें है। इन खानो में जो लाइनें गई है, वे मेन-लाइन से जगह-जगह पर मिली हुई हैं। अधिकाश खानो का काम वन्द है और दुर्घटना के भय से कुछ की लाइनें भी मेन-लाइन से काट दी गई है। केवल तीन लाइनें बिलकुल ठीक हैं।

"इन तीनो में से एक का नाम डुमरिया लाइन है। इसकी लबाई केवल चौथाई मील के लगभग है। डुमरिया खान का काम बड़े जोरो से चल रहा है, जिससे इस लाइन पर बराबर माल-गाडियाँ चलती रहती हैं। अत. यहाँ स्पेशल नहीं जा सकती। दूसरी लाइन गनेशगज लोहे की खान को गई है। यह पहली की अपेक्षा कुछ अधिक लम्बी है। इसकी पटरियाँ एकहरी है। यह लाइन भी हमारे लिए बेकार है क्योकि घटना के दिन इस पर कच्चे लोहो से भरी एक माल-गाडी खडी थी। अत. यहाँ कोई दुर्घटना सम्भव नहीं थी। तीसरी लाइन साहबगंज कोयलरी को मेन-लाइन से मिलाती है। इसकी पटरियाँ दोहरी है किन्तु घटना के दिन इस पर सैकड़ो मजदूर काम कर रहे थे। इसलिए, अगर कोई दुर्घटना हुई होती तो मजदूरो से उसका पता चल जाता। दूसरी बात यह है कि यह लाइन वर्दवान के निकट है और जहाँ पर ड्राइवर का शव मिला है, वह स्थान यहाँ से बहुत दूर है। ऐसी दशा में यही सम्भव जान पड़ता है कि दुर्घटना कहीं इनके पीछे ही हुई है।

"महमूद की चोटों को देखने से भी किसी विशेष बात का पता नहीं चलता। हम केवल इतना ही कह सकते है कि उसकी मृत्यु

इंजन से गिर जाने के कारण हुई। वह क्यों गिरा और फिर स्पेशल का क्या हुआ, हम कुछ नहीं कह सकते।"

कलकत्ते के समाचार-पत्रों ने इस रिपोर्ट की बड़ी कड़ी आलोचनायें कीं और जासूसी अफसर विपिनचन्द्र को एकदम अयोग्य ठहराया। वह इस आलोचना से इतना भयभीत हुआ कि उसकी समझ में ही न आया कि वह क्या करे। अन्त में उसने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया।

पुलिस तथा रेलवे कर्मचारी लगभग एक मास तक तहकीकात करते रहे किन्तु कुछ फल न निकला। इनाम की घोषणा की गई, लोगों को विश्वास दिलाया गया कि यदि किसी ने स्पेशल को गायब करने का अपराध किया है तो उसका अपराध क्षमा कर दिया जायगा, किन्तु सारे प्रलोभन बेकार गये! लोग प्रतिदिन स्पेशल का पता लग जाने की खबर जानने के लिए उतावले होकर अखबारों के पन्ने उलटते, किन्तु कुछ भी न मिलता। दिन पर दिन बीतते गये किन्तु इस अद्भुत रहस्य का कुछ भी पता न चला। दिन दहाड़े रेलवे लाइन पर से स्पेशल का लोप हो जाना ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी रसायन-शास्त्री ने उसको गैस में परिणत कर दिया हो। समाचार-पत्रों में इस विषय पर तरह-तरह की खबरें छपती थीं। कुछ लोग इस घटना का कारण दैवी-शक्ति समझते थे, कुछ इसका उत्तरदायित्व ड्राइवर पर, और कुछ उसके साथी पर डालते थे। लेकिन स्पेशल किस प्रकार गायब हुई, इस पर कुछ भी प्रकाश न पड़ सका।

समाचार-पत्रों [illegible] किये गये [illegible] [illegible] नहीं [illegible]।

'दी टाइम' नामक पत्र में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया था—

"यह व्यावहारिक तर्क का प्रारम्भिक नियम है कि यदि किसी घटना के कारणो में से असभवता को अलग कर दिया जाय तो शेष में सत्यता का अश अवश्य मिलेगा। यह सत्य है कि स्पेशल आसनसोल से आगे चली और यह भी सत्य ही है कि वह ओण्डेल नहीं पहुँच सकी। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि वह, सम्भव है खानो को जानेवाली किसी लाइन पर चली गई हो। प्रत्यक्ष रूप से यह असम्भव है कि स्पेशल बिना लाइन के कही दूसरी जगह चली गई हो। अत: हमको केवल उन्हीं तीनो लाइनो पर विचार करना चाहिए जिन पर कि स्पेशल का चला जाना सम्भव हो सकता है। ऐसा तो नहीं है कि खानो में काम करनेवाले मजदूरो की ऐसी कोई गुप्त सभा है जो कि स्पेशल को गायब कर देने में समर्थ हुई हो? यद्यपि इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता किन्तु यह सम्भव तो हो ही सकता है। इससे अधिक सकेत देने में मैं असमर्थ हूँ। मैं तो सलाह दूंगा कि उन्ही तीनो लाइनो की कड़ी जाँच की जाय और उन पर काम करनेवालो से पूछ-ताछ हो। प्रान्त भर के बधक रखनेवाली दूकानो की भी तलाशियाँ की जायें। सम्भव है किसी ऐसी बात का पता लग जाय, जिससे कि इस घटना पर किसी प्रकार का प्रकाश पडे।"

उपर्युक्त वक्तव्य एक ऐसे सज्जन का था जिसकी प्रतिष्ठा जनता में काफी थी। इस विषय के वे अधिकारी भी समझे जाते थे। अतः जनता ने इनके वक्तव्य को बड़े ध्यान से पढ़ा और उसका

आदर किया। कुछ लोग ऐसे भी थे, जिन्होंने इसका घोर विरोध किया। ऐसे लोगों का कहना था कि यह वक्तव्य केवल रेलवे कर्मचारियों को अपमानित करने तथा उनको अयोग्य ठहराने के लिए प्रकाशित कराया गया है। इसका उत्तर विरोधियों के लिए केवल यही था कि वे कोई ऐसा संकेत दें जिससे कि घटना के रहस्योद्घाटन में सहायता मिलती।

इसका प्रतिवाद ७ तथा ९ जुलाई के 'टाइम' में दो विभिन्न व्यक्तियों ने प्रकाशित कराया। एक सज्जन का कथन था कि स्पेशल अवश्य पटरी से उतर गई है और वह उन नहरों में कहीं डूबी पड़ी होगी जिनसे खानों का पानी बहा करता है। उन दिनों ये नहरें सैकड़ों गज तक लाइन के समानान्तर बहा करती थीं। इस विचार से कोई सहमत नहीं था; क्योंकि नहरें इतनी गहरी नहीं थीं कि समूची स्पेशल उसमें डूब जाय और बिल्कुल दिखाई न पड़े। दूसरे व्यक्ति ने जनता का ध्यान उस बैग की ओर आकर्षित किया था जो सुरेश बाबू के साथी के पास था। उनके विचार से उसमें अवश्य कोई भीषण विस्फोटक पदार्थ था और उसी से स्पेशल उड़ा दी गई होगी। यह बात भी विश्वास के योग्य नहीं थी। यह सम्भव नहीं कि समूची स्पेशल की धज्जियाँ उड़ जायँ और रेल की पटरियों को कोई हानि न पहुँचे। इसी बीच एक ऐसी बात हुई जिसका किसी को अनुमान भी नहीं हो सकता था।

बात [illegible] गई थी—स्पेशल के [illegible] की [illegible] की [illegible] जुलाई का [illegible] । [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] कहाँ जा रहा था। [illegible]

था कि यह पत्र राममनोहर बाबू का लिखा हुआ नहीं था, किन्तु उनकी पत्नी को विश्वास था कि यह उन्ही का था। विश्वास करने का एक और भी कारण था। उस पत्र के साथ ५) वाले २० नोट भी थे। इससे स्पष्ट था कि दूसरा ऐसा क्यों करता? पत्र में उनका कोई पता नहीं था। पत्र यह है:—

"प्रिय....

बहुत-कुछ सोचने-विचारने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मैं तुम लोगो का वियोग सहन नहीं कर सकता। मैं सौ रुपये तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। इतना धन तुम्हारे और कमला के यहाँ आने के लिए यथेष्ट है। यदि तुम यहाँ आकर ताजमहल होटल में ठहर जाओ तो मैं आगे तुम्हें बतलाऊँगा कि मैं किस तरह तुम लोगो से मिल सकता हूँ। आज-कल मैं बडी कठिनाई में हूँ। जब यह सोचता हूँ कि मुझे तुम लोगो को छोड़ देना पड़ेगा तो मेरा करेजा काँप उठता है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं लिख सकता।

—राममनोहर"

कुछ समय तक, लोग गुप्तरूप से यह अनुमान लगा रहे थे कि इस पत्र-द्वारा स्पेशल के खो जाने के रहस्य का भेद खुल जायगा। जब यह पता चला कि ओण्डेल-सीतारामपुर लाइन के दूसरे स्टेशन से, एक ऐसे व्यक्ति ने यात्रा की है, जिसकी रूप-रेखा राममनोहर से बिलकुल मिलती-जुलती थी तो यह अनुमान और भी दृढ हो गया। राममनोहर की पत्नी और उनकी लडकी कमला बम्बई गई और ताजमहल होटल में लगभग तीन सप्ताह ठहरी, किन्तु राममनोहर बाबू का कुछ भी पता न चला। सभव है, किसी पत्र में यह प्रकाशित

क़त्ल कर डालने का अभियोग लगाया गया था। उसका बयान इस प्रकार है —

"आप लोग यह न समझें कि मैं अपना यह बयान केवल डींग हांकने के अभिप्राय से दे रहा हूँ। यदि मुझे यही करना होता तो मैं अपने अनेक अद्‌भुत और साहसपूर्ण कार्यों में से किसी एक के संबध में बतलाता। मेरा अभिप्राय केवल इतना ही है कि कलकत्ते के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को यह मालूम हो जाय कि जब मैं सुरेश बाबू के ऊपर पडी हुई विपत्ति को बतलाने में समर्थ हूँ तो मै यह भी बतला सकता हूँ कि यह सब किया क्यो गया था ? अतएव उन महोदय को चाहिए कि मेरी प्राण-रक्षा का उपाय शीघ्र से शीघ्र करें। महाशयो ! अवसर बीत जाने के पहिले ही चेतो ! आप लोग सुधीर को अच्छी तरह जानते हैं और यह भी जानते है कि वह कर्म करने में भी उतना ही तत्पर है जितना किसी बात के कहने में ! जल्दी कीजिए, नहीं तो हाथ मलना पडेगा !

"अभी मैं किसी का नाम नही प्रकट करूँगा। यदि आप नाम सुनेंगे तो आपको विश्वास भी न होगा। किन्तु, मैं यह बता देना चाहता हूँ कि उस समय मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन बडी कुशलता और तत्परता के साथ किया था। जिस सचाई के साथ मैंने अपने मालिको की सेवायें की हैं उसी सचाई से मुझे विश्वास है वे मेरी रक्षा करेंगे ! जब तक मुझे यह न विश्वास हो जायगा कि वे लोग मुझे धोखा दे रहे है मैं उन लोगो का नाम कदापि नहीं प्रकट करूँगा। जिस समय उन लोगों का नाम प्रकट किया जायगा सारे भारतवासी अचम्भित हो जायेंगे। किन्तु उस दिन... अच्छा आगे कुछ न कहूँगा।

"हाँ, सन् १९०५ में समूचे बंगाल में एक बहुत बड़ा राजनैतिक आन्दोलन चल रहा था। यह आन्दोलन कितना विकट और सनसनीपूर्ण था इसका पता मुझे ऐसे भेदिये के सिवा और किसी से नहीं मालूम हो सकता। कलकत्ता इस आन्दोलन का केन्द्र बना था। बंगाल के बहुत-से बड़े-बड़े प्रतिष्ठित व्यक्तियों की प्रतिष्ठा और जीवन खतरे में था। थोड़ी देर के लिए नौ कीलोंवाले खेल की कल्पना कीजिए। नौ कीलें अचल खड़ी हैं। बहुत दूर से एक गेंद उन पर आता है, कीलें फट-फटकर पृथ्वी पर गिर पड़ती हैं। इसी प्रकार बंगाल के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उन कीलों के स्थान पर मान लीजिए और सुरेश बाबू को दूर से आते हुए गेंद। यदि सुरेश बाबू कलकत्ते में पहुँच जाते हैं तो प्रतिष्ठित लोग कीलों की भाँति धराशायी हो जाते हैं। अतः यह तै किया गया कि सुरेश बाबू किसी प्रकार कलकत्ता न पहुँचने पायें।

"आगे क्या होगा, इसको सब लोग नहीं जानते थे। उस समय बंगाल के राजनैतिक तथा आर्थिक हित खतरे में थे। इसकी रक्षा का समुचित प्रबन्ध करने के लिए एक समिति का निर्माण किया गया। कुछ लोग तो इस समिति के उद्देश्य से परिचित थे और कुछ बिना कुछ जाने ही इसकी सहायता करते थे। इस समिति के उद्देश्यों के [illegible] को जान लेना चाहिए कि उस समय मेरे स्वामी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कर्तव्यपरायण मनुष्य का था जो इन आती हुई शक्ति को रोक रखने में समर्थ हो सके। वह मनुष्य कर्तव्य-परायणता, तथा सहन-शीलता में लाखो में एक होना चाहिए। आविष्कारशील वह अवश्य हो और हो परिस्थितियो के अनुकूल अपने आपको बना लेनेवाला। उन लोगो को पुधीर ही ऐसा दिखाई पडा और मेरे विचार से यह बिलकुल ठीक ही था। अब मेरा काम था अपने सहायको को नियुक्त करना और यह देखना कि सुरेश बाबू कलकत्ते न पहुँचने पावें। धन की कोई कमी नहीं थी, और न कमी थी उन साधनो की, जो धन से खरीदे जा सकते थे। समिति के सारे आदेशों के साथ, आध घण्टे के भीतर ही मैं अपने काम पर जुट गया। उस समय जो कुछ मैंने किया परिस्थितियो के अनुसार सब अच्छा था।

"मैंने तुरत अपने एक बहुत ही विश्वासी आदमी को बंबई भेजा। उसका काम था सुरेश बाबू का पीछा करना। समय पर यदि मेरा आदमी बबई पहुँच गया होता तो सुरेश बाबू काशी तक भी न पहुँच पाते। किन्तु शोक, वह तो गाडी छूट जाने के पश्चात् वहाँ पहुँचा। मैंने सुरेश को गाड़ी से जबलपुर ही में गायब कर देने का भी प्रयत्न किया किन्तु वह विफल हुआ। खैर, मैं इससे हताश नहीं हुआ। मैं तो, सारे सगठन-कर्ताओ की भाँति सारी असफलताओं का सामना करने के लिए तैयार था। और, इसके लिए, मैंने अनेक साधन भी बना रक्खे थे। कोई न कोई साधन तो सफल होता ही। इस काम के लिए मुझे जितनी कठिनाइयों का सामना करना पडा है उनको आप कम न समझें और न यही समझें कि कोई साधारण व्यक्ति इस काम को कर सकता था। हमारे सम्मुख केवल सुरेश बाबू का ही प्रश्न नहीं था

कार्य सुचारु रूप से संपादन करा सकते है। मैंने केवल रुपयों के बल पर ही एक ऐसे आदमी को वहाँ अपना साथी बना लिया था जो किसी भी दुस्साहस के कार्य को सफलतापूर्वक कर सकता था। मैं किसी का नाम नहीं लूँगा; किन्तु सारा श्रेय अपने आप लूटना अनुचित होगा। मालूम पड़ता था कि मेरा काशीवाला मित्र ऐसे ही कार्यों को करने के लिए ही पैदा हुआ था। वह काशी और मोग़लसराय के कोने-कोने से परिचित था और मोगलसराय से हवड़ा तक की रेलवे लाइन के निकट के सभी स्थानों से भी। उसके साथ कुछ आदमियों का एक गिरोह भी था जो बहुत विश्वसनीय और कार्य-कुशल थे। इस युक्ति को सोचा उसी ने था; किन्तु इसके प्रत्येक अंग पर विचार हम दोनों ने किया था। हम लोगों ने बहुतेरे रेलवे अफसरों को धन दे-देकर मिला लिया था। इन सबसे उपयोगी था राममनोहर। हम लोग यह पहले ही समझ गये थे कि यदि स्पेशल का प्रबंध किया जायगा तो यही उसका गार्ड होगा। महमूद इंजन-ड्राइवर के पास भी हम लोग पहुँचे थे; किन्तु उसको इधर-उधर की करते देख उसे एक दम छोड़ दिया। हम लोग निश्चित नहीं थे कि सुरेश बाबू स्पेशल का प्रबंध करेंगे ही; किन्तु उनका ऐसा करना इसलिए संभव था कि उन्हें कलकत्ता शीघ्रातिशीघ्र पहुँचना था। इसी अनिश्चितता के कारण हमको तरह तरह के उपाय करने पड़े थे। हमारा सारा काम उसी समय समाप्त हो चुका था जब वे बंबई से चले भी नहीं थे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उस टैक्सी का क्लीनर भी हमारा ही आदमी था जिस पर चढ़कर सुरेश बाबू काशी से मोग़ल-सराय आये थे।

"जिस समय सुरेश बाबू मोग़लसराय पहुँचे, हम समझ गये

वरन् उनके सारे कागजातो का भी। उनके साथी को भी मैं उस समय नहीं छोड़ सकता था यदि मुझे यह विश्वास हो गया होता कि उन्होंने अपनी सारी गुप्त बातें उसे बतला दी हैं। आप यह भी समझ लें कि उनको यह पहले ही सदेह हो गया था कि उनकी जान खतरे में है और वे इसके लिए सदैव सतर्क रहते थे। इस काम को करने के लिए मैं बिल्कुल उपयुक्त था क्योंकि जिस काम को करने में और लोग भय खाते थे उसका सपादन मैं बड़ी चालाकी से करता था।

"मैं सुरेश बाबू की अगवानी के लिए काशी में अच्छी तरह तैयार था। किन्तु, उस समय मेरी चिंता और बढ़ गई, जब मुझे इस बात के प्रमाण मिले कि उन्होंने अपनी रक्षा के लिए काशी में समुचित प्रबंध कर लिया है। अब मैं अपना काम उस समय कर सकता था जब वे मोगलसराय के मार्ग में हों। हम लोगो ने अनेक साधन ढूँढ निकाले थे। प्रत्येक साधन एक दूसरे से अधिक प्रभावशाली था। लेकिन यह सब निर्भर था सुरेश बाबू के कार्य-क्रम पर। फिर भी हमारी तैयारी में कोई कमी नहीं थी। वे चाहे जो कुछ करते हमारे चंगुल से बच नहीं सकते थे। यदि वे मोगलसराय ही में ठहरते तो भी हम तैयार थे और यदि वे एक्सप्रेस, पैसेंजर अथवा स्पेशल गाड़ी से यात्रा करते तो उसके लिए भी। हम लोगों ने उनके कार्य-क्रम का सभी प्रकार से अनुमान कर लिया था और तय कर लिये थे उनके [illegible] के लिए सारे [illegible]।

'[illegible] यह भी मालूम होता था कि यह सारा काम भी [illegible] नहीं [illegible] था। [illegible] मोगलसराय के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। यदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कार्य सुचारु रूप से सपादन करा सकते हैं। मैंने केवल रुपयो के बल पर ही एक ऐसे आदमी को वहाँ अपना साथी बना लिया था जो किसी भी दुस्साहस के कार्य को सफलतापूर्वक कर सकता था। मैं किसी का नाम नहीं लूँगा; किन्तु सारा श्रेय अपने आप लूटना अनुचित होगा। मालूम पडता था कि मेरा काशीवाला मित्र ऐसे ही कार्यों को करने के लिए ही पैदा हुआ था। वह काशी और मोगलसराय के कोने-कोने से परिचित था और मोगलसराय से हवडा तक की रेलवे लाइन के निकट के सभी स्थानो से भी। उसके साथ कुछ आदमियो का एक गिरोह भी था जो बहुत विश्वसनीय और कार्य-कुशल थे। इस युक्ति को सोचा उसी ने था, किन्तु इसके प्रत्येक अग पर विचार हम दोनो ने किया था। हम लोगो ने बहुतेरे रेलवे अफसरो को धन दे-देकर मिला लिया था। इन सबसे उपयोगी था राममनोहर। हम लोग यह पहले ही समझ गये थे कि यदि स्पेशल का प्रबध किया जायगा तो यही उसका गॉर्ड होगा। महमूद इजन-ड्राइवर के पास भी हम लोग पहुँचे थे; किन्तु उसको इधर-उधर की करते देख उसे एक दम छोड़ दिया। हम लोग निश्चित नहीं थे कि सुरेश बाबू स्पेशल का प्रबध करेंगे ही; किन्तु उनका ऐसा करना इसलिए सभव था कि उन्हें कलकत्ता शीघ्रातिशीघ्र पहुँचना था। इसी अनिश्चितता के कारण हमको तरह तरह के उपाय करने पडे थे। हमारा सारा काम उसी समय समाप्त हो चुका था जब वे बबई से चले भी नही थे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उस टैक्सी का क्लीनर भी हमारा ही आदमी था जिस पर चढकर सुरेश बाबू काशी से मोगल-सराय आये थे।

"जिस समय सुरेश बाबू मोगलसराय पहुँचे, हम समझ गये थे कि

उनको आपत्ति की आशंका हो गई है और उन्होंने अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लिया है। रक्षा ही के लिए वे अपने साथ एक और आदमी लाये थे। इसका नाम फौजदारसिंह था। वह शस्त्रास्त्र से सुसज्जित था और था उसको सदैव उपयोग में लाने के लिए तैयार। वह बहुत ही जानकार था और सुरेश बाबू के सारे कागजात उसी के पास थे। वह उन कागजात तथा अपने मालिक की रक्षा जी-जान से कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि सुरेश बाबू ने अपनी सारी गुप्त बातें उसको बतला दी हैं इसलिए उसको भी मार डालना आवश्यक हो गया था अन्यथा सारा मामला चौपट हो जाता। हम लोगों को उस समय कुछ साँस लेने का अवकाश मिला, जब वे स्टेशन के लिए कोशिश करते दिखाई पड़े। यह तो आप जानते ही हैं कि उस स्टेशन के कर्मचारियों में से दो अपने आदमी थे। इस काम के लिए हमको बहुत धन व्यय करना पड़ा था। हम लोगों ने उनको इतना धन दे दिया था कि वे नौकरी छोड़कर अपना शेष जीवन आराम से घर बैठे बिता सकते थे। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि ई० पी० के आदमी बड़े ईमानदार होते हैं, लेकिन यह सत्य है कि उनको फोड़ने के लिए बहुत धन व्यय करना पड़ता है।

"आप लोग मेरे बनारसी मित्र से पहले ही परिचित हो चुके हैं। अगर वह अपने लड़के की बीमारी के कारण अभी ही बनारस न चले जाते तो अभी सभा में उनसे [illegible] करता था। मामला [illegible] आदमी [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible]

दिया। उसने भी दीनदयाल के नाम से एक स्पेशल के लिए कोशिश की। उसे आशा थी कि उसके लिए भी सुरेश बाबू के साथ उसी स्पेशल में यात्रा करने की व्यवस्था कर दी जायगी। इस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर हमारी सहायता को वह भी पहुँच जायगा। यदि हमारा प्रयत्न किसी प्रकार असफल होता दिखाई पड़ता तो वह सुरेश बाबू तथा उनके साथी को गोली से मार डालता और उनके सारे कागजात नष्ट कर देता। लेकिन सुरेश बाबू बहुत सतर्क थे और उन्होंने किसी अन्य व्यक्ति को अपनी स्पेशल पर यात्रा करने की अनुमति नहीं दी। निराश होकर वह स्टेशन से बाहर चला गया और दूसरे दरवाजे से आकर स्पेशल में गॉर्ड के डिब्बे में घुस गया। उस समय स्पेशल प्लेटफार्म से कुछ दूर निकल गई थी।

"आप यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि इस बीच में मैं क्या कर रहा था। सुनिए, मैं बेकार नहीं बैठा था; मैं अपना काम पहले ही समाप्त कर चुका था। केवल जहाँ-तहाँ उसको सँवार देना ही शेष था। जिस साइड लाइन को हम लोगों ने अपने काम के लिए चुना था, पहले वह मेन-लाइन से मिली हुई थी। इस समय वह किसी दुर्घटना की आशंका से मेन-लाइन से काट दी गई थी। उसको मेन-लाइन से मिला देने के लिए हम लोगों को केवल रेल की कुछ पटरियाँ ही बिछा देनी थीं। इन पटरियों को हम लोगों ने इतनी सावधानी से लगा दिया कि किसी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित नहीं हुआ। इसको ठीक कर देने के पश्चात् प्वाइंट्स को ठीक कर दिया जिससे स्पेशल इस साइड लाइन पर चली आये। स्लीपर पहले ही से लगे थे। पटरियाँ, फिशप्लेट्स और रिवेट्स इत्यादि हम लोग एक साइडिंग से उठा लाये

थे। हम अपना यह सारा काम, स्पेशल आने के पूर्व ही, अपने साथि[illegible]
की सहायता से, पूरा कर चुके थे। जब स्पेशल आई तो वह इस खूबी के
साथ इस लाइन पर चली आई कि यात्रियो को प्वाइन्ट्स बदलने के
धक्के तक का अनुभव नहीं हुआ।

"अब रहीम की बारी आई। रहीम का काम था महमूद को
क्लोरोफार्म से बेहोश करके राममनोहर और फौजदारसिंह के साथ
स्पेशल पर से कूद जाना। इस काम को सफलतापूर्वक वह नहीं कर सका।
इसका मुझे दु:ख है। रहीम अपना काम सुचारु रूप से नहीं कर सका
और इसी से ड्राइवर महमूद की इंजन मे गिरकर मृत्यु हुई। अगर
रहीम अपना काम सफलतापूर्वक पूरा कर सकता तो हमारी कार्य-प्रणाली
में कोई ऐसी बात न हुई होती जिससे हमारी कार्यकुशलता में किसी
प्रकार का धब्बा लगता। हाँ, एक बात और है, राममनोहर ने अपनी
पत्नी को जो पत्र लिखने की धृष्टता की यह भी हमारे लिए खेद का
विषय है। अगर ये बातें न हुई होतीं तो लोग हमारी कार्यकुशलता
की, खुलेआम से नहीं तो चुपचाप ही प्रशंसा करते। आगुन्तक
हमारे काम में यही त्रुटि मिलेगी और कोई नहीं। इसके लिए मुझे
बड़ा दु:ख है। आज तक मैंने जो भी किया है उसमें किसी प्रकार की
त्रुटि नहीं आने पाई थी; किन्तु इस बार यह त्रुटि हो ही गई।

"अच्छा तो अब स्पेशल साहब लाइन पर है। यह लाइन [illegible]
[illegible] है और मजिस्ट्रेट के [illegible] मुँह [illegible]
है। [illegible] की [illegible] प्रमुख थी, [illegible]
[illegible] थी। [illegible] कि [illegible]
[illegible] नहीं

आपका सोचना बिलकुल ठीक ही है, लेकिन बात यह है कि जिस स्थान से यह लाइन गई है वहाँ की भूमि बडी ऊँची थी और भूमि काटकर लाइन निकाली गई है। लाइन के दोनो ओर ऊँचे-ऊँचे कगार है। स्पेशल को केवल वही देख सकता था जो उन कगारो पर खडा रहता और वहाँ केवल एक व्यक्ति था और वह था मैं। अब मैं आपको बतलाता हूँ कि मैंने क्या देखा :—

"मैंने अपने एक साथी को चार हथियारबन्द आदमियो के साथ प्वाइट्स* पर नियत कर दिया था। उसका काम था मेन लाइन से साइड लाइन पर आते समय स्पेशल की देख-भाल करना। क्योकि हम लोगो को सदेह था कि कहीं स्पेशल पटरियो पर से नीचे न उतर जाय। ऐसा होना सभव भी था; क्योकि लाइन के जोड़ो पर जंग लगा हुआ था जिससे वे कमजोर हो गये थे। यदि गाडी पटरियो पर से उतर जाती तो हमारे सहायक का काम होता—अपने आदमियो की सहायता से यात्रियो को समाप्त कर डालना और उनके काग़ज़ात को नष्ट कर देना। किन्तु यह नही हुआ और जब स्पेशल साइड लाइन पर चली आई तो आगे का कार्य-भार मेरे ऊपर आ पडा। मैं भी अपने दो हथियारबन्द आदमियो के साथ आगे के काम के लिए सतर्क खड़ा था। मेरे खडे होने के स्थान से खान का विकराल मुह साफ दिखाई पड रहा था।

"ज्योही पूरी गाडी साइड लाइन पर आई रहीम ने उसको धीमी करके फिर एकाएक तेज कर दिया। इस बीच में हमारे तीनों

---

*वह स्थान जहाँ से एक लाइन से दूसरी लाइन मिलाई जाती है।

आदमी--फौजदारसिंह, गार्ड और स्टोकर उस पर से कूद पड़े। यात्री पहले तो स्पेशल को धीमी होते देखकर चौंके किन्तु जब उसकी चाल पहिले से भी अधिक तेज हो गई तो चुप रह गये। यात्रियों की घबराहट की कल्पना करते ही मुझे हँसी आ जाती है । तनिक अपने आपको उन लोगों की स्थिति में रखकर कल्पना कीजिए कि उस समय आपकी क्या दशा होती जब आपको यह पता चल जाता कि स्पेशल ठीक लाइन पर न जाकर एक ऐसी लाइन पर दौड़ी जा रही है जो वर्षों से बेकार पड़ी है और जिसकी पटरियाँ जंग लग जाने से खराब हो रही हैं। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि उस समय उन बेचारों के हृदय पर क्या बीती होगी जब उनको विश्वास हो गया कि उनकी गाड़ी लन्दन न पहुँचकर मौत के मुँह में जा रही है। गाड़ी बड़े वेग से चली जा रही थी और उसके पहियों की खड़खड़ाहट जो जंग लगी पटरियों के कारण पैदा हो रही थी, हृदय को दहला देती थी। मैं यात्रियों के निकट था और उनकी घबड़ाहट अच्छी तरह देख सकता था। उनकी मुख मुद्रा से ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सुरेश बाबू अपने जीवन के लिए प्रार्थना कर रहे हों। उनका साथी तो ऐसा चिल्ला रहा था जैसे कुत्ता कसाई को देखकर चिल्लाता है। हम लोगों को लाइन के किनारे खड़ा देखकर शायद उसने हम लोगों को पागल-सा समझा। [illegible]

मान गये होते तो कोई बुराई नहीं थी; लेकिन नही, हमको तो अपना कर्तव्य पालन करना था और इसके अलावा स्पेशल अब हमारे अधिकार के बाहर थी।

"उसकी चिल्लाहट उस समय बन्द हुई जब स्पेशल मोड पर घूमी और उसको खान के विकराल मुंह की ओर जाते देखा। हम लोगो ने खान का मुंह पहले ही खोल दिया था और लाइन को, दो तीन और पटरियाँ रखकर, खान के मुंह तक पूरा कर दिया था। इस समय सुरेश और उनके साथी एकदम हतबुद्धि-से दिखाई पड रहे थे। उनकी आँखें पथरा गई थी और वाणी मूक हो गई थी।

"इधर मैं सोच रहा था कि इतनी बडी गाडी खान में सीधे गिर सकेगी या नहीं? कही ऐसा न हो कि वह लटकी ही रह जाय। मेरे एक साथी का कहना था कि गाडी खान को लाँघ जायगी। यह चिन्ता मुझे बहुत दुःखदायी हो रही थी और मै धडकते दिल से स्पेशल को बडी उत्सुकता से देख रहा था। इतने में गाडी खान के मुंह के पास पहुँची और इजन के बफर खान के मुंह के किनारे से टकराये। चिमनी एकदम लोप हो गई। यदि इंजन के बफर खान के होठ से टकरा न जाते तो मेरे साथी का अनुमान सच निकलता। गाडी के डिब्बे चूर-चूर होकर एक दूसरे में धँस गये और खान का मुंह थोडी देर के लिए ढँक गया। फिर अकस्मात् गाडी का बीच का भाग नीचे लटका और सारी गाडी खडखडाहट के साथ खान में धडाम से गिर पडी। थोडी देर बाद खान से बडे जोर का धुआँ और वाष्प का एक घना बादल-सा उठा और खान के मुंह पर पानी की बूंदो को बिखेरता हुआ हवा में विलीन हो गया। जान पडता है ब्वायलर फट गया था।

घड़ियोंवाला

मांडारोड हत्याकाण्ड को अभी बहुत-से लोग न भूले होंगे। सित
१९०८ की यह एक विचित्र घटना थी। उस समय के अधि
समाचार-पत्र तो केवल इसके समाचारों ही से भरे रहते थे। यह घटना
भी ऐसे समय में हुई जब कि देश में शान्ति थी। यही कारण है कि लोगों
ने इसको आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे दिया। किन्तु इस घटना के
समाचारों ने जनता को ऐसी निराशा और चिन्तामिश्रित स्थिति में
डाल दिया जिसकी कल्पना सर्वसाधारण नहीं कर सकते। और उनकी
निराशा उस समय और भी अधिक बढ़ गई जब उन्हें पता चला
कि दुर्घटना का सारा अनुसन्धान निष्फल हो गया और तत्सम्बन्धी
सारे कागजात दाखिलदफ्तर कर दिये गये। लेकिन अभी थोड़े दिन
हुए एक ऐसी खबर मिली है जिससे कि इस घटना पर बहुत कुछ
प्रकाश पड़ता है। इस खबर की सत्यता में सन्देह करने का लेशमात्र भी
स्थान नहीं है। मैं यह अच्छा समझता हूँ कि इस खबर को बताने के
पूर्व आप लोगों को उस घटना की याद दिला दूँ। संक्षेप में वह घटना
इस प्रकार है —

१६ सितम्बर, १९०८ को मौसम बड़ा खराब था। [illegible]
[illegible], लेकिन [illegible] और वर्षा [illegible]
[illegible] थी। [illegible] उस दिन, [illegible]
[illegible]
[illegible]

को पहुँच गई थी। उस समय लोगो का घर से बाहर निकलना असम्भव-सा हो गया था। ऐसे मौसम में यात्रा करने के लिए तो वे ही उद्यत हो सकते थे जो ऐसा करने के लिए अनिवार्य कारणो से विवश हो। अस्तु, स्टेशन पर आशा से अधिक भीड थी। इसका एक कारण यह भी था कि यह गाडी मोगलसराय से इलाहाबाद तक की यात्रा केवल दो घटो में पूरी करती थी। मार्ग के केवल तीन ही ऐसे स्टेशन थे जहाँ वह ठहरती थी। इस गाडी के गार्ड का नाम रामनाथ था और वह रेलवे का बहुत पुराना और विश्वासपात्र नौकर था।

स्टेशन की घडी पाँच बजा रही थी और गार्ड गाडी छोड़ने ही वाला था कि उसने दो यात्रियो को गाडी की ओर दौडते हुए देखा। उनमें से एक व्यक्ति असाधारण लम्बा था और काला ओवर-कोट पहने हुए था। अपने गले को जाडे से बचाने के लिए उसने ओवर-कोट के चौडे कालर को खडा कर दिया था। अवस्था में, गार्ड को वह पचास-साठ वर्ष का प्रतीत हुआ। किन्तु उसमें अभी युवावस्था की शक्ति और स्फूर्ति सचित-सी जान पडती थी। उसके एक हाथ में कत्थई रग का बडा-सा बेग था। दूसरा यात्री उसका साथी था और वह एक युवा महिला थी। लम्बी और तनी हुई। उसकी चाल बडी तीव्र थी। वह एक बादामी बुर्का पहने हुए थी। जिससे उसके मुख का अधिक भाग ढँका-सा था। देखने में दोनो पिता-पुत्री की भाँति ज्ञात होते थे। वे डिब्बो की खिडकियो से झाँकते हुए आगे बढते चले जा रहे थे कि गार्ड दौडकर उनके पास पहुँचा।

"शीघ्रता कीजिए महाशय! गाडी अब छूट रही है," उसने कहा।

यात्री ने उत्तर दिया, "फर्स्ट क्लास।"

तो कोई यात्री उतरा और न चढा। प्लेटफार्म पर उतरते हुए भी कोई यात्री नहीं देखा गया। लगभग ६ बजकर १० मिनट पर गाड़ी इलाहाबाद के लिए आगे बढ़ी और साढे ६ बजे के लगभग वह माडारोड पहुँची। एक्सप्रेस ५ मिनट लेट यहाँ पहुँची थी।

माडारोड स्टेशन पर स्टेशनकर्मचारियो ने देखा कि एक फर्स्टक्लास के डिब्बे का किवाड़ खुला हुआ है। उसके बगलवाले डिब्बे को देखने से एक विचित्र बात का पता चला।

जिस डिब्बे में वह नाटे कदवाला सिगार पीता बैठा था वह खाली था। उसमें सिवाय जले हुए सिगार के टुकड़े के और कुछ नही था। यात्री का कुछ पता न था। किवाड इसका बन्द था। इसके बगलवाले डिब्बे में, जिसका किवाड खुला हुआ था, कोई भी न था। न तो उस ओवरकोट पहिननेवाले व्यक्ति का कुछ पता था और न उसके महिला साथी का। तीनो यात्री गायब थे। हाँ, इस डिब्बे में फर्श पर पडा हुआ एक नवयुवक मिला। उसकी वेष-भूषा सुन्दर और भडकीली थी। वह कुहनियो के बल फर्श पर पडा था और उसके घुटने मुडे हुए थे। एक गोली उसके हृदय में घुसी हुई थी और इसी से उसकी मृत्यु तुरन्त हुई प्रतीत होती थी। किसी ने भी ऐसे आदमी को डिब्बे में घुसते नहीं देखा था। उसके जेब में गाडी का कोई टिकट भी नही था। उसके कपडो पर भी कोई निशान न था और न उसके पास किसी प्रकार का ऐसा सामान था जिससे उसके बारे में कोई जानकारी हो सके। वह कौन था, कहाँ से आ रहा था, और उसकी मृत्यु कैसे हुई? उतनी ही रहस्यपूर्ण बातें थीं जितनी कि उन तीनो यात्रियो का गायब हो जाना!

गार्ड ने निकटवाले फर्स्ट क्लास डिब्बे की खिड़की खोल दी। उस डिब्बे में एक नाटा व्यक्ति बैठा सिगार पी रहा था। उसकी आकृति ने, ज्ञात पड़ता है, गार्ड को प्रभावित कर दिया था। क्योंकि गार्ड ने बाद को बतलाया कि वह उसको पहचान सकता था और उसकी रूप-रेखा को बिल्कुल ठीक-ठीक बतला सकता था। उसकी अवस्था लगभग तीस पैंतीस वर्ष की थी और वेष-भूषा साधारण। नाक उसकी नोकीली थी और बाल काले तथा छोटे-छोटे। देखने में वह फुर्तीला प्रतीत होता था और चेहरे से यह साफ प्रकट होता था कि आदमी उद्योगशील था। ज्योंही किवाड़ खुले उसने ऊपर की ओर देखा। लम्बा यात्री उसको देखकर पायदान पर ही रुक गया।

"इसमें एक आदमी बैठा हुआ सिगार पी रहा है। मेरे महिला साथी को यह अच्छा नहीं लगता," उसने गार्ड की ओर देखते हुए कहा।

स्वच्छवायु के लिए दूसरे कम्पार्टमेंट में चला जाय। यदि थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाय कि सिगार पीनेवाले व्यक्ति ने ऐसा किया तो स्वभावत. वह निकटवर्ती कम्पार्टमेंट ही में होगा। उस कम्पार्टमेंट में दो यात्री पहले से ही उपस्थित थे। इस प्रकार इस नाटक के तीन पात्र हो गये। यहाँ तक तो बात ठीक जान पड़ती है; लेकिन इसके आगे की घटनायें कैसे हुईं? कोई नहीं बतला सकता था।

विंध्याचल और माडारोड के बीच की लाइन की देख-भाल करने से एक ऐसी बात का पता चला जिससे इस दुर्घटना का कोई सम्बन्ध हो सकता है। विरोही स्टेशन के निकट, जहाँ एक्सप्रेस कुछ धीमी हो गई थी, एक गुटका रामायण लाइन के किनारे पड़ा हुआ मिला। यह बहुत पुराना और कहीं-कहीं फटा हुआ था। उसके प्रथम पन्ने पर यह लिखा था—

"शिवदयालु ने हरदयालु को दिया, जनवरी १३, १८७०." उसके नीचे लिखा था—

और समाचारपत्रो को तरह-तरह की बातो को सोचने और लिखने का अवसर दिया।

रामनाथ गार्ड ने अनुसधान के समय जो गवाही दी उससे इस रहस्यपूर्ण घटना पर थोडा प्रकाश पडा। उसने कहा,—"विन्ध्याचल और सिरोही स्टेशनो के बीच एक स्थान पर लाइन की मरम्मत हो रही थी। उस जगह एक्सप्रेस की चाल कुछ कम कर देनी पडी थी। फिर भी गाडी की चाल आठ-दस मील प्रतिघटा से कम नहीं थी। उस स्थान पर किसी व्यक्ति और किसी फुर्तीली औरत के लिए बिना चोट खाये, गाडी से कूद जाना सभव था। लेकिन उस स्थान पर गैंग* काम कर रहा था। उन लोगो में से किसी ने भी किसी को गाडी पर से कूदते नहीं देखा। एक बात अवश्य है कि गैंग के आदमी नियमानुसार गाडी के एक ही ओर सीधी लाइन में खडे होते हैं और गाडी का डिब्बा मुडा हुआ था दूसरी ओर, इससे यह भी सम्भव था कि कोई गाडी पर से कूद गया हो और उन लोगों ने न देखा हो, क्योंकि उस समय अँधेरा भी अधिक हो गया था।

स्वच्छवायु के लिए दूसरे कम्पार्टमेंट में चला जाय। यदि थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाय कि सिगार पीनेवाले व्यक्ति ने ऐसा किया तो स्वभावतः वह निकटवर्ती कम्पार्टमेंट ही में होगा। उस कम्पार्टमेंट में दो यात्री पहले से ही उपस्थित थे। इस प्रकार इस नाटक के तीन पात्र हो गये। यहाँ तक तो बात ठीक जान पड़ती है; लेकिन इसके आगे की घटनायें कैसे हुईं? कोई नहीं बतला सकता था।

विंध्याचल और माडारोड के बीच की लाइन की देख-भाल करने से एक ऐसी बात का पता चला जिससे इस दुर्घटना का कोई सम्बन्ध हो सकता है। बिरोही स्टेशन के निकट, जहाँ एक्सप्रेस कुछ धीमी हो गई थी, एक गुटका रामायण लाइन के किनारे पड़ा हुआ मिला। यह बहुत पुराना और कहीं-कहीं फटा हुआ था। उसके प्रथम पन्ने पर यह लिखा था—

"शिवदयालु ने हरदयालु को दिया, जनवरी १३, १८७०" उसके नीचे लिखा था—

"रामदयालु, जुलाई ४, १८७३." इसके नीचे—

"रामकृपालु, नवम्बर १, १८८३."

उपर्युक्त सभी नाम और तारीखें एक ही व्यक्ति की लिखी जान पड़ती थीं। पुलिस को यही एक वस्तु ऐसी मिली जिसको आप एक सांकेतिक वस्तु मान सकते हैं। इसके पश्चात् पुलिस ने उसकी मृत्यु के अनुसंधानवाले कागजात पर अपना यह नोट लिखकर "इस आदमी का खून किसी ने कर डाला और वह लापता है," मामला समाप्त कर दिया। विज्ञापन, पारितोषिक तथा अनुसंधान सब बेकार

सिद्ध हुए। किसी ऐसी ठोस वस्तु का पता न चल सका जिससे कि इस रहस्यपूर्ण हत्याकांड पर प्रकाश पड़ता।

इस घटना के विषय में लोग तरह-तरह की कल्पनायें करते थे। समाचार-पत्रों की कल्पनायें बड़ी बढ़-चढ़ होती थीं। कुछ तो ऐसी थीं जिनको हम केवल पागल का प्रलाप के सिवा और कुछ नहीं कह सकते। कुछ लोग उसके दाँत को सोने से मढ़ा होने के कारण उसे मारवाड़ी होने का अनुमान करते थे। यद्यपि उसकी वेषभूषा एक पंजाबी की भाँति थी। कुछ लोगों का अनुमान था कि उसकी हत्या उसके साथियों ने इसलिए की होगी कि उसने सीट के नीचे छिपकर उन लोगों की गुप्त बातों को सुन लिया होगा। यह अनुमान उस समय और भी युक्ति-युक्त जान पड़ता है जब हम बदमाशों की क्रूरतापूर्ण करतूतों की ओर ध्यान देते हैं।

उस यात्री का सीट के नीचे छिपा रहना इस बात का द्योतक है कि वह बिना टिकट का था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी हत्या में उस महिला का विशेष हाथ था। गार्ड के बयान से यह स्पष्ट था कि वह आदमी उन दोनों यात्रियों के आने के पहले ही से वहाँ छिपा था और यह एक आकस्मिक घटना थी कि षड्यंत्रकारी भी उसी डिब्बे में आकर बैठ गये जिसमें कि वह [illegible] पहले से ही छिपा था। किन्तु प्रश्न यह होता है कि फिर वह [illegible] व्यक्ति क्या हो गया? उसके गायब हो जाने की बात तो ठीक [illegible] जाती है। [illegible]

[illegible]

प्रसिद्ध जासूस के नाम से एक पत्र प्रकाशित हुआ। उस पत्र पर बहुत समय तक तर्क-वितर्क होता रहा। जासूस का अनुमान सत्यता के निकट प्रतीत होता था। अत. हम उसको ज्यों का त्यों आपको सुना देते हैं :—

"सचाई में चाहे जो कुछ हो; किन्तु यह निर्भर है अद्भुत और असाधारण घटनाओं पर। अत· हम अपनी व्याख्या के लिए वैसी ही घटनाओं को मूलतत्त्व के रूप में लेते हैं। इस दुर्घटना के आधार का कुछ पता नहीं चला। अत. इसकी अनुपस्थिति में वैज्ञानिक अनुसंधान न हो सकने के कारण सायोगिकरूप से इसका विश्लेषण करना आवश्यक है। अब तक इस दुर्घटना के विषय में जिन बातो का पता चला है उनके आधार पर हम अपना अनुमान अवलंबित न कर ऐसी काल्पनिक घटनाओं का सहारा लेते हैं जो कि उन घटनाओं के विरुद्ध न हों। और तब हम अपनी इस व्याख्या की जाँच किसी भी बाद को पता चलनेवाली घटनाओं से कर सकते हैं। अगर वे घटनायें इसके साथ बिलकुल ठीक जँचती हैं तब हम समझ सकते हैं कि हम ठीक मार्ग पर हैं और इसी तरह प्रत्येक बाद को मालूम हुई घटनाओं से जाँचते-जाँचते हम सत्यता के निकट तक पहुँच जायँगे।

"हाँ, एक बहुत असाधारण और साकेतिक तथ्य को बिलकुल छोड़ दिया गया है। इस पर किसी ने अब तक विचार नहीं किया। जिस समय एक्सप्रेस की चाल धीमी हो गई थी उसी समय उसी स्थान पर एक साधारण सवारी गाडी दूसरी समानान्तर पटरियों पर से जा रही थी। ऐसी दशा में दोनों गाड़ियाँ कुछ दूर तक समानान्तर एक ही चाल से जाती हैं। यह सभी जानते हैं कि इस अवस्था में एक गाडी के

यात्री दूसरी गाड़ी के यात्रियों को प्राय: देखते जाते हैं। एक्सप्रेस के डिब्बों की बत्तियाँ मिर्जापुर ही में जल गई थीं; अब उसके प्रत्येक डिब्बे में प्रकाश था।

"अब, हम घटनाओं का क्रम इस प्रकार बाँधेंगे—यह बहुत सी घड़ियोंवाला नवयुवक अकेले साधारण सवारी गाड़ी में था। उसका टिकट, अन्य सामानों के साथ, हम अनुमान करते हैं, उसके बगल में था। वह शायद साधारण बुद्धि का कोई मारवाड़ी था। यह उसके मूल्यवान् आभूषणों से प्रकट होता है।

"जब वह बैठा-बैठा एक्सप्रेस के डिब्बों को देख रहा था उसने अपने परिचय के कुछ आदमियों को देखा। यहाँ पर हम अपने आवश्यकतानुसार अनुमान करेंगे कि उन आदमियों में एक स्त्री थी जिसको यह प्यार करता था और एक पुरुष जिससे घृणा। वह व्यक्ति भी इससे घृणा करता था। यह युवक बहुत शीघ्र उत्तेजित होनेवाला और क्रोधशील था। उस पुरुष को अपनी प्रेयसी के साथ देखकर वह अपने को सँभाल न सका और अपनी गाड़ी के पायदान से एक्सप्रेस के पायदान पर गया और फिर किवाड़ खोलकर उन लोगों के सामने आ खड़ा हुआ। ऐसा करना कोई कठिन बात नहीं थी क्योंकि दोनों गाड़ियाँ समानान्तर समान गति से जा रही थीं।

मारा होगा, अत लम्बे आदमी ने उसको गोली मार दी और उस स्त्री को लेकर भाग गया । हाँ, हमें यह अवश्य अनुमान करना पड़ेगा कि सारी बातें बहुत शीघ्र समाप्त हुईं और गाडी की गति अधिक न होने के कारण उस आदमी का स्त्री के साथ कूद जाना असंभव नहीं था ।

"अब हमें उस आदमी के विषय में विचार करना है जो डिब्बे में बैठा सिगार पी रहा था। यदि हम यह मान लें कि दुर्घटना के सबंध में हमारा यह अनुमान बिलकुल ठीक है तो इस आदमी के कारण इसमें कोई बाधा नहीं पडती। मेरे विचार से उसने नवयुवक को अपनी गाडी से एक्सप्रेस में आते देखा। उसके थोडी देर पश्चात् पिस्टल छूटने का शब्द सुना और फिर दो आदमियो को गाडी से उतरकर भागते देखा। इन सब बातों से उसने समझा कि हत्या करके अपराधी भगे जा रहे हैं। उन लोगों को पकडने के लिए वह भी गाडी से कूद पडा। अब प्रश्न यह होता है कि उस दिन से आज तक वह छिपा क्यो है? इसका उत्तर बडा सरल है। या तो वह स्वयं पीछा करने में मारा गया और या बाद को यह सोचकर कि अपराधी का पीछा करना उसका काम नहीं है, वह कहीं चला गया। ये बातें ऐसी हैं जिन पर अभी मैं कुछ विशेष प्रकाश नहीं डाल सकता। यह मैं मानता हूँ कि अभी बहुत-सी बातो पर विचार करना है। यह कैसे संभव हो सकता है कि ऐसे उतावली के समय हत्यारा एक बडा बैग लेकर व्यर्थ में बोझा क्यो लादेगा? इसका उत्तर यही है कि वह जानता था कि अगर बैग को नहीं ले जाता तो उसके-द्वारा उसका पता लग जायगा। इसी लिए यह बहुत आवश्यक था कि वह उसको

जाय। मेरे इस अनुमान में एक कमी है और मैं इसके लिए रेलवे कर्मचारियों से अनुरोध करूंगा कि वे सवारी गाड़ी की खोज करें और देखें कि उसमें कोई टिकट तो नहीं पड़ा है। यदि टिकट मिल जाता है तो मेरा अनुमान बिलकुल ठीक उतरता है, और यदि वह नहीं मिलता तब भी मेरा अनुमान ठीक ही हो सकता है। ऐसी दशा में मैं समझूंगा कि या तो वह युवक बिना टिकट के यात्रा कर रहा था अथवा उसका टिकट कहीं खो गया था। ऐसा होना कोई असाधारण बात तो नहीं है।"

इस विस्तृत और युक्तिपूर्ण अनुमान का उत्तर पुलिस तथा रेलवे ने इस प्रकार दिया—प्रथम तो कोई ऐसा टिकट गाड़ी में नहीं मिला जिसका कोई मालिक न हो; दूसरे, सवारी गाड़ी एक्सप्रेस के समानान्तर

"यद्यपि आप मेरे नाम से भलीभाँति परिचित नहीं हैं तो भी आप मुझे इस पत्र के लिए क्षमा करेंगे। इस बात को गुप्त रखने के लिए उतना कारण नहीं है जितना कि पांच साल पहले था जब मेरी माता जीवित थीं। किन्तु उसके लिए जो कुछ मैं कर सकता था मैंने किया। यद्यपि पांडा हत्याकाड के संबध में आपका विचार ठीक नहीं था फिर भी सत्यता के कुछ समीप अवश्य था। इसी लिए मैं यह उचित समझता हूँ कि उससे संबध रखनेवाली सारी बातें आपको बतला दूँ। मुझे सारी बातें कुछ पहिले से बतलानी पड़ेंगी जिससे आप भलीभाँति समझ सकें।

"हमारे पूर्वज आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व मारवाड़ से आकर पटने में बसे थे। मेरे पिता यहां के एक प्रतिद्ध व्यापारी थे। उनके केवल दो पुत्र थे—मैं रामदयालु और मेरा भाई रामकृपाल। मैं रामकृपाल से दस वर्ष बड़ा था। पिता की मृत्यु के पश्चात् मैं उसके लिए पिता के समान था जैसा बड़े भाइयों का कर्तव्य है। वह बड़ा होनहार और चतुर था और उसकी गणना सर्वसुन्दर व्यक्तियों में होती थी। यह सब होते हुए भी उसमें एक अवगुण था और उसका यह अवगुण बराबर बढ़ता ही गया। इसको दूर करने के सारे प्रयत्न निष्फल हुए। माता जी को भी उसका अवगुण उतना ही ज्ञात था जितना मुझे; किन्तु फिर भी वे उसको बराबर और बिगाड़ती चली गईं। उसका एक कारण यह भी था कि उसमें कुछ ऐसी असाधारण शक्ति थी वह सबको अपने वश में कर लेता था और अपने इच्छानुसार काम करा लेता था। उसको सन्मार्ग पर लाने के लिए यथाशक्ति मैंने सब कुछ किया; किन्तु वह मेरी डाट-डपट के कारण मुझसे दूर ही रहता था।

"अन्त में, वह अवगुणों का भण्डार बन गया और उसको सुधारने

के सभी प्रयत्न निष्फल हुए। वह कलकत्ता चला गया और वहाँ उसकी दशा और भी अधिक खराब हो गई। आरम्भ में, वह केवल आमोदप्रिय था, कुछ दिन पश्चात् वह अपराधी बन गया और अन्त में एक वर्ष के भीतर ही वह कलकत्ते का एक विख्यात गुंडा। उसकी मित्रता वहाँ के गुण्डों के सरदार कल्लू खाँ से हो गई। उन दोनों ने ताश से जुआ खेलना अपना व्यवसाय बना लिया और इनके लिए वे कलकत्ते के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध होटलों में जाया करते थे। वे लोग इतनी चतुरता से बेईमानी करते थे कि लोग भाँप नहीं सकते थे। मेरा भाई वेष बदलने में बड़ा निपुण था। कल्लू खाँ के आवश्यकतानुसार कभी कालेज का विद्यार्थी, कभी किसी प्रसिद्ध गुजराती और कभी किसी पश्चिमी भोले-भाले लड़के का वेष बनाता था। एक दिन उसने एक [illegible] का वेष इतनी निपुणता से बनाया कि किसी को उस पर संदेह तक न हो सका। उस दिन से फिर वह लड़की के ही वेष में लोगों को ठगने आरम्भ किया। उन लोगों ने पुलिस को भी मिला लिया था और धंधे का व्यापार बड़ी निर्भयता से किया करते थे।

"यदि वे यह व्यवसाय कलकत्ते ही तक सीमित रखते तो भी कोई हानि नहीं थी। किन्तु, [illegible] वहाँ से एक दिन पटना गए और वहाँ [illegible]

सकता था; क्योंकि ऐसा करने से माता जी को बड़ा कष्ट होगा। फिर, मैंने उसको समझाया कि माता जी को तो प्रत्येक दशा में कष्ट हो रहा है। अत मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं तुमको कलकत्ता के होटलों में देखने के स्थान पर पटना के जेल में ही अब देखूंगा। मेरे इतना कहने पर वह होश में आया और प्रतिज्ञा की कि कल्लू खाँ का साथ छोड़ देगा और बनारस जाकर ईमानदारी का कोई भी व्यापार, जिसमें मैं सहायता दूंगा करेगा। मैं उसको लेकर अपने एक मित्र के पास गया जो अमेरिकन घडियो का व्यापार करते थे। उन्होंने उसको बनारस और इलाहाबाद की एजन्सी दे दी। इसके लिए वे उसको तीस रुपये मासिक तथा १५ प्रतिशत कमीशन देने को कहा। उसका रंग-ढंग इतना अच्छा था कि मेरे मित्र उससे प्रभावित हो गये और एक सप्ताह के भीतर ही उसे घड़ियो का एक बक्स नमूने के लिए देकर बनारस भेज दिया।

"मुझको अब ऐसा प्रतीत होने लगा कि उस चेक के व्यापार से वह बहुत डर गया है और अब वह सुधरकर ईमानदारी का व्यापार करेगा। मेरी माता ने भी उसे बहुत-कुछ समझाया-बुझाया और ऐसा जान पड़ा कि वह उससे बहुत प्रभावित भी हुआ था। माता उसको बहुत प्यार करती थीं और वह सदैव उनकी बातो की अवहेलना करता और उनको दुख पहुँचाता। मैं यह भी नहीं भूला था कि कल्लू खाँ का प्रभाव उस पर बहुत अधिक है, अत. उसका सुधार उसी समय संभव है जब कि दोनो का सम्बन्धविच्छेद हो जाय। कलकत्ते की खुफिया पुलिस-विभाग में मेरे एक मित्र थे। उनकी सहायता से मैं सदैव कल्लू खाँ की चौकसी किया करता था। लगभग पन्द्रह दिनों के पश्चात् जब मुझको

पता चला कि वह बनारस जा रहा है तो मैं समझ गया कि वह केवल रामकृपाल को बहकाकर अपने पुराने व्यवसाय में लगाने के अभिप्राय से वहाँ जा रहा है। मैं भी तुरन्त बनारस जाने के लिए निश्चय किया, यद्यपि मैं जानता था कि कल्लू खाँ की अपेक्षा मेरा प्रभाव उस पर बहुत कम पड़ेगा फिर भी माता जी के कहने से कि उसको समझाना मेरा कर्तव्य है, मैं चलने को तैयार हो गया। अपनी सफलता के लिए हम दोनों ने रात भर देवी-देवताओं की उपासना की और जाते समय माता जी ने एक गुटका रामायण मुझको सर्वदा अपने पास रखने के लिए दिया। यह गुटका पिता जी ने उन्हें अपने विवाह के पश्चात् पाठ करने के लिए दिया था।

"संयोग से, पटने से मैं उसी ट्रेन से प्रस्थान किया जिससे कल्लू खाँ जा रहा था। मुझे यह संतोष था कि मैं उसकी यात्रा निष्फल कर देने में सफल हूँगा। आरा स्टेशन पर किसी काम से मैं उतरा और मेरी दृष्टि उस डिब्बे में गई जहाँ वह बैठा था। मैंने देखा कि कई एक नवयुवक बैठे उसके साथ ताश खेल रहे हैं। उस समय उन लोगों से बेईमानी करके वह पर्याप्त धन लूट लेता, किन्तु मैंने उसके खेल में

वह एक बोतल हाथ में लिये हुए उछल पड़ा; किन्तु वह अच्छी तरह समझता था कि कलकत्ते की पुलिस उसकी रक्षा यहाँ नहीं कर सकती थी। मारपीट करने पर या तो उसको जेल जाना पड़ेगा या फाँसी के तख्ते पर। पचास मील प्रतिघंटा की चाल से जाती हुई गाड़ी से कूदकर भाग जाना भी उसके लिए संभव नहीं था।

उसने कड़ककर कहा—"अपने शब्दों को सिद्ध करो।"

"मैं करूँगा,"—मैंने कहा—"अगर तुम अपनी कमीज की दाहिनी आस्तीन ऊपर को खसकाओ। या तो मैं सिद्ध कर दूंगा अथवा मैं अपने शब्दों को निगल जाऊँगा।"

वह पीला पड़ गया और उसके मुंह से एक शब्द भी न निकला। मैं उनके बेईमानी करने के कुछ साधनों और उपायों से परिचित था। ऐसे लोग प्रायः अपनी दाहिनी आस्तीन के नीचे लचीले फीते से बंधा एक क्लिप कलाई के ऊपर छिपा रखते हैं। इसी क्लिप-द्वारा जिस पत्ते को वे चाहते हैं अपने हाथ से खींच लेते हैं और उनके स्थान पर इच्छानुसार दूसरा पत्ता ले लेते हैं। वे लोग बहुत-से पत्ते पहिले ही से छिपाकर रक्खे रहते हैं। मैंने उसके इस साधन को पहले ही ताड़ लिया था और वह सच निकला। उसने खेलना बन्द कर दिया और एक किनारे जाकर बैठ गया। अपनी इस सफलता पर मैं बहुत प्रसन्न था।

"लेकिन उसने बहुत शीघ्र ही इसका बदला मुझसे ले लिया। क्योंकि जब मेरे भाई को प्रभावित करने का प्रश्न आया तो वह मुझसे बराबर जीतता गया। रामकृपाल बनारस में अपना काम बड़ी निपुणता से कर रहा था। उसने बहुत-से आर्डर भी व्यापारियों से ले लिये थे; लेकिन यह कल्लू खाँ उसके सुधार के मार्ग में फिर आ खड़ा हुआ था

अपने भरसक मैंने बड़ा प्रयत्न किया; किन्तु सफलता मुझे नहीं मिली। दूसरी बात मैंने यह सुनी कि पंजाब होटल में एक यात्री को ताश के खेल में दो आदमियों ने ठग लिया है और यह मामला पुलिस के हाथ में है। इस बात का पता मुझे 'आज' से चला और मैं तुरन्त समझ गया कि कल्लू खाँ और रामकृपाल दोनों ने अपना व्यवसाय यहाँ आरम्भ कर दिया है। मैं सीधे रामकृपाल के निवासस्थान पर गया। वहाँ मुझे ज्ञात हुआ कि रामकृपाल एक लंबे आदमी के साथ अपना सब सामान लेकर कहीं चला गया और उस स्थान को उसने छोड़ दिया है। मैं जान गया कि वह लंबा व्यक्ति और कोई नहीं वरन् कल्लू खाँ है। माणिकचन्द ने कोचवान से उन लोगों को बात करते समय मोगल-सराय स्टेशन का नाम सुन लिया था और यह भी सुन लिया था कि वह लंबा आदमी इलाहाबाद के सम्बन्ध में कुछ बातें कर रहा था। उसको विश्वास था कि वे लोग वहीं जाना चाहते थे।

ठीक काम नहीं कर रहा था। अतः गाड़ी में बैठकर मैंने एक सिगार जलाया और उन लोगों के विषय में विचार करने लगा। उस समय, जब कि गाड़ी छूटने ही वाली थी मेरे डिब्बे की किवाड़ खुली और मैंने उन लोगों को प्लेटफार्म पर आते हुए देखा।

"वे दोनों वेष बदले हुए थे। और ऐसा करना ठीक ही था क्योंकि उन लोगों को पता था कि बनारस की पुलिस उन लोगों का पीछा कर रही है। कल्लू खां ने अपने ओवरकोट का चौड़ा कालर खड़ा कर रक्खा था। अत उसकी आंखें और नाक ही दिखलाई पड़ती थी। मेरा भाई एक स्त्री के वेष में था और ऊपर से बुर्का पहन रक्खा था। इतना सब होते हुए भी मैंने उन लोगो को फौरन् पहचान लिया। उन लोगों को देखकर मैं चौंक पड़ा और कल्लू खां ने मुझे पहचान लिया। उसने कुछ कहा और गार्ड ने मेरा डिब्बा बन्द कर दिया तथा दूसरे डिब्बे में उन लोगो को बैठा दिया। उन लोगों के साथ जाने के लिए मैंने गाड़ी को रोकना चाहा, लेकिन गाड़ी छूट चुकी थी और उसको रोकने का समय नहीं था।

"गाड़ी जब मिर्जापुर में रुकी तो मैंने फौरन अपना डिब्बा बदल दिया। ऐसा करते हुए मुझको किसी ने देखा नहीं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि स्टेशन पर भीड़ बहुत थी। कल्लू खां अवश्य हमारी आशा कर रहा था अत वह बराबर यथा-शक्ति मेरे भाई को कठोर-हृदय तथा मेरे विरुद्ध बनाने में संलग्न था। इसका पता मुझे इस बात से चलता है कि मैंने अपने भाई को पहले कभी इतना कठोर-हृदय नहीं पाया था। मैं बहुत शीघ्र ही उसको समझा-बुझाकर अपने वश में कर लेता था; किन्तु अब की बार उस पर मेरा कुछ प्रभाव-

ही नहीं पड़ता था। मैंने उसको सभी तरह से समझाया, जेल के दुखदायी जीवन का चित्र उसके सामने खींचा; माता जी के कष्टों का वर्णन किया; किन्तु सभी निष्फल। किसी भी बात का उसके ऊपर लेशमात्र भी प्रभाव न पड़ा। वह चुप-चाप पत्थर की भाँति बैठा सुनता रहा और उसके चेहरे पर एक उपहास की झलक दिखाई पड़ती थी। कल्लू खाँ प्रायः मेरे ऊपर व्यंग्य किया करता था और कभी-कभी उसको और भी कठोर बनाने के लिए कुछ इधर-उधर के शब्द बोल देता।

"तुम कोई धार्मिक पाठशाला क्यों नहीं खोल देते?"—यह मुझसे कहता और फिर उसकी ओर देखकर—"यह समझता है तुम्हारा कोई स्वतन्त्र विचार ही नहीं है। यह तुम्हें केवल एक छोटा-सा बच्चा समझता है जिसको वह जहाँ चाहे अपने साथ ले जावे। उसको अभी ज्ञात हो जायेगा कि तुम भी उसी की भाँति एक पुरुष हो।"

"उसके इन शब्दों ने मुझे क्रोधित बना दिया और मैं क्रोध में काँपने लगा। मिर्जापुर से गाड़ी छूट चुकी थी और इन बातों में काफी समय व्यतीत हो गया। मेरा क्रोध बहुत बढ़ गया था और मैंने अपने जीवन में प्रथम बार अपने भाई के साथ कठोरता का व्यवहार आरम्भ किया। यदि मैं ऐसा व्यवहार पहिले किये होता तो शायद इसका फल बहुत अच्छा होता।

भाँति स्त्रियों की तरह घूंघट काढकर बैठने में तुम्हे लेशमात्र भी लज्जा नहीं आती ।" इस पर उसका मुंह तमतमा उठा; क्योंकि उसको अपनी मर्यादा का कुछ ध्यान था। वह अब और अधिक व्यंग्य सुनने के लिए तैयार न था।

"यह तो केवल ऊपर से पहन रक्खा है,"—कहते हुए उसने बुर्के को उतार फेंका। लोगों को अपने धन को दूसरों की पहुँच के बाहर फेंक देना पड़ता है इसके सिवा अन्य कोई साधन मेरे पास नहीं है।" उसने अपने बुर्के को बैग में रखते हुए कहा—"गार्ड के आने तक अब मुझे यह नहीं पहनना है।"

"तब भी नहीं,"—मैंने कहा और बैग को उठाकर जोर से डिब्बे के बाहर फेंक दिया।—"मुझे आशा है अब तुम कभी स्त्री के वेष में न रहोगे। और अगर केवल उस बुर्के के कारण तुम जेल से जाने से बचते हो तो तुम अवश्य जेल देखोगे।"

"वह इसी प्रकार ठीक मार्ग पर आ सकता था। मैं अपने लाभ की बात तुरन्त समझ गया। उसकी कोमल प्रकृति ऐसी थी कि उसे कठोरता का व्यवहार ठीक कर सकता था कोमलता का नहीं। वह लज्जा से पानी-पानी हो गया और उसकी आँखें डबडबा आईं। कल्लू खाँ यह सब देख रहा था और मुझे सफल होते देख मेरे इस तरह के व्यवहार से उसे बचाना चाहता था।

वह जोर से चिल्ला उठा,—"यह मेरा शेर है। तुम इसे इस प्रकार चिढ़ा नहीं सकते।"

"यह मेरा भाई है और तुम इसे इस प्रकार नष्ट नहीं कर सकते,"—मैंने कहा।—"मेरा विश्वास है कि जेल का जादू ही तुम्हें इससे अलग

रख सकता है। अतः तुमको अवश्य जेल जाना पड़ेगा। और इसके लिए मैं दोषी भी न हूँगा।"

"अच्छा, तुम चिल्लाओगे, क्यों, चिल्लाओ ? उसने कड़ककर दाँत पीसते हुए कहा। और क्षण मात्र में उसने अपना पिस्तौल निकाल लिया। मैं उसका हाथ पकड़ने के लिए बढ़ा; किन्तु समय बीत चुका था और मैं एक किनारे कूदकर हो गया। उसी समय उसने पिस्तौल दाग दी और गोली जो मुझको लगती, मेरे भाई के छाती से पार हो गई।

"वह बिना चूँ किये डिब्बे के फर्श पर गिर पड़ा। मैं और कल्लू दोनों ने भयभीत होकर उसको चेतनावस्था में लाने का प्रयत्न करने लगे। उसके हाथ में भरा हुआ पिस्तौल अभी तक मौजूद था, किन्तु उसका जोर और मेरा उसका विरोध करने की भावना सबके सब इस दुर्घटना के कारण नष्ट हो गये थे। पहले-पहल स्थिति का बोध उसी को हुआ। इस समय, आगे गाड़ी बड़ी धीमी चाल से जा रही थी। अब इसने उतर भागने का सुअवसर पाया। क्षण-मात्र में उसने डिब्बे का दरवाजा खोला, लेकिन मैं उससे भी अधिक चौकन्ना था और मैं उसके ऊपर कूदते हुए, [illegible] हुए, लुढ़कते-लुढ़कते [illegible] गिर गये। [illegible]

[illegible]

मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड सकता था,'—उसने कहा—किन्तु "मैं तुम दोनों की हत्या का अपराध एक ही दिन नहीं करना चाहता था। मुझे सदेह नहीं है कि तुम अपने भाई को प्यार करते थे, किन्तु तुम्हें यह जानना चाहिए कि मैं तुमसे कम प्यार उसे नहीं करता था। हाँ, यह तुम अवश्य कह सकते हो कि मेरे प्यार-प्रदर्शन का ढग निराला था। खैर, उसकी मृत्यु से संसार मुझे अब सूना जान पडता है और मुझे अब इसकी कोई चिन्ता नहीं है कि तुम मुझको फाँसी पर चढवा दोगे या नहीं।"

"गिरने के कारण उसका घुटना टूट गया था। मैं अपने सर की चोट और वह अपना टूटा पाँव लिये बहुत देर तक वहीं बैठकर बातें करते रहे। धीरे-धीरे मेरा क्रोध शान्त हो गया और मुझे उस पर दया आने लगी। ऐसे आदमी को फाँसी दिलाने से क्या लाभ जो कि उसकी मृत्यु से मेरा ही ऐसा दुखी हो ? और जैसे-जैसे मेरी चेतना बढ़ती गई मैंने सोचा कि मैं कल्लू खाँ के विरुद्ध कोई भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिससे मेरी माता को कोई कष्ट हो। यदि मैं उसको दोषी सिद्ध करना चाहूँगा तो मेरे भाई की तमाम बातें जिनको मैं छिपाना चाहता था प्रकाश में आ जायँगी। इस दुर्घटना को छिपा रखने में मेरा उतना ही हित था जितना कि उसका अतः मैंने अपने आपको एक न्याय के विरुद्ध षड्यन्त्र करनेवाले में परिणत कर दिया। जहाँ पर हम सब बातें कर रहे थे वह स्थान बडा ऊँचा-नीचा और पथरीला था। थोडी ही दूर पर विन्ध्याचल पर्वत की एक श्रेणी थी। मैं उधर ही अपने भाई के हत्यारे से यह पूछते हुए चला जा रहा था कि इस मामले को हम लोग दबा देने में कैसे सफल हो सकेंगे ?

"उसकी बातों से मुझे जान पड़ा कि यदि पुलिस को मेरे भाई के जेबों में कोई ऐसा कागज नहीं मिलता जिससे उसकी पहिचान हो सकी तब तो अन्य कोई भी ऐसी बात नहीं है जिससे पुलिस उसको पहचान सके और उसके यात्रा का कारण जान सके। उसका टिकट कल्लू खाँ के पास था और उसके सामान का भी जिसको वे लोग मोगलसराय स्टेशन के माल-गोदाम में छोड़ आये थे। उसके पहिनने के कपड़े सब नये थे और बनारस ही के सिले थे। अतः उन पर तो धोबी का निशान भी नहीं था। उसका वह बैग जिसको मैंने बाहर फेंक दिया था या तो वहीं कहीं झाड़ में पड़ा होगा अथवा कोई उठा ले गया होगा और डर के मारे चुप-चाप रखे होगा। कुछ भी हो, समाचारपत्रों में इसके विषय में कोई समाचार नहीं था। जहाँ तक घड़ियों की बात है वह तो कल्लू के लिए उसको पटना के व्यापारी ने दिया था। सम्भव है इन्हीं व्यापार के लिए वह उन्हें भी इलाहाबाद ले जा रहा था। किन्तु—हाँ अब उसके लिए प्रश्न क्या है।

"मैं पुलिस का दोषी नहीं मानता। मैं समझ ही नहीं पाता हूँ कि वह क्या करती। केवल एक ऐसा संकेत था जिसके आधार पर वह कुछ कर सकती थी किन्तु वह बहुत साधारण था। मेरा अभिप्राय कुछ थोड़े से [illegible] से है जो मेरे भाई के जेब में मिला था। क्या [illegible] साधारण बात है? [illegible]

ानकर आप कभी खेल में हार नहीं सकते । ताश-चोर के लिए यह
: ही आवश्यक है जितना वह लचीले फीते में बँधा हुआ क्लिप
कल्लू खाँ के पास था । इस प्रकार इस आईने और उन धोखे
यो से जो होटलो में की गई थीं पुलिस किसी अंश तक इस
े को समझ सकती थी ।

"मेरे विचार से अब अधिक व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं
हम दोनो ने अकोढ़ी नामक एक गाँव में रात विताई और सबेरा
ही विध्याचल चले गये । पता चला कल्लू खाँ वहाँ से न
कहाँ चला गया और मै पटना चला आया । छ: मास पश्चात्
माता की मृत्यु हो गई । मुझे प्रसन्नता है कि मृत्यु-समय तक मेरी
ा को इस दुर्घटना का पता न चला । उसको सदैव यही भ्रम था
रामकृपाल बनारस में अपनी गाढ़ी कमाई की रोटी खा रहा है
मुझमें वास्तविक बातो को बताने का साहस ही नहीं था । उसने
ा कोई पत्र भी न भेजा; लेकिन वह तो पहिले भी कभी
नहीं लिखता था, इससे उसमें कुछ अन्तर नही पडता । यही
वह सोचा करती थी । मरते समय रामकृपाल का नाम उसके
ो पर था ।

"हाँ, एक बात के लिए मै आपसे प्रार्थना करूँगा । वह एक
ा वस्तु है जिसको मै अपने इस व्याख्या के उपलक्ष में ग्रहण
ना चाहूँगा, अगर आप इसे कर सकें । आपको उस गुटका रामायण
ध्यान होगा जो लाइन पर पडा मिला था । मै इसको सदैव
ने कोट के अन्दर की जेब में रखता था । मालूम पड़ता है मेरे
: जाने पर यह मेरी जेब से बाहर निकल आया । मै इसको

प्रतिष्ठा करता हूँ और यह मेरे लिए बडी मूल्यवान् वस्तु है क्योंकि इसका सम्बन्ध मेरे परिवार से है और इसके आरम्भ के पन्ने पर मेरे और मेरे भाई के जन्मदिन लिखे हुए हैं । यह पिता जी का लिखा हुआ है। मैं चाहता हूँ कि आप अधिकारियो से इसे प्राप्त कर मेरे पास भेज दें । दूसरो के लिए इसका कोई मूल्य भी नहीं है। यदि आप ५०, फ्रेज़र रोड, पटना के पते से इसको भेज देंगे तो मुझे अवश्य मिल जायगा ।

सगाई

गोपीगंज, इलाहाबाद से लगभग चालीस मील पूर्व एक छोटा-सा क़सबा है। बहुत दिन हुए, वहाँ एक डाक्टर आकर बस गये। उनका नाम था रघुवीरसिंह। वहाँ के लोग उनसे बिलकुल अपरिचित थे। उनके लिए उस छोटे से क़सबे में आकर बसना और वहाँ अपना व्यवसाय चलाना एक असाधारण-सी बात थी। यह बात किसी के समझ में नहीं आती थी कि उन्होंने उसी स्थान को क्यों अपने रहने और व्यवसाय चलाने के लिए पसन्द किया। उनके सम्बन्ध में केवल दो बातें ऐसी थीं जो किसी से छिप नहीं सकीं---पहिली बात यह थी, कि वे कुशल डाक्टर थे; और दूसरी यह कि वे पंजाबी थे। उनकी वेष-भूषा प्रायः पंजाबी थी किन्तु उनके आचार-विचार तथा व्यवहार पूर्वी युक्तप्रान्त के निवासियों से बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। बड़ी-बड़ी मूँछें, काले घुंघराले बाल, सुन्दर चेहरा और घनी-घनी भौंहों के नीचे बड़ी-बड़ी चमकदार आँखें उनको उस क़सबे के निवासियों में मिलने नहीं देती थीं। उनको लोग पंजाबी डाक्टर के नाम से पुकारा करते थे। आरम्भ में तो यह नाम केवल उपहास के लिए लोग लिया करते थे किन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया यही एक प्रतिष्ठा की वस्तु हो गई। इस नाम की ख्याति उस क़सबे के आस-पास ही नहीं वरन् बहुत दूर दूर फैल गई और बच्चे-बूढ़े सभी इससे परिचित हो गये।

यह नवागन्तुक एक योग्य सर्जन और कुशल चिकित्सक सिद्ध हुआ। पहिले उस क़सबे तथा आस-पास के गाँवों में बनारस के प्रसिद्ध डाक्टर

जितेन्द्रनाथ भट्टाचार्य के पुत्र सोमेन्द्रनाथ भट्टाचार्य का बोल-बाला था किन्तु उनमें उनके पिता का एक भी गुण नहीं आने पाया था वे इस नये डाक्टर के सामने टिक नहीं सके। डाक्टर सिंह का व्यवहार इतना अच्छा था कि वे बहुत जल्दी ही सर्वप्रिय हो गये। उनके व्यवसाय के साथ साथ उनकी सामाजिक स्थिति भी बढ़ती चली गई। उनकी यह स्थिति और भी ऊँची हो गई उस समय जब उन्होंने वहाँ के एक बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली जमींदार ठाकुर अनन्तप्रभावसिंह के पुत्र ठाकुर शीलवंतसिंह को थोड़े ही समय में अच्छा करके मृत्यु के मुख से निकाल लिया। ठाकुर शीलवंतसिंह को एक जहरीला फोड़ा हो गया था और वह क्रमश बढ़ता ही चला जाता था। दूर दूर के प्रसिद्ध प्रसिद्ध डाक्टरों ने उनका इलाज किया किन्तु कुछ नहीं हुआ। निदान निराश होकर वे अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे। डाक्टर सिंह ने उनका आपरेशन किया और बहुत जल्दी उन्हें रोग-मुक्त कर दिया। इससे उनकी ख्याति बहुत बढ़ गई और उनकी पैठ आस पास के बड़े बड़े घरों में हो गई। उनकी व्यवहार कुशलता ने उनको सर्वप्रिय बनाने में सोने में सुगन्ध का काम किया था।

लडकियो से जोडा करते थे किन्तु जब बहुत दिनो तक उन्होंने विवाह नही किया और उन लोगो का सदेह निष्फल हुआ तो उन लोगो ने अनुमान कर लिया कि किसी विशेष कारण से डाक्टर ने अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा कर ली है। कुछ लोगो का तो यह अनुमान था कि डाक्टर का विवाह हो गया है और वे यहाँ बालपन के अनमेल विवाह के कारण पैदा हुई बुराइयो से बचने के लिए भाग आये है। और जब ये सारी अफवाहें ख़त्म हो गई तो एकाएक एक दिन सुनने में आया कि उनकी सगाई ठाकुर रणधीरसिंह की एक-मात्र पुत्री सुश्री विमलादेवी से पक्की हो गई ।

विमलादेवी बहुत सुन्दर युवती थी। उसको अडोस-पड़ोस के गाँवो के सभी लोग जानते थे। उसके पिता उस क़सबे के ज़मींदार थे। विमला के माता-पिता की मृत्यु हो गई थी और अब उसका भाई रणवीरसिह अपने पिता की सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था। वह उसी के साथ रहती थी । उसके पिता स्त्रीशिक्षा के पक्षपाती थे अतएव विमला को उन्होंने अच्छी तरह घर पर पढ़ाया था। वह लम्बी थी और उसके चेहरे से भव्यता टपकती थी। वह प्रसिद्ध थी अपनी चचलता तथा दृढ़ आचरण के लिए। डाक्टर उसके यहाँ चिकित्सा करने जाया करते थे। इसी सिलसिले में उसकी और डाक्टर की जान-पहचान हुई और धीरे-धीरे कुछ दिनो के बाद यह जान-पहचान बहुत गाढी हो गई। उन दोनों को एक दूसरे से अगाध प्रेम था। रणवीर को यह बिलकुल नहीं पसन्द था और पहिले उसने उन लोगो का काफी विरोध किया। डाक्टर का अपने यहाँ आना बन्द कर दिया और विमला को घर से बरवाजे तक आना भी मना कर दिया ।

यह कि अपने भरसक उसने इन दोनों की मित्रता नष्ट करने और विमला को डाक्टर के खिलाफ बहकाने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी। किन्तु जब वह सब करके हार गया और विमला ने उसकी एक न मानी तो लाचार होकर उसने डाक्टर के जाति पाँति और उनके सम्बन्धियों का पता लगाकर विमला की बात मान ली और उसकी सगाई डाक्टर के साथ पक्की कर दी। वह विमला को बहुत मानता था। मार्च के महीने में सगाई हुई और विवाह के लिए जुलाई में कोई तिथि निश्चित की गई।

तीसरी जून को डाक्टर के नाम पंजाब से एक पत्र आया। गाँवों में पोस्टमास्टर भी एक योग्य व्यक्ति समझा जाता है और प्रायः आस-पास के बड़े-बड़े लोग मनोविनोद के लिए उसके पास आया करते हैं। वहाँ के पोस्टमास्टर का नाम था पंडित बाँकेलाल। वह वहाँ के बहुतेरे लोगों की पारिवारिक बातें जानता था। जब से डाक्टर वहाँ आया उसके नाम का यह पहला पत्र था जो एक मोटे लिफाफे में बन्द था। कुछ उस लिफाफे के कारण और कुछ दूर से आने के कारण उसका ध्यान उस लिफाफे की ओर विशेषरूप से गया। उसने देखा कि लिफाफे पर लाहौर की मुहर है। उसने उस पत्र को [illegible] दिन तक छिपाकर डाक्टर के पास [illegible] पहुँचाया उसके पास भेजा दिया।

आँखें भीगी दिखाई पड़ती थीं। रणवीर भी कुछ उद्विग्न था। एक सप्ताह के बाद यह पता चला कि रणवीर ने डाक्टर की सगाई तोड़ दी। कारण यह था, रणवीर को उसकी कुलीनता में कुछ संदेह हो गया था और इसी पर दोनों में बहुत बड़ा वाद-विवाद हो गया। रणवीर उसको कोड़े लगवाने के लिए उतारू हो गया था। इस घटना से डाक्टर का दिल टूट गया। उसको कुछ अच्छा नहीं लगता था वह बाहर अब बहुत कम जाता था, और यदि जाता भी था तो कम से कम रणवीर के मकान से बहुत दूर रहता था। उसको सारा संसार सूना दिखाई पड़ता था। उसी समय "प्रयाग समाचार' में एक अंगरेजी दवाखाने की बिक्री का विज्ञापन छपा। यद्यपि उसमें कोई नाम नहीं छपा था लेकिन लोगो ने यह अफवाह उड़ा दी कि डाक्टर अपने चलते हुए दवाखाने को बेचकर गोपीगंज से किसी अन्य जगह चला जाना चाहते हैं। इस तरह की बातें डाक्टर के विषय में फैल ही रही थीं कि एकाएक एक्कीस जून, सोमवार की सन्ध्या को एक अद्भुत बात हो गई—सारी अफवाहें एक दु:खान्त घटना में परिवर्तित हो गईं। इस दुर्घटना ने सभी लोगो का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। उस सन्ध्यावाली घटना के महत्त्व को समझने के लिए आवश्यक है कि उसका कुछ ब्यौरा यहाँ दे दिया जाय।

डाक्टर के उस बड़े मकान में केवल तीन व्यक्ति रहा करते थे—डाक्टर, उनकी बूढ़ी खाना बनानेवाली मिश्रानी तथा एक नौकर जिसका नाम मंगरू था। उनका कोचवान और दवाखाने में काम करनेवाले नौकर बाहर सोते थे। डाक्टर का यह नियम था कि वे रात को बहुत देर तक अपने स्टडी-रूम में बैठे-बैठे कुछ पढ़ा करते

"मेरा ख़याल था कि आपने मुझे पुकारा है।" उसने कहा, लेकिन उसको इसका कोई उत्तर नहीं मिला। मिश्रानी ने अपने कमरे में लौटती समय देखा कि साढे ग्यारह बजा था।

किसी समय ग्यारह और बारह बजे के बीच—ठीक समय के लिए वह निश्चित नहीं थी—एक रोगी डाक्टर से मिलने आया किन्तु उसको उस कमरे के अन्दर से कोई उत्तर नहीं मिला। यह रोगी वहीं का एक बनिया था। उसका नाम था हीरालाल। इसकी स्त्री को मियादी बुखार हो गया था और उसकी हालत बहुत खराब थी। डाक्टर ने उससे रोगी की हालत बतलाने के लिए कह रखा था। उसने देखा कि कमरे के अन्दर लैंप जल रहा था किन्तु जब कई बार पुकारने और किवाड थपथपाने पर भी अन्दर से कोई उत्तर नही मिला तो उसने समझा कि डाक्टर किसी रोगी को देखने गये होगे और वह अपने घर लौट गया।

उस मकान से सडक तक आने में एक मोड पडता है। उस मोड़ पर लैंप जल रहा था। जैसे ही हीरालाल मोड पर पहुँचा उसको एक आदमी आता हुआ दिखाई पडा। उसने समझा शायद डाक्टर साहब आ रहे हैं अत वह उनकी प्रतीक्षा में वहीं खडा हो गया; किन्तु जब उसने देखा कि वह तो वहीं के जमींदार ठाकुर रणधीरसिंह थे तो उसे बडा अचम्भा हुआ। उस लैंप के प्रकाश में उसने देखा कि उनके चेहरे से क्रोध टपक रहा था और वे एक बडा शिकारी चाकू लिये हुए थे। वे डाक्टर के मकान की ओर मुड रहे थे कि उसने कहा,

"[illegible]।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?" उन्होंने गुस्से में पूछा ।

"मैं आपरेशनवाले कमरे के दरवाजे तक गया था ।"

"वहाँ तो रोशनी दिखाई पड़ रही है," मोड़ की ओर देखते हुए उन्होंने कहा । "वह तो उनके स्टडी-रूम ही में मालूम पड़ती है ?"

"हाँ, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे हैं नहीं ।"

"खैर ! नहीं हैं तो आते ही होंगे," रणधीर ने कहा और मकान की ओर चल पड़े । हीरालाल अपने घर चला गया ।

तीन बजे के लगभग उसकी स्त्री की दशा बहुत खराब हो गई और वह इतना भयभीत हो गया कि उसी समय डाक्टर को बुलाने का निश्चय किया । जैसे ही वह डाक्टर के मकान के निकट पहुँचा उसने किसी को दीवार की आड़ में छिपते हुए देखा । वह कोई आदमी था और उसको विश्वास था कि वह मिस्टर रणधीर थे और दूसरा कोई नहीं था । स्वयं संकट में होने के कारण इस घटना पर उसने विशेष ध्यान नहीं दिया और डाक्टर के कमरे की ओर चला गया ।

खिडकी को थपथपाया किन्तु फिर भी कोई उत्तर नही मिला। फिर उसने देखा कि पर्दे और खिडकी के चौखटे के बीच सांस है। उस सांस से उसने कमरे के अन्दर झाँका।

कमरे के बीचोबीच मेज पर एक लैम्प जल रहा था। इससे सारा कमरा प्रकाशमान था और डाक्टर की किताबें और चीर-फाड के औजार सब साफ दिखाई पड रहे थे। कमरे में न तो कोई था और न कोई अन्य असाधारण बात थी। केवल एक कोने की ओर मेज की परछाईं में एक दस्ताना पडा हुआ दिखाई पड रहा था। और फिर एकाएक, जब उसकी नजर उस प्रकाश में कुछ और साफ हुई, तो उसने उस परछाईं के दूसरे किनारे एक जूता पडा हुआ देखा। उसी समय उसने वहाँ एक ऐसा दृश्य देखा कि उसका सारा शरीर थर्रा गया और भय से उसके रोंगटे खडे हो गये। जिस वस्तु को वह दस्ताना समझे हुए था वह एक आदमी का हाथ था जो उसी फर्श पर मरा हुआ चित पड़ा था। वह किसी भयानक घटना की आशंका से दौड़ा हुआ मकान के खास दरवाजे पर गया और चिल्ला-चिल्लाकर आवाज देने लगा। उसकी आवाज एकदम भर्राई हुई थी। मिश्रानी उठी। तब वे दोनो, नौकर को थाने पर भेजकर डाक्टर के कमरे में गये।

मेज के बगल में, खिडकी से दूर डाक्टर का शव चित पडा हुआ मिला। यह स्पष्ट था कि उनको किसी ने मारा था क्योंकि उनकी एक आंख काली हो गई थी और उनके चेहरे और गले पर कई घाव थे। उनका शरीर कुछ फूला हुआ था। इससे यह सदेह होता था कि वे गला दबाकर मारे गये थे। वे अपने नित्य के साधारण कपडे पहने हुए थे। पैरो में कपडे के स्लीपर थे जिनके तल्ले एकदम

थे। फर्श पर बिछे हुए कालीन पर धब्बे पड़े हुए थे--विशेषकर उस स्थान पर जो दरवाजे के निकट था। यह निशान गन्दे बूट का प्रतीत होता था जिसे खूनी ने वहीं छोड़ दिया था। यह साफ प्रकट हो रहा था कि कोई आपरेशनरूम के दरवाजे से घुसा है, डाक्टर को मार डाला है और फिर नज़र बचाकर भाग गया है। पैरों के निशान और नालों को देखने से यह प्रतीत होता था कि खूनी कोई मर्द था। इसके आगे पुलिस को कुछ सुझाई नहीं पड़ता था।

खूनी का अभिप्राय डाका डालने का नहीं था क्योंकि डाक्टर की सोने की घड़ी उनकी जेब ही में पड़ी थी। उनके कमरे में एक भारी तिजोरी थी। इसका ताला बन्द था यद्यपि उसमें कुछ था नहीं। नौकरानी का कहना था कि डाक्टर काफी रुपये उसमें रक्खा करते थे लेकिन उसी दिन उन्होंने एक बहुत बड़ा बिल चुकता किया था अतएव तिजोरी खाली हो गई थी। किसी डाके के कारण तिजोरी नहीं खाली हुई थी। कमरे से एक चीज़ अवश्य गायब हो गई थी और उसी प्रकार

सदेह केवल एक ही ओर हो सकता था और इसी आधार पर रणवीर गिरफ्तार कर लिये गये। उनके विरुद्ध केवल घटनात्मक प्रमाण थे और वे थे बहुत ही दृढ़। वह अपनी बहन, विमला का विवाह डाक्टर से नहीं करना चाहता था। उसने सगाई भी तोड दी थी। और सगाई तोड देने के बाद से वह डाक्टर की बडी बुराई करता था। यहाँ तक कि उसको मारने पर भी वह उतारु था। विमला उसका विरोध करती थी। वह डाक्टर से प्रेम करती थी और डाक्टर उससे। यह बात उसे असह्य थी। वह घटना के दिन ग्यारह बजे के लगभग शिकारी चाकू लिये हुए डाक्टर के मकान पर जाता हुआ दिखाई भी पडा था। पुलिस के विचारानुसार, उसने डाक्टर के ऊपर हमला कर दिया था और जिससे डाक्टर घबडाकर चिल्ला उठा था। इसी आवाज को मिश्रानी ने सुना था और वह वहाँ दौडी गई थी लेकिन डाक्टर इस मामले में रणवीर से बातचीत करना चाहता था इसलिए उसने मिश्रानी को भगा दिया था। इसके बाद दोनो में बातें आरम्भ हुई, क्रमश बातें बढ़ती चली गई और अन्त में दोनो में मार-पीट आरम्भ हुई और डाक्टर की जान गई। पोस्टमार्टम से यह बात मालूम हुई कि डाक्टर को कोई हृदय की बीमारी थी, यद्यपि जाहिरा वह किसी को मालूम नहीं थी, इसलिए उसकी मृत्यु केवल उतनी ही चोटों से हो गई। यदि वह स्वस्थ होता तो इतनी चोटो से उसकी मृत्यु न होती। इसके बाद रणवीर अपनी बहिन का चित्र फ्रेम से निकालकर वहाँ से भागा। उसी समय हीरालाल वहाँ पहुँचा और वह उससे बचने के लिए दीवारों की ओट में छिप गया। पुलिस का यही अनुमान था और इसी आधार पर मुकदमा चलाया गया था। मुकदमा बड़ा मजबूत था।

दूसरी ओर कुछ बातें ऐसी भी थीं जो प्रतिवादी के पक्ष में थीं। रणवीर अपनी बहिन की भाँति बड़ा तेज-तर्रार था किन्तु उसकी सब इज्जत करते थे और इसका कारण था उसकी स्पष्टवादिता। वह प्रकृति ही से ऐसा घृणित अपराध करने के अयोग्य था। उसका कहना था कि वह डाक्टर से एक बहुत आवश्यक घरेलू मामले पर बातचीत करना चाहता था। उसने अपनी बहन का नाम कहीं भी लेने से एकदम इनकार कर दिया था। उसने यह अस्वीकार करने की कोशिश नहीं की कि उसकी बातें डाक्टर को अप्रिय हो सकती थीं। उसने यह भी कहा कि उसको एक आदमी से यह मालूम हो गया था कि डाक्टर नहीं हैं इसी लिए वह वहाँ तीन बजे तक डाक्टर की प्रतीक्षा में बैठा रहा। उस समय तक जब डाक्टर नहीं लौटे तो वह वहाँ से उठा और अपने घर की राह ली। डाक्टर की मृत्यु के विषय में वह केवल इतना जानता था कि पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। पहले उसमें और डाक्टर में बड़ी मित्रता थी किन्तु किसी कारणवश से—सम्भवतः वह गुप्त रखना चाहता था—दोनों में अनबन हो गई थी।

का आदेश दिया था। डाक्टर की उस समय की आवाज कुछ भर्राई हुई थी और यह प्रतीत होता था कि वे किसी कारण उद्विग्न हो रहे थे। यदि यह बात ठीक है तो डाक्टर की मृत्यु मिश्रानी को वहाँ दूसरी बार जाने और हीरालाल के पहली बार के आने के अन्दर हुई। किन्तु यदि इस समय उनकी मृत्यु हुई तो रणवीर अपराधी नही करार दिये जा सकते। वे वहाँ हीरालाल को इसके बाद मिले थे।

यदि यह अनुमान सही था तो वह कौन व्यक्ति था जो हीरालाल की रणवीर से भेंट होने के पहले डाक्टर के पास था। और उसको डाक्टर से कौन-सी दुश्मनी थी जिसके कारण उसने उनकी हत्या की? यह सभी मानते थे कि यदि अपराधी के मित्र उस व्यक्ति पर कुछ भी प्रकाश डाल सके तो वे रणवीर की निर्दोषिता सिद्ध कर सकेंगे। इस बीच में जनता यह कह सकती थी—और लोगो ने कहा भी—कि सिवाय रणवीर के वहाँ जाने के और किसी भी दूसरे व्यक्ति के जाने का कोई प्रमाण नहीं था। और रणवीर का विचार भी दूषित था। जिस समय हीरालाल वहाँ गया था, यह सम्भव था कि डाक्टर सोने अथवा किसी रोगी को देखने चले गये रहे हो। और जब वे लौटकर आये तो उनसे रणवीर से भेंट हुई। वह उनका प्रतीक्षा भी कर रहा था। अपराधी के कुछ हितैषियो का यह भी कहना था कि उसकी बहन का चित्र जो डाक्टर के यहाँ से गायब था उनके यहाँ तलाशी के समय नहीं निकला था। यह तर्क युक्तियुक्त भी नहीं प्रतीत होता था क्योंकि उसको नष्ट कर डालने अथवा जला डालने का उसके गिरफ्तारी के पहले ही काफी अवसर था। अब रह गये थे ये पैर के निशान

फर्श पर बिछे हुए कालीन पर पड गये थे। ये नितान्त ठीक ... हो सकते थे किन्तु कालीन बहुत मुलायम होने के कारण वे ... एकदम छितर गये थे और उनसे कोई विश्वसनीय फल नहीं ... सकता था। उनके लिए यह कहना कि वे अपराधी ही के पैर के निशान थे असगत नहीं था। उनके जूते के तल्लो में उन गन्दी ... भी लगा था। किन्तु यह बात उसी के साथ नहीं थी। उस दिन तीसरे पहर कुछ पानी बरस गया था इसलिए प्राय सभी लोगो के जूतो की यही गति हो गई थी।

सरकारी वकील पंडित दयानाथ ने बड़ी बुद्धिमानी तथा चातुरी से दुर्घटना के वाकयात को पेश किया। उनके तर्क इतने ज़ोरदार थे कि अपराधी के गवाह मिस्टर कृष्णमोहन बैनर्जी का दिमाग़ चकरा गया। बहुतेरे गवाहों ने शपथ पर बयान दिया कि रणवीर बहुत उत्तेजित था और वह डाक्टर को बहुत बुरा-भला कह रहा था। उन लोगों ने यह भी बताया कि डाक्टर से वह बहुत क्रोधित था और किसी मामले में उससे झगड़ा भी हो चुका था। हीरालाल ने बयान दिया कि उसने अपराधी को रात में डाक्टर के मकान के पास देखा था। एक गवाह ने यह कहा कि रणवीर को यह मालूम था कि डाक्टर रात को बहुत देर तक अकेले अपने पढ़ने के कमरे में बैठते थे और यह कमरा घर के एक किनारे पर था। इसी लिए वह रात को उनके पास गया जिससे डाक्टर अपनी सहायता के लिए किसी को बुला न सकें। रणवीर के एक नौकर से पुलिस ने यह बयान दिलाया कि उसने उनको रात को तीन बजे घर आते हुए देखा था। इससे हीरालाल के उस बयान की पुष्टि होती थी जो उसने रणवीर के लिए कहा था कि उसने उनको तीन बजे डाक्टर के मकान की दीवारों की आड़ में छिपते देखा था। कीचड़ लगे हुए बूट जूते और वहाँ पर पाये गये पैरों के निशानों में भी समता बतलाई गई। जिस समय सरकारी वकील ने सारी बातें, यद्यपि वे घटनात्मक ही थीं मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया तो सब लोगों को विश्वास हो गया कि रणवीर का बचना उसी समय सभव है जब कि अपराधी के वकील किसी ऐसी बात को पेश करें, जिसकी किसी को आशा न हो और युक्तियुक्त भी हो। जिस समय सरकारी वकील ने अपना सारा काम ख़त्म किया तो ८

गये थे। जब तीन बजे, लंच के बाद फिर मुकदमे की कार्रवाई आरम्भ हुई तो एक विचित्र बात लोगों को देखने में आई। इस घटना का एक अंश "प्रयाग समाचार" की पुरानी प्रतियों से उद्धृत किया जा रहा है।

जब लोगों को यह मालूम हुआ कि अपराधी का पहला और मुख्य गवाह उसी की बहन विमलादेवी है तो बड़ी सनसनी फैल गई। आप भूले न होंगे कि डाक्टर की सगाई इन्हीं के साथ हुई थी। और इसी सगाई के कारण डाक्टर और रणधीर में मनोमालिन्य पैदा हुआ और वह उसका विरोधी बन गया। यही उसकी हत्या का कारण भी समझा जाता था। विमलादेवी इस मुकदमे में आरम्भ से ही अलग रक्खी गई थीं। पुलिस ने भी उनका बयान नहीं लिया था। ऐसी दशा में उनका अपराधी का मुख्य गवाह बनकर आना सबों के लिए एक अनूठी बात थी।

डाक्टर का कट्टर विरोधी बन गया था और वह विमला के लाख समझाने पर भी डाक्टर को धमकियां देता रहा । उन्होंने यह भी कहा कि रणवीर उस रात को डाक्टर से झगड़े का निपटारा करने जाने-वाला था। उसको ठीक रास्ते पर लाने की उन्होंने बहुत चेष्टायें की थीं किन्तु रणवीर लेशमात्र भी टस से मस नहीं हुआ था। वह बहुत दृढ धारणा का व्यक्ति था और भावुकता के वशीभूत होने पर किसी की नहीं सुनता था। यहां तक विमलादेवी की गवाही अपराधी के खिलाफ जाती दिखाई पडती थी। उसके वकील के प्रश्न ने मामले को एकदम बदल दिया और मुक़दमे की एक नई सूरत पैदा हो गई।

मिस्टर बैनर्जी—"क्या आपको विश्वास है कि आपका भाई अपराधी नही है ?"

जज—मैं इस प्रश्न को नहीं पूछने दूंगा, मिस्टर बैनर्जी। हम यहां वाक़यात पर फैसला करने बैठे हैं, विश्वास पर नहीं।

मिस्टर बैनर्जी—क्या आप जानती हैं कि आपके भाई ने डाक्टर की हत्या नही की ?

विमला—"हां"।

बैनर्जी—"आप कैसे जानती हैं ?"

विमला—"इसलिए कि डाक्टर जीवित है।"

इस पर कोर्ट में एकदम सनसनी छा गई। सभी अचम्भे से एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। इससे थोड़ी देर के लिए जिरह बन्द कर देनी पड़ी। वातावरण शान्त होने पर फिर जिरह शुरू हुई।

बैनर्जी—आप कैसे जानती हैं कि डाक्टर की मृत्यु नहीं हुई है ?

विमला—इसलिए कि उनके कथित हत्या के दिन के बाद का उनका पत्र मैंने पाया है।

बैनर्जी—आपके पास वह पत्र है?

विमला—अवश्य, किन्तु मैं उसको दिखाना पसन्द न करूँगी।

बैनर्जी—लिफाफा भी है?

विमला—हाँ, वह यह है।

बैनर्जी—उस पर मुहर कहाँ की है?

विमला—बनारस।

बैनर्जी—और तारीख?

विमला—२२ जून।

बैनर्जी—उनके कथित हत्या के दूसरे दिन की तारीख। क्या आप निश्चयपूर्वक कह सकती हैं कि लिखावट डाक्टर ही की है?

विमलादेवी को, उनके ही बयान के अनुसार, इस बात का पता पुलिस की तहकीकात और मैजिस्ट्रेट की प्रारम्भिक कारंवाई के समय भी मालूम रहा होगा किन्तु उन्होने उसको छिपाया। यदि उन्होंने इस बात को पहले ही बता दिया होता तो सारा मामला कभी का तय हो गया होता। उन्होने जान-बूझकर मामले को बढाया है।

बैनर्जी—क्या आप इसका उत्तर दे सकती हैं; विमला जी?

विमला—डाक्टर अपनी बातें गुप्त रखना चाहते थे।

पडित कृपानाथ—तब आपने इसको प्रकट क्यो कर दिया?

विमला—भाई को बचाने के लिए।

कोर्ट में एक सहानुभूति का वातावरण छा गया किन्तु जज ने उसको तुरन्त शान्त कर दिया।

जज—यदि आपकी बातें मान ली जायें तो मिस्टर बैनर्जी यह आपका कर्त्तव्य हो जाता है कि आप उस मृतक व्यक्ति पर प्रकाश डालें जिसको अब तक डाक्टर समझा जाता था और जिसकी पहचान डाक्टर के मित्रो ने भी की थी।

जूरी—किसी ने अभी तक कोई सदेह भी नही प्रकट किया है?

पडित कृपानाथ—जहां तक मैं जानता हूँ किसी ने भी नहीं।

बैनर्जी—हमें ऐसी आशा है कि हम सारी बातें स्पष्ट कर देंगे।

जज—अब समय हो गया। आगे की कारंवाई कल होगी।

× × ×

इस नई सूरत के पैदा हो जाने से जनता के हृदय में दिलचस्पी का भाव बहुत बढ गया। समाचार-पत्रो की आलोचनायें रोक दी गई थी क्योंकि मामला भी विचाराधीन था और कोई फैसला भी नहीं हुआ

था, किन्तु चारो ओर विमला के बयान की सत्यता के विषय में शंका थी। कुछ लोगो का कहना था कि अपने भाई को बचाने के लिए किये गये इस जाल में कहाँ तक उसे सफलता मिल सकती है। और हुए डाक्टर के लिए अब यह मुसीबत थी कि अगर वह किसी असाधारण कारण से किसी प्रकार मरा नहीं है तो इस मनुष्य की मृत्यु का कारण डाक्टर ही है। यह मनुष्य सूरत-शकल में बिल्कुल डाक्टर से मिलता था। विमला ने जिस पत्र का जिक्र अपने बयान में किया है उसमें डाक्टर ने सम्भवत अपने अपराध को स्वीकार कर लिया है। इस पत्र से अपने भाई को तो वह शायद बचा सकेगी किन्तु अपने पुराने प्रेमी को फांसी पर चढ़वा देगी। दूसरे दिन कचहरी में बड़ी भीड़ थी—इतनी भीड़ थी उसके लिए विशेष पुलिस का प्रबन्ध करना पड़ा। ज्यों ही मिस्टर बैनर्जी आये, लोगों के हृदय में एक उत्साह-सा आ गया। कचहरी के कमरे में घुसते हुए लोगों ने देखा कि भावुकता उनके मन मन में टक्कर पकड़ती थी यद्यपि अधिक से अधिक गम्भीर बने रहने की चेष्टा वे उस समय कर रहे थे। उन्होंने पहले सरकारी वकील पंडित दयानाथ से कुछ बातचीत की। बातचीत करते समय लोगों ने अनुभव किया कि सरकारी वकील के मुख पर कुछ चिन्ता के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बैनर्जी---शायद, मेरा दूसरा गवाह उसको स्पष्ट कर दे।

जज—तब अपने दूसरे गवाह को बुलाइए।

बैनर्जी—मै डाक्टर रघुवीरसिह को बुलाता हूँ।

मिस्टर बैनर्जी बहुत प्रसिद्ध फौजदारी के वकील थे। उन्होने अपने वकालत के जीवन में प्राय लोगो को अचभे में डाल देनेवाली बहुतेरी बातें की थीं। किन्तु ऐसा अवसर कभी भी नही आया था कि लोग उनकी बातो को सुनकर इतना विस्मय में पड गये हो। इस बात को सुनकर तो लोग अचभे तथा विस्मय से एकदम सन्न हो गये। यह एक अनहोनी-सी बात थी कि जिसकी मृत्यु के कारण सारा मामला चल रहा है वह स्वय गवाह के कटघरे में आ रहा है। जिन लोगो ने डाक्टर को पहले गोपीगज में देखा था उन लोगो ने देखा कि वह अब दुबला हो गया था और उसकी आकृति पर चिता की गहरी रेखायें अकित थीं। यह सब होते हुए भी कुछ लोगो का विचार था कि इतना निडर और गभीर व्यक्ति जीवन में उन लोगो ने नहीं देखा था। न्यायाधीश से अपना बयान देने के लिए उसने आज्ञा मांगी। उसको बतलाया गया कि उसका बयान आवश्यकता पडने पर उसके विरुद्ध भी काम में लाया जायगा। इसको सुनकर उसने अपना सिर हिलाया और कहने लगा :—

"मेरी इच्छा है," उसने कहा "कि एक्कीस जून की रात को जो कुछ हुआ उसको मै साफ-साफ, बिना कुछ छिपाये हुए बतला दूं। यदि मुझे पता होता कि एक निर्दोषी कष्ट भोग रहा है और वह व्यक्ति जो संसार में मुझे सबसे अधिक प्रिय है दुःख और परेशानियो का सामना कर रहा है तो मैने कभी सारी बातें स्पष्ट कर दी होतीं; किन्तु मुझे

खबर ही कैसे होती—कुछ कारण ऐसे थे कि ये बातें मुझ तक पहुँच [illegible]
नहीं सकती थीं। यह मेरी प्रबल इच्छा थी कि एक अभागा [illegible]
संसार से एकदम उठ जाय लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि मेरे [illegible]
दूसरों को आपदाओं की वेदी पर बलि होना पड़ेगा। अब मैं अपने [illegible]
प्रयत्न करूँगा कि मैं उस बुराई को जिसको मैंने जन्म दिया है [illegible]
करूँ।

"जो लोग शिकारपुर स्टेट को जानते हैं उनसे यदुवीरसिंह का नाम
छिपा नहीं है। पंजाब-प्रान्त में यह एक प्रसिद्ध रियासत है। मेरे पिता
जो गोरखपुर के एक कुलीन चौहान राजपूत घराने के थे वहाँ के [illegible]
दीवान थे। अगर वहाँ के एक प्रसिद्ध दंगे में उनकी मृत्यु न हो गई
होती तो वे उसके दीवान हो गये होते। यदि हम लोगों को पिता की
मृत्यु के बाद आर्थिक कठिनाइयों में न पड़ना पड़ा होता तो मैं और
मेरा छोटा भाई, विजयवीरसिंह दोनों आज उस रियासत में ऊँचे
पद पर सुशोभित होते। लेकिन आर्थिक कारणों से हमारा [illegible]
[illegible] के लिए दूसरी जगह चला जाना पड़ा। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ढाल में कुछ अन्तर था। शारीरिक गठन और आकार-प्रकार में अवश्य बहुत सूक्ष्म अतर था।

"जो मर चुका है और विशेषकर जो मेरा भाई था उसके आचरण के विषय में कुछ कहना मुझे शोभा नहीं देता। इसको मै उसके जानने-वालो ही के ऊपर छोड देता हूँ। मै केवल इतना ही कहूँगा और वह केवल इसलिए कि मुझे कहना पड रहा है कि अपनी युवावस्था में मै सदा उससे भयभीत रहता था और इसके लिए यथार्थ कारण भी थे। मेरी प्रतिष्ठा उसके कारण प्राय खतरे में पड़ जाती थी क्योकि वह मुझसे रूप-रेखा में बिलकुल मिलता-जुलता था और उसके कर्मों का उत्तरदायित्व प्राय मेरे सिर पर मढा जाता था। निदान उसने एक ऐसा घृणित कर्म किया और उसका सारा उत्तरदायित्व मेरे सिर मढ देने की चेष्टा की कि मुझे पजाब छोडकर भाग आना पड़ा। मेरे पास काफी रुपये थे और डाक्टरी पढने की मेरी प्रबल इच्छा थी। इसलिए मै कलकत्ता चला गया और वहाँ से ससम्मान डाक्टरी पास करने के पश्चात् बनारस आया। वहाँ बहुतेरे डाक्टर थे, अत. मैंने इस क़सबे में आकर अपना व्यवसाय आरभ किया। यहाँ मै यह सोचता था कि वह मेरा पता कभी न पा सकेगा।

"बहुत दिनो तक मै उससे बचा रहा लेकिन आखिरकार उसने मेरा पता लगा ही लिया। बनारस के कुछ व्यापारी अमृतसर गये थे। उन लोगो से बात-चीत के बीच में मेरा पता उसे चल गया। उस समय वह अमृतसर में दलाली किया करता था। जो कुछ रुपये उसके पास थे उसे वह कभी फूंक चुका था और अवगुणो के कारण उसकी दलाली भी नही चलती थी। अत हमारा साझीदार बनने के लिए वह वहाँ से

और अपयश का सकट लेकर यहाँ भी पहुँच गया। मै दरवाजे पर गया और उसको भीतर बुला लाया। उस समय लगभग दस बज गये थे।

"जब लैम्प के प्रकाश में आया तो मुझे अनुभव हुआ कि उसने बडे बुरे दिनो का सामना किया है। वह इलाहाबाद से पैदल ही आया था और बीमार तथा थका हुआ प्रतीत होता था। उसके मुख पर अकित रेखायें देखकर मुझे बडा दुख हुआ। मेरी डाक्टरी बुद्धि ने तुरन्त अनुभव किया कि उसको अवश्य कोई भीतरी बीमारी थी। वह शराब भी बहुत पीता था। उसके चेहरे पर घाव थे। रास्ते में शराब की नशा में किसी मदिरालय में वह लड बैठा था। वह अपनी चोटीली आँख को छिपाने के लिए उस पर पट्टी बाँधे था। कमरे में पहुँचकर उसने पट्टी उतार दी थी। वह एक साधारण कमीज और वेस्टकोट पहने हुए था। उसके पैर जूतों को फाडकर बाहर निकले आ रहे थे। उसकी इस गरीबी ने उसे और भी अधिक मेरे विरुद्ध बना दिया था। वह मुझसे बहुत ज्यादा घृणा करने लग गया था। उसका विचार था कि मैं यहाँ रुपये-पैसो से खूब मौज उडा रहा हूँ और वह अमृतसर की गलियो में दाने-दाने को तरस रहा है। उसने मुझे इतना धमकाया, इतना मेरा अपमान किया कि उसको बतलाना मेरी शक्ति के बाहर है। मेरा विचार है कि दरिद्रता और चरित्र-हीनता ने उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया था। वह कमरे में एक हिंसक पशु की भाँति टहलता था और मुझसे बरावर रुपया-पैसा और शराब की माँग अश्लील शब्दो में करता था। यद्यपि मैं बडा तेजमिजाज हूँ किन्तु परमेश्वर की दया से उस समय उसके ऊपर मैंने अपना हाथ तक नहीं

वहां मैं उसी रात को पहुंच गया और वहां से बनारस चला गया। अपने रुपयों का थैला और एक चित्र यही इतना मैंने अपने सामानों में से ले लिया था और बाकी सारी चीजें अपने भाई को दे दी थीं। जल्दी में वह पट्टी जिसको अपनी चोटीली आंख को छिपाने के लिए उसने आंख पर लगा रखी थी मैं लेने को भूल गया था।

"मैं सत्य कहता हूँ कि यह विचार मेरे मस्तिष्क में एक क्षण के लिए भी नहीं आया कि लोग मुझे मरा हुआ समझेंगे और मैं इस छल-पूर्ण तरीके से नवीन जीवन में प्रवेश करने की चेष्टा

को तोड डाला और उस भेद को सब पर प्रकट कर दिया तो इसका मुझे कोई दुख नहीं है। मैं उसके इस कार्य की सराहना करता हूँ।

"कल शाम तक मुझे बिलकुल पता नहीं था कि मेरी काल्पनिक हत्या से यहाँ इतनी सनसनी फैली हुई है और रणवीरसिंह उसके अपराधी समझे जाकर गिरफ्तार हैं और अभियुक्त क़रार दिये गये हैं। अचानक कल शाम को मैंने कल दिन की मुक़दमे की कार्रवाई की खबर एक समाचारपत्र में पढ़ी। पढ़ते ही मुझे बडी चिन्ता हुई और मैं वहाँ से जितनी जल्दी यहाँ आ सकता था आ गया। आज सवेरे मैं यहाँ सचाई प्रमाणित करने के लिए किसी प्रकार पहुँच सका हूँ।

"डाक्टर रघुवीरसिंह के इस विचित्र बयान ने मुक़दमे को एक-दम खत्म कर दिया। पुलिस से पता लगाने पर मालूम हुआ कि मधुवीरसिंह नाम का एक आदमी जिसकी हुलिया डाक्टर से बिलकुल मिलती थी इलाहाबाद के बडे अस्पताल में दो दिन था। उसका हृदय बडा कमज़ोर था और इस प्रकार उसकी मृत्यु हो जाना संभव था।

"डाक्टर फिर उसी जगह आ गये जहाँ से वे इस विचित्र ढग से भागे थे। उनमें और रणवीर में फिर मेल-मिलाप हो गया। वे इस बात के लिए बडे लज्जित थे कि उन्होने डाक्टर की कुलीनता पर निराधार सदेह करके उनकी सगाई को तोड दिया था। दूसरे मेल-मिलाप का पता आपको उस दिन के प्रयाग-समाचार के कालमो से इस प्रकार मिलता है—

"श्रीमान् ठाकुर रणधीरसिंह की एक-मात्र पुत्री सुश्री विमलादेवी का शुभ विवाह श्री डाक्टर रघुवीरसिंह के साथ २८ जुलाई १८९८ को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

वहाँ मैं उसी रात को पहुँच गया और वहाँ से बनारस चला गया। अपने रुपयों का थैला और एक चित्र यही इतना मैंने अपने सामान में से ले लिया था और बाकी सारी चीज़ें अपने भाई को दे दी थीं। जल्दी में वह पट्टी जिसको अपनी चोटीली आँख को छिपाने के लिए उसने आँख पर लगा रक्खी थी मैं लेने को भूल गया था।

"मैं सत्य कहता हूँ कि यह विचार मेरे मस्तिष्क में एक क्षण के लिए भी नहीं आया कि लोग मुझे मरा हुआ समझेंगे और मैं इस छल-पूर्ण तरीके से नवीन जीवन में प्रवेश करने की चेष्टा के कारण किसी को अत्यधिक दुःखों का सामना करना पड़ेगा। इसके विरुद्ध मेरी धारणा थी कि मेरे और कहीं चले जाने से किसी

उसको अच्छी तरह देखने और उसमें बैठने से। वह कमरा एकदम शब्दहीन था, वह शब्दायमान हो ही नहीं सकता था। उसकी फर्श पर बड़े मोटे-मोटे गद्दे और कालीन बिछे हुए थे। वे इतने मोटे थे कि पैर रखने के शब्द को कौन कहे, यदि कोई वहाँ कुश्ती भी लड़े तो भी कोई शब्द नहीं हो सकता था। उसका रग भी बडा विचित्र कुछ फीका-सा था। सजावट में कुछ कमी रह गई थी और यह कमी कुछ खटकती भी थी। लोगो का यह कहना था कि ज्ञानचन्द्र ने अपनी पत्नी के इस कमरे को सजाने में हजारो रुपये व्यय कर डाले और जब उन्हे इस बात का भय होने लगा कि कही हमारी सारी पूंजी इसी में न समाप्त हो जाय तो कुछ हिचके और इसी कारण सजावट में सामञ्जस्य नहीं आने पाया। इस कमरे का, सड़क के निकटवाला भाग तो विलासिता के सामानो से सजा हुआ था किन्तु पीछे का भाग एकदम उजाड़ था। वह तो ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी तपस्वी का आश्रम हो। यही कारण था कि शीला इस स्थान पर केवल थोडी ही देर—कभी दो और कभी चार घंटे के लिए आती थी। शेष समय वह अपने उसी कमरे में व्यतीत करती थी और जब वह उस कमरे में रहती तो उसका अच्छी तरह उपयोग करती। उस समय उसमें बडा परिवर्तन हो जाता और वह बड़ी भयानक प्रतीत होती।

भयानक! हाँ, भयानक! इसके लिए उसे कदापि सन्देह नहीं हो सकता जिसने उसको सोफा ऊपर पडा हुआ देखा था। वह अपनी दाहिनी कुहनी के बल झुकी थी और उसकी कोमल किन्तु दृढ़ ठुड्डी हथेली पर थी। उसकी बड़ी-बड़ी किन्तु मलिनज्योति, प्यारी प्यारी किन्तु निर्मम आँखें सामने घूर रही थीं और उनसे भयानकता

अभिनय

आनन्द की बैठक बड़ी विचित्र है। इसके एक तरफ तरह की विलासिता के सामान, बढ़िया सोफा, नीली स्प्रिंगदार कुर्सियाँ, विभिन्न प्रकार की कामोद्दीपक मूर्तियाँ तथा रंग-बिरंगे पर्दे लगे हुए हैं। तात्पर्य यह कि उसको सजाने में किसी प्रकार की कमी नहीं की गई है। इस कमरे का यह भाग मालकिन की सुन्दरता के उपयुक्त ही सजाया गया है। आनन्द एक धनवान् और प्रतिष्ठित नवयुवक थे। इन्होंने अपनी रूपवती पत्नी शीला की इच्छाओं की पूर्ति के लिए रुपये-पैसे पानी की तरह बहाते थे। आनन्द को तो ऐसा करना ठीक ही था क्योंकि उनकी पत्नी ने इनके लिए बड़ा त्याग किया था। यह कारण ही प्रमु

अपनी पत्नी की ओर उत्सुकता से देख रहा था। उसकी मुखाकृति सुन्दर और आँखें बडी-बडी थीं। उसकी पत्नी अभी तक अपनी कुहनियो के बल झुकी हुई थी किन्तु उसकी आँखें उस युवक की आंखो पर गडी थीं। उन लोगो की मौनवार्ता में भयानकता छिपी हुई थी। प्रत्येक एक दूसरे को प्रश्नवाचक दृष्टि से देख रहा था और प्रत्येक एक दूसरे से कह रहा था कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर साघातिक है। सभव है युवक पूछ रहा हो, "तुमने क्या कर डाला ?" अन्त में वह आगे बढ़ा और अपनी पत्नी के बगल में बैठकर उसके कोमल कान को अपनी उँगलियो से पकडकर उसके मुख को अपनी ओर फेर दिया।

"शीला! मुझे विष क्यो दे रही हो ?"

वह अपने ओठो पर विरोध की भावना और मुख पर भय की झलक लिये हुए उसके स्पर्श से पीछे उछल गई। वह बोलने में असमर्थ थी किन्तु उसके शरीर की ऐंठन और हाथो का फेंकना उसके आश्चर्य और क्रोध को प्रकट कर रहे थे। उसने उठने की चेष्टा की किन्तु उसकी कलाई उस युवक के हाथ में कसी हुई थी। उसने फिर अधिक जोर देकर पूछा—

"शीला! मुझे विष क्यो दे रही हो ?"

"तुम पागल हो गये हो, ज्ञान! पागल!", उसने कांपते हुए कहा।

उसके उत्तर ने शीला के रक्त को ठंडा कर दिया। उसका चेहरा फीका पड़ गया और उसके पीले ओठ खुले ही रह गये। वह एकटक उसकी ओर निहारती ही रह गई। किन्तु ज्ञानचन्द्र ने

दमक रही थी। उसका चेहरा बड़ा मोहक था किन्तु फिर भी प्रकृति ने उसमें कुछ ऐसा सूक्ष्म चिह्न बना दिया था जो उसकी आकृति में छिपी हुई क्रूरता को प्रकट कर देता था। लोगों ने देखा था कि उसको देखकर कुत्ते प्रायः चीख पड़ते थे और बच्चे उसके प्यार से भयभीत हो चिल्लाने और भागने लगते थे। कुछ स्वाभाविक बातें ऐसी भी हैं जो तर्क के एकदम परे हैं।

उस समय किसी वस्तु ने उसको बहुत ही प्रभावित कर लिया था। उसके हाथ में एक पत्र था। इसको उसने कई बार पढ़ा। पढ़ते समय वह अपनी कोमल और सुन्दर भौंहों को सिकोड़ती और अपने मृदु ओठों को ऐंठती जाती थी। सहसा वह चौंक पड़ी और किसी भय की भावना ने उसकी उस मुखमुद्रा को नष्ट कर दिया। वह अपनी भुजाओं को कस उठी और दरवाजे की ओर उत्सुकता से देखने लगी। वह शंकित मुद्रा से किसी वस्तु को ध्यान से सुन रही थी। क्षण भर के लिए उसके उस विकारमय मुख-मुद्रा पर मुस्कराहट दौड़ गई। फिर शीघ्रता से उसने उस पत्र को अपने कपड़ों में छिपा लिया। इसी बीच में लम्बा चौड़ा [illegible] एक व्यक्ति कमरे में घुस आया। वह उसका पति, [illegible]

"मनोहर !" उसने काँपते हुए स्वर में कहा। "हाँ, मनोहर ही था !"

इस बीच में उसने फिर साहस एकत्र कर लिया था। और इससे अधिक गोपनीय वस्तु भी अन्य कोई नहीं हो सकती थी। उसकी आकृति कठोर हो गई और आँखें क्रोध से एकदम लाल।

"हाँ", शीला ने कहा। "मनोहर ही है।"

"हे ईश्वर ! वही सीधा-सादा मनोहर !"

वह उठा और कमरे में तेजी से घूमने लगा। मनोहर को वह सबसे अधिक चरित्रवान् व्यक्ति समझता था। उसका सारा जीवन आत्म-त्याग तथा साहस से परिपूर्ण था। एक आदर्श पुरुष के सारे गुण उसमें विद्यमान थे। इस पर भी वह इस मनमोहनी अभिनेत्री का दास बनने से न बच सका। और इतना पतित हो गया कि अपने मित्र को धोखा दिया—मन ही से सही, यदि कर्म से नहीं। यह बात विश्वास के योग्य नहीं थी। इसका प्रमाण था उसका पत्र जिसके एक एक शब्द से कामुकता टपक रही थी और जिसमें शीला को भाग चलने और उसकी संगिनी बनने का अनुरोध था। उस पत्र से यह भी स्पष्ट होता था कि मनोहर ने, अपने मार्ग की कठिनाइयों को दूर कर देने के लिए ज्ञान-चन्द्र को मार डालने का विचार तक नहीं किया था। यह अमानुषी उपाय तो शीला के ही मस्तिष्क की उपज थी।

ज्ञानचन्द्र लाखों में एक था—विचारवान्, दार्शनिक और दयालु। किन्तु थोड़ी देर के लिए इस घटना से वह एकदम क्षुब्ध हो गया। उसका सारा ज्ञान और विचार घृणा में विलीन हो गया था। ऐसी मानसिक अवस्था में वह मनोहर, शीला तथा अपनी तीनों की हत्या कर सकता

अशिक्षित, स्वतंत्र तथा अपनी चातुरी और सौंदर्य से सभी को मोह लेनेवाली। वह जानती ही नहीं थी कि बाधा किसे कहते हैं। और अब उसके मार्ग में बाधा आ उपस्थित हुई थी और वह उसी को बहुत नीच ढंग से दूर करने का प्रयत्न कर रही थी, किन्तु इस बाधा को दूर कर देने से उसका जीवन सुखी नहीं हो सकता था, क्योंकि उस व्यक्ति में भी बहुत-सी कमियाँ थीं। वह व्यक्ति न तो इसको शान्त ही रख सकता था और न उसकी हार्दिक इच्छाओ की पूर्ति ही कर सकता था। वह उस चचला के लिए बहुत ही कठोर और संयमी था। दोनो में बहुत बडा अन्तर था और यदि किसी कारण से उनका मेल हो भी जाता तो चिरस्थायी कभी नहीं हो सकता था। इस बात को उसे पहले ही समझ लेना चाहिए था। वह पुरुष था अतएव वह शीला से अधिक विवेकवान् था। इसलिए इस परिस्थिति का सारा उत्तरदायित्व उसी के ऊपर था। ज्ञानचन्द्र का हृदय पसीज गया। वह उसको ऐसी प्रतीत होने लगी जैसे कोई मुसीबत में फँसा हुआ बच्चा। अब तक वह चुपचाप टहल रहा था। अब अपने ओठो को दबाये और मुट्ठियो को दृढ़ता से बाँधे स्थिति पर विचार करता हुआ कमरे में टहलने लगा। वह एकाएक शीला के बग़ल में बैठ गया और उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया। उसके मस्तिष्क में एक विचार उठा, 'यह वीरता है अथवा कायरता?' यही प्रश्न उसके कानो में गूँजने लगा, उसके आँखों के सामने नाचने लगा। उसको ऐसा प्रतीत होने लगा मानो इस प्रश्न का उत्तर अपने आप सिद्ध हो गया है और वह उसको इतने बड़े-बड़े अक्षरों में देख रहा था जिसको सारा संसार पढ़ सकता था।

ऐसा करने में उसको कुछ भी हिचकिचाहट न होती क्योंकि इसको तो वह अपना कर्त्तव्य समझता। किन्तु, ज्यों ज्यों वह कमरे में घूमता गया उसके विचारों में परिवर्तन होने लगा। इस घटनाजनित घृणा के स्थान पर फिर ज्ञान और विवेक अपना आधिपत्य जमाने लगे। अब वह मनोहर ही को क्यों दोषी समझता? उसको तो शीला की जादूभरी सौंदर्य का भी पता था। यह जादू केवल उसके शारीरिक सौन्दर्य ही में नहीं था वरन् उसमें कुछ ऐसी शक्ति थी जो सबको लुभा लेती थी, सबके हृदय में पीड़ा उत्पन्न कर देती थी, और सब उसका प्रेम पाने के लिए तड़पने लगते थे। फिर वह अपनी ही सोचने लगा। उस समय वह स्वतन्त्र थी अतएव उससे विवाह कर सका। यदि वह स्वतन्त्र न होती, विवाहिता होती और उस समय वह उसके प्रेम पाश में फँसा होता तो क्या वह चुप बैठ जाता? क्या वह बिना अपनी इच्छा पूर्ण किए उसका पिंड छोड़ देता? कभी नहीं—अपनी यह समझता गया। फिर वह अपने मित्र से घृणा क्यों करे जो वह उसी परिस्थिति में फँसा हुआ है? वह ज्यों-ज्यों मनोहर के विषय में सोचने लगा उसके हृदय में दया और सहानुभूति का भाव बढ़ने लगा।

अशिक्षित, स्वतत्र तथा अपनी चातुरी और सौंदर्य से सभी को मोह लेनेवाली । वह जानती ही नहीं थी कि बाधा किसे कहते है । और अब उसके मार्ग में बाधा आ उपस्थित हुई थी और वह उसी को बहुत नीच ढग से दूर करने का प्रयत्न कर रही थी, किन्तु इस बाधा को दूर कर देने से उसका जीवन सुखी नहीं हो सकता था, क्योकि उस व्यक्ति में भी बहुत-सी कमियां थीं । वह व्यक्ति न तो इसको शान्त ही रख सकता था और न उसकी हार्दिक इच्छाओ की पूर्ति ही कर सकता था । वह उस चंचला के लिए बहुत ही कठोर और सयमी था । दोनो में बहुत बडा अन्तर था और यदि किसी कारण से उनका मेल हो भी जाता तो चिरस्थायी कभी नहीं हो सकता था । इस बात को उसे पहले ही समझ लेना चाहिए था । वह पुरुष था अतएव वह शीला से अधिक विवेकवान् था । इसलिए इस परिस्थिति का सारा उत्तरदायित्व उसी के ऊपर था । ज्ञानचन्द्र का हृदय पसीज गया । वह उसको ऐसी प्रतीत होने लगी जैसे कोई मुसीबत में फँसा हुआ बच्चा । अब तक वह चुपचाप टहल रहा था । अब अपने ओठो को दबाये और मुट्ठियो को दृढ़ता से बांधे स्थिति पर विचार करता हुआ कमरे में टहलने लगा । वह एकाएक शीला के बग़ल में बैठ गया और उसके हाथ को अपन हाथ में ले लिया । उसके मस्तिष्क में एक विचार उठा, 'यह वीरता है अथवा कायरता ?' यही प्रश्न उसके कानो में गूंजने लगा, उसके आँखो के सामने नाचने लगा । उसको ऐसा प्रतीत होने लगा मानो इस प्रश्न का उत्तर अपने आप सिद्ध हो गया है और वह उसको इतने बड़े-बड़े अक्षरो में देख रहा था जिसको सारा ससार पढ़ सकता था ।

यह उसकी परीक्षा का समय था किन्तु वह विजयी हुआ।

"तुमको हम दोनों में से किसी एक को चुनना पड़ेगा, प्यारी," उसने कहा। "यदि तुम यह अच्छी तरह जान सकी हो कि मनोहर तुम्हारा पति बनकर तुम्हें सुखी रख सकेगा, तो मैं इसमें बाधा नहीं डालना चाहता।"

शीला ने कांपते हुए कहा, "तलाक!"

उसने अपने हाथ से विष से भरे हुए बोतल को पकड़ लिया। "तुम इसको तलाक ही कह सकती हो," उसने कहा।

"कैप्टन मनोहर ! मैं उनसे नहीं मिलूँगी।"

ज्ञानचन्द्र खड़ा हो गया।

"और मैं ! मैं उनका स्वागत करता हूँ। उनको भीतर लाओ।"

× × ×

थोड़ी देर पश्चात् एक लम्बा युवक कमरे में दाखिल हुआ। वह मुस्कराता हुआ आगे बढ़ा और ज्यो ही दरवाजा बन्द हुआ और लोगो के मुख पर पहले की भाँति गम्भीरता छा गई तो वह भौचक्का हो कभी शीला का और कभी ज्ञान का मुख देखने लगा।

"क्या मामला है," उसने पूछा।

ज्ञानचन्द्र आगे बढ़ा और उसके कन्धो पर अपना हाथ रखकर बोला, "मैं नाराज नहीं हूँ।"

"नाराज !"

"हाँ, मुझे सब मालूम हो गया है। किन्तु यदि मैं तुम्हारी अवस्था में होता तो मैं भी ऐसा ही करता।"

मनोहर पीछे हटा और प्रश्नवाचक दृष्टि से शीला को देखने लगा। शीला ने अपना सिर झुका लिया। मनोहर मुस्कराया।

"इसे आत्म-स्वीकृति का एक जाल समझकर डरना न चाहिए। हम लोगो ने इस विषय पर दिल खोलकर बातें कर ली हैं। देखो मनोहर, तुम सदैव एक खिलाड़ी रहे हो। यह विषभरा बोतल है। यह मत पूछो कि यह यहाँ कैसे आया। यदि हममें से कोई इसको पी लेता है तो सारा मामला तय हो जाता है।" उसका व्यवहार कुछ पागल-सा प्रतीत होता था। "शीला ! कौन पिये इसको ?"

उस कमरे में एक अद्भुत शक्ति काम कर रही थी। वहाँ एक व्यक्ति और था, यह उन तीनों व्यक्तियों से जो अपने जीवननाटक की सङ्कटावस्था में पड़े हुए थे भिन्न था। इस व्यक्ति का तो उन लोगों को कुछ ज्ञान भी नहीं था। वह कब से वहाँ था और उसने क्या क्या सुन लिया था—किसी को नहीं मालूम था। ज़रा दूर पर एक कोने में दीवार के सहारे दुबककर एक सा पत्थर-सा चुपचाप बैठा था। उसके सामने एक चौकोर कागज़ की कोई चीज़ रक्खी थी और उस पर बड़ी चातुरी से एक खाका पर्दा डाल दिया गया था। वह बड़ी उत्सुकता से इस नाटक के प्रत्येक पहलू को ध्यान से देख रहा था और अब वह समय आ गया था जब उसे उस नाटक में बाधा पहुँचाना आवश्यक था। किन्तु उन तीनों को इसका बिल्कुल पता नहीं था। वे लोग बहुत भावुक हो रहे थे और अपनी अपनी भावुकता में इतने तल्लीन थे कि उन्हें इसका ख्याल ही नहीं था कि यहाँ कोई और भी ऐसी शक्ति हो सकती है जो इनके सारे नाटक पर पानी फेर सकती है।

"मनोहर आओ। हम लोगो के भाग्य का निर्णय ताश की बाजी से हो जाय।"

मनोहर मेज के पास पहुँचा। उसने ताश को उठाया। शीला अपने हाथो के बल झुकी हुई कातर दृष्टि से ताक रही थी।

× × ×

उसी समय—ठीक उसी समय किवाड की सिटकिनी खुली।

वह अजनबी बडी गम्भीर मुद्रा में उनके पास आकर खडा हो गया।

उन तीनों को उसकी उपस्थिति का एकाएक भान हुआ। वे सब प्रश्नात्मक दृष्टि से देखने लगे। वह उस समय कुछ उदास, निरुत्साह किन्तु गभीर मालूम पड़ रहा था।

उन सबों ने एक साथ पूछा, "यह कैसा ?"

"व्यर्थ !" उसने कहा "निरा व्यर्थ !" हमको अभिनय कल फिर से करना पडेगा।

प्रसव के दिन

सुभान बहुत ही साधारण व्यक्ति था । उसमें कोई भी ऐसी बात नहीं थी जिससे अन्य साधारण व्यक्तियों में वह लेशमात्र असाधारण कहा जा सके । रंग उसका गेहुआं, विचार शांत और अवस्था लगभग तीस वर्ष की थी । उसका विवाह हो चुका था । व्यवसाय उसका बजाजी का था किन्तु व्यावसायिक प्रतियोगिता के कारण उसकी प्रगति कुछ शिथिल-सी हो गई थी । उसने कुछ बिसातखाने का सामान भी रखना आरम्भ कर दिया था । ग्राहकों को सन्तुष्ट रखने की आशा से वह कुछ [illegible]

बहुत प्यार करता था। अपने पति के कामो में वह यथाश
बटाती थी। वह प्रतिदिन प्रात काल उठती, दूकान खोलत
साफ करती तथा सभी चीजो को यथोचित स्थान पर ठी
सजा देती। दूकान में जगह की कमी तथा कुछ-कुछ वि
विचार से वह बच्चो के सिले-सिलाये कपडे, टोपियां, लँगो
दूकान के सामने रस्सी बांधकर टाँग देती थी। सिलाई में भी
के समय वह कुछ न कुछ सहायता देती ही थी। दूर के
एक लडका भी उसी के यहाँ रहता था और सिलाई सीखता
परिवार पर आनेवाले आपत्ति-विपत्ति तथा सुख-दुख का अनु
अतिरिक्त और कोई नहीं करता था। एक दिन वह भी था
दूकान का बहुत-सा सामान बहुत अधिक लाभ पर बिका थ
अपने पति से कहीं अधिक सुखी हुई थी और जब ग्राहक स
लेकर सुभान को अपने घर पर मूल्य देने के लिए लिव
और मार्ग में कहीं भाग गया तो वह अपने पति से कहीं अधि
हुई थी। पांच वर्षो से निरतर वे लोग मिलकर दूकान को
प्रयत्नशील थे। उनके सामने दूकान के अतिरिक्त और
भी नहीं थी क्योकि उनके कोई सतान नहीं थी। किन्तु
परिवर्तन आने की आशा दिखाई पड रही थी और वह
ही शीघ्र। वह अब दिनो-दिन अशक्त होती जा रही थी।
कोई काम नहीं हो सकता था। रसूलाबाद मे उसकी मा
देख-रेख तथा नाती का स्वागत करने के लिए आगई थी।

ज्यो-ज्यो उसकी स्त्री के प्रसव का समय निकट आने ल
की चिन्ता बढने लगी। कुछ भी हो, यह तो प्राकृतिक प्र

यही उसको संतोष था। दूसरों की पत्नियाँ भी तो प्रसव करती हैं, उनको कोई हानि नहीं पहुँचती तो फिर मैं अपनी ही पत्नी के लिए चिन्ता करूँ? वे स्वयं भाई बहन मिलाकर बारह थे फिर भी मा जीवित थी और स्वस्थ भी थी। विशेष अवस्था में ही किसी की सभावना हो सकती थी। तो भी अपनी पत्नी की दशा वह चिंतित हुए बिना नहीं रहता था।

जुहरा दाई तीन महीने पहले ही से तय कर ली गई थी। कोठापारचा से जहाँ सुभान की दूकान और मकान था, थोड़ी दूर पर रहती थी और बड़ी कुशल दाई समझी जाती थी। दाई के साथ ही साथ वह स्त्री-रोगों की दवा भी करती थी। निम्न वर्ग के लोगों में बड़ी प्रतिष्ठा थी उसकी। और यही कारण था कि वह कुछ ऐंठ में रहती थी। समय निकट आने के साथ ही साथ [illegible] सन्तान के लिए सुभान तरह-तरह के कपड़े भी बनाने लगा। एक दिन जब वह अपनी दूकान के लिए सामान खरीदने की [illegible] बाजार में व्यस्त था, एकाएक उसे भीतर मकान में कुछ हलचल सी प्रतीत हुआ और उसकी सास दौड़ती हुई उसके पास आकर [illegible] कि दाई की आवश्यकता आ पड़ी है, उसे जल्दी ही बुलाना [illegible] [illegible] प्राण [illegible] से व्याकुल हो रही थी।

। चल पडा। जुहरा के यहाँ पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि वह एक
गी को देखने दरियाबाद गई है। वह वहाँ से दौड़ता हुआ दरियाबाद
हुँचा। वहाँ उसे मालूम हुआ कि थोडी देर हुआ वह वहाँ से एक और
गी को देखने अटाला चली गई। संयोग से उस रोगी का पता वहाँ
से मालूम हो गया। तुरन्त वह आगे बढा। मार्ग में दो इक्के भी उसे
मले किन्तु उस पर सवारियाँ थीं। ज्यो-ज्यो समय बीतता था अपनी स्त्री
ी दशा का विचार उसकी व्यग्रता को बढा रहा था। अब वह दौड़ने
गा। थोडी दूर दौडने पर उसे एक इक्का ककरहा-घाट से खाली लौटता
मिला। वह उसी पर कूदकर बैठ गया और अटाला की ओर चला।
जब वहाँ पहुँचा तो उसे पता चला कि वह वहाँ से भी चली जा
चुकी थी। उसकी हिम्मत टूट गई। सिर पर हाथ रखकर वह वहीं
बैठ गया।

सयोग से इक्के को उसने छोडा नहीं था। स्त्री के कष्ट की
याद उसे व्याकुल बना रही थी। कुछ देर [illegible] रहा, फिर उस
और इक्के पर बैठकर कीटगज चल पडा। [illegible] अभी मकान [illegible]
पहुँची थी लेकिन पहुँचने ही वाली थी। [illegible] वहीं बैठकर [illegible]
प्रतीक्षा करने लगा। रह-रहकर वह अपने [illegible] की उँगलियों [illegible]
लगता था। कमरे में एक लैंप जल रहा था और वहाँ की वायु [illegible]
की गन्ध से बसी हुई थी। एक किनारे [illegible] छोटी-सी मेज [illegible]
कुर्सियाँ पडी हुई थीं। मेज पर [illegible] [illegible] बिछा
बजा हुआ था। घर से निकले हुए [illegible] घटे हो [illegible]
औरतें क्या समझ रही होगी! [illegible]
वह चौंककर कुर्सी से उठकर देखने [illegible]। उनके

ते आयँगे," उसने कहा। "किन्तु मेरी समझ में तो डाक्टर बोस से योग्य और अनुभवी डाक्टर हैं।"

"कुछ परवाह नहीं, साहब। योग्य डाक्टर को बुलवाइए," सुभान ने उत्तेजित होकर कहा।

"डाक्टर बोस पन्द्रह रुपये लेंगे। वे सबसे अनुभवी डाक्टर हैं। समझे?"

"अगर वे उसको अच्छा कर देंगे तो मैं अपना सब कुछ उन्हे सौंप सकता हूँ। क्या मैं जाऊँ?"

"अवश्य। पहले मेरे यहां जाओ और हरे कनवासवाला बैग मांग लो। और देखो वहीं से ए० सी० ए० मिक्शचर भी माँग लेना। वह क्लोरोफार्म नही सहन कर सकती। और तब डाक्टर बोस के यहां जाओ और उन्हे तुरन्त लिवा लाओ।"

यह काम उसे बड़ा सुखकर प्रतीत हुआ। उसे अवसर मिला यह सोचने का कि वह अपनी स्त्री के लिए कुछ भी तो कर सका। वह तुरन्त रात की निस्तब्धता को भग करता फीटगंज दौड़ता हुआ गया। रास्ते में केवल कहीं-कहीं पुलिस के सिपाहियो के कारण कुछ क्षण के लिए उसे रुकना पड़ता था। कितनी ही बार जोर-जोर की आवाजें लगाने पर दाई के मकान का दरवाजा खुला और एक अधेड़-सा व्यक्ति आँखें मलता हुआ बाहर निकला। वह फिर भीतर गया और एक बोतल मिक्शचर का और एक कनवास का बैग उसको लाकर दिया। कनवास के बैग में कुछ ऐसी चीजें थीं जो बैग के हिलने पर आपस में लड़ती थीं और खनखन की आवाज करती थीं। सुभान ने बोतल को तो अपने कोट की जेब में डाल दिया और बैग को

चले आयेंगे," उसने कहा। "किन्तु मेरी समझ में तो डाक्टर बोस सबसे योग्य और अनुभवी डाक्टर हैं।"

"कुछ परवाह नहीं, साहब। योग्य डाक्टर को बुलवाइए," सुभान ने उत्तेजित होकर कहा।

"डाक्टर बोस पन्द्रह रुपये लेंगे। वे सबसे अनुभवी डाक्टर हैं। समझे?"

"अगर वे उसको अच्छा कर देंगे तो मैं अपना सब कुछ उन्हे सौंप सकता हूँ। क्या मैं जाऊँ?"

"अवश्य। पहले मेरे यहाँ जाओ और हरे कनवासवाला बैग माँग लो। और देखो वही से ए० सी० ए० मिक्शचर भी माँग लेना। वह क्लोरोफार्म नहीं सहन कर सकती। और तब डाक्टर बोस के यहाँ जाओ और उन्हे तुरन्त लिवा लाओ।"

यह काम उसे बड़ा सुखकर प्रतीत हुआ। उसे अवसर मिला यह सोचने का कि वह अपनी स्त्री के लिए कुछ भी तो कर सका। वह तुरन्त रात की निस्तब्धता को भंग करता कीटगंज दौड़ता हुआ गया। रास्ते में केवल कहीं-कहीं पुलिस के सिपाहियो के कारण कुछ क्षण के लिए उसे रुकना पड़ता था। कितनी ही बार जोर-जोर की आवाजें लगाने पर दाई के मकान का दरवाजा खुला और एक अधेड़-सा व्यक्ति आँखें मलता हुआ बाहर निकला। वह फिर भीतर गया और एक बोतल मिक्शचर का और एक कनवास का बैग उसको लाकर दिया। कनवास के बैग में कुछ ऐसी चीजें थीं जो बैग के हिलने पर आपस में लड़ती थीं और खनखन की आवाज करती थीं। सुभान ने बोतल को तो अपने कोट की जेब में डाल दिया और बैग को

ौर आस्थवेट रोड के चौराहे पर पहुँच गई। मोटर रुकते ही वह झट
उतरा और डाक्टर को भीतर कर दरवाजे पर उन लोगो की बातें
…को रुक गया। "रात को कष्ट दिया, क्षमा कीजिएगा। मामला
ीरियस हो गया है। आदमी बडे भलेमानस हैं।" फिर वे दोनो सूतिका-
ार में चले गये और दरवाजे को बन्द कर लिया।

सुभान दरवाजे के निकट ही कुर्सी लाकर बैठ गया और उन लोगो
ी बातें सुनने की चेष्टा करने लगा। वह जानता था कि प्रसव का समय
अब निकट है और हालत बडी खतरनाक हो रही है। वह दोनो डाक्टरो
को कमरे में टहलते हुए सुन रहा था। कुछ देर तक सन्नाटा रहा और
फिर एक विचित्र अर्थहीन काँपता हुआ गूँ-गूँ शब्द सुनाई पडने लगा। ऐसा
शब्द जीवन में पहले उसे कभी सुनाई नहीं पडा था। उसी समय एक मीठी
सुगन्ध, जिसका अनुभव सुभान के अतिरिक्त और शायद कोई नही कर
सकता था, कमरे में फैल गई। वह शब्द धीरे-धीरे क्षीण होता गया और
अन्त में एकदम शान्त हो गया। सुभान ने अब जाकर सुख की एक लम्बी
साँस ली। उसे विश्वास हो गया, अब चाहे जो हो, दवा ने काम कर
दिया है और अब उसकी स्त्री को कुछ कष्ट न होगा।

किन्तु तुरन्त ही उसको वह निस्तब्धता उस गूँ-गूँआहट से भी
अधिक कष्टदायक प्रतीत होने लगी। पहले उसे कुछ पता भी चल
रहा था कि अन्दर क्या हो रहा है और अब तो कुछ भी नही मालूम
पडता था। तरह-तरह की आशंका से उसका मस्तिष्क चकरा गया। वह
उठा, बाहर आया और फिर अन्दर जाकर दरवाजे पर बैठकर
कान लगाया। उसने कुछ औजारो की खनखनाहट सुनी और सुनी
डाक्टरो की धीमी फुसफुसाहट। फिर उसने सुना कि उसकी सास

यह सुनते ही उसने अनुभव किया कि उस चरम वेदना में जिसमें रात भर डूबता-उतराता रहा है इतना सुख छिपा हुआ था जिसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था। उसका हृदय प्रसन्नता से फूल गा और बार-बार डाक्टर के पैरो पर गिर पड़ने की उसकी इच्छा ने लगी। अब वह कुछ लज्जा भी अनुभव कर रहा था।

"मैं उसके पास जा सकता हूँ ?"

"थोड़ी देर बाद।"

"मुझे विश्वास है, डाक्टर साहब, मैं बहुत . मैं ." वह विह्वल हा था। "डाक्टर साहब लीजिए यह आपकी फीस है। ये पन्द्रह कहीं पन्द्रह सौ होते," वह प्रसन्नता से गद्गद हो रहा था।

"मैं भी यही चाहता।" डाक्टर बोस ने कहा और फिर कह-मारकर सब हँसने लगे।

वे लोग मकान से नीचे उतरे। सुभान किवाड़ बन्दकर उनकी सुनने लगा।

'केस बहुत बिगड़ता जा रहा था।"

"आपकी सहायता के लिए धन्यवाद!" डाक्टर भी प्रसन्न दीख था। मुस्कराते हुए उसने कहा।

"कोई सवारी नहीं है? चलिए, मैं आपको ड्राप करता जाऊँगा।"

"धन्यवाद", दाई ने कहा।

और फिर डाक्टर के साथ वह भी चली गई। उन लोगों के चले ने के बाद उसने किवाड़ खोला। उसकी प्रसन्नता ज्यों की त्यों थी। ने अनुभव किया कि अब वह एक नया जीवन आरम्भ कर रहा है। अब अपने आपको अधिक शक्तिशाली और गम्भीर पा रहा था।

यह सुनते ही उसने अनुभव किया कि उस चरम वेदना में जिसमें रात भर डूबता-उतराता रहा है इतना सुख छिपा हुआ था जिसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था। उसका हृदय प्रसन्नता से फूल और बार-बार डाक्टर के पैरो पर गिर पड़ने की उसकी इच्छा लगी। अब वह कुछ लज्जा भी अनुभव कर रहा था।

"मैं उसके पास जा सकता हूँ ?"

"थोड़ी देर बाद।"

"मुझे विश्वास है, डाक्टर साहब, मैं बहुत मैं ." वह विह्वल रहा था। "डाक्टर साहब लीजिए यह आपकी फीस है। ये पन्द्रह ये कहीं पन्द्रह सौ होते," वह प्रसन्नता से गद्‌गद हो रहा था।

"मैं भी यही चाहता।" डाक्टर बोम ने कहा और फिर कह-ा मारकर सब हँसने लगे।

वे लोग मकान से नीचे उतरे। सुभान किवाड़ बन्दकर उनकी तें सुनने लगा।

'केस बहुत बिगड़ता जा रहा था।"

"आपकी सहायता के लिए धन्यवाद!" डाक्टर भी प्रसन्न दीख रहा था। मुस्कराते हुए उसने कहा।

"कोई सवारी नहीं है ? चलिए, मैं आपको ड्राप करता जाऊँगा।"

"धन्यवाद", दाई ने कहा।

और फिर डाक्टर के साथ वह भी चली गई। उन लोगों के चले जाने के बाद उसने किवाड़ खोला। उसकी प्रसन्नता ज्यों की त्यों थी। उसने अनुभव किया कि अब वह एक नया जीवन आरम्भ कर रहा है। वह अब अपने आपको अधिक शक्तिशाली और गम्भीर पा रहा था।